सरल ज्योतिष

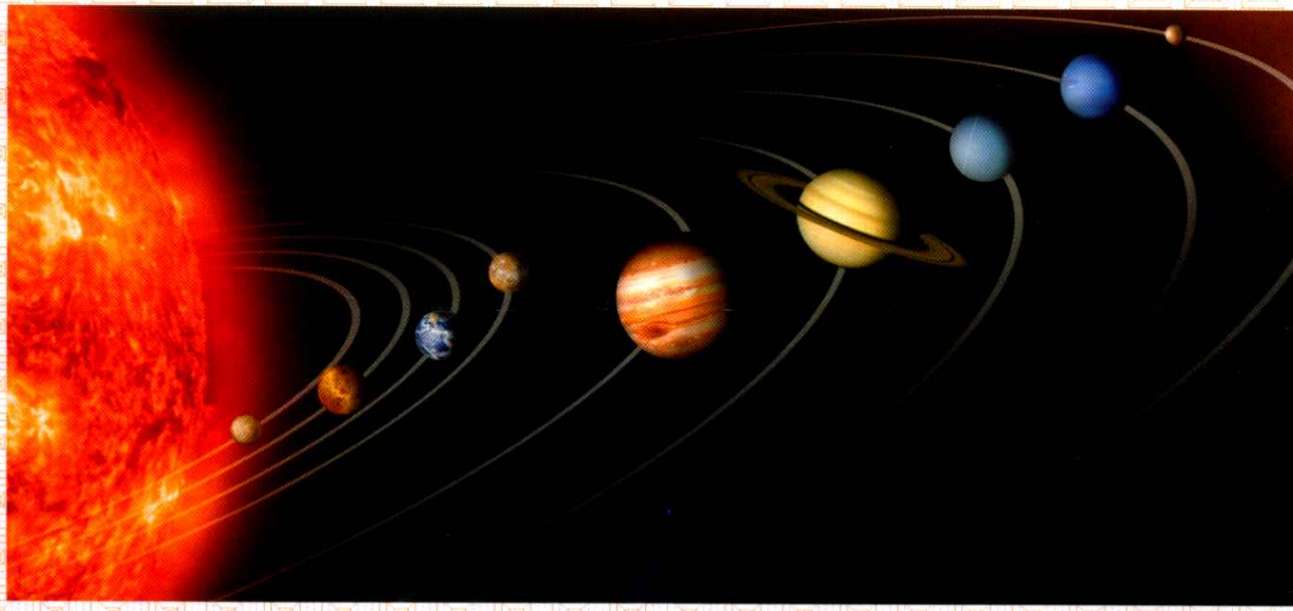

संपादक एवं लेखक
अरुण कुमार बंसल

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.)

सरल ज्योतिष

संपादक

अरुण बंसल

प्रकाशक :

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.)

मुख्य कार्यालय : X-35, ओखला फेस–2, नयी दिल्ली–110020

Phone (फोन): (011) 40541000 (50 Line) Fax (फैक्स): (011) 40541001

शाखा कार्यालय : D-68, **हौजखास, नयी दिल्ली–110016**

Phone (फोन): (011) 40541020 Fax (फैक्स): (011) 40541021

Email (इमेल)– mail@aifas.com Web (वेब)– www.aifas.com

सर्वाधिकार ©

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ

दशम संशोधित संस्करण 2012

संघ के पाठ्यक्रम के लिए विशेष रुप से प्रकाशित

संशोधनकर्ता : विनय गर्ग

प्रकाशक :

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.)

मुख्य कार्यालय : X-35, ओखला फेस–2, नयी दिल्ली–110020

Phone (फोन): (011) 40541000 (50 Line) Fax (फैक्स): (011) 40541001

शाखा कार्यालय : D-68, **हौजखास, नयी दिल्ली–110016**

Phone (फोन): (011) 40541020 Fax (फैक्स): (011) 40541021

Email (इमेल)– mail@aifas.com Web (वेब)– www.aifas.com

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

1. कुण्डली एवं भाव परिचय 1
2. भावों के कारकत्व 3
3. ग्रह परिचय 6
4. राशि परिचय 21
5. ज्योतिष संम्बन्धित खगोल शास्त्र 32
6. गणित 39
7. लग्न साधन एवं द्वादश भाव स्पष्ट 42
8. ग्रह स्पष्ट 62
9. लग्न एवं चलित कुण्डली बनाना 71
10. दशा साधन विधि 73
11. षोडश वर्ग सिद्धांत 77
12. पंचांग 104
13. संक्रान्ति, अमावस्या एवं पूर्णिमा विचार 113
14. चन्द्रमा की कलाएँ 118
15. 12 भावों में ग्रहों का फल 121
16. योग परिचय 137

भूमिका

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) की 9 मई, 2001 को स्थापना हुई। संघ का मुख्य उद्देश्य देश भर में और देश के बाहर अन्य देशों में एक प्रकार का उच्चस्तरीय, विश्वविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम चलाना है। समय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए तथा देश–विदेश में कम्प्यूटर का प्रभाव देखते हुए विद्वानों ने पाठ्यक्रम को तैयार किया। पाठ्यक्रम छात्रों की रुचि, उनकी योग्यता तथा अवस्था को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। ज्योतिष के विद्वानों ने इन सभी विन्दुओं पर विचार किया और जो सर्वसम्मति से उपयुक्त पाया गया उसे पाठ्यक्रम में रखा गया है।

ज्योतिष रत्न के पाठ्यक्रम के आधार पर पाठकों–छात्रों की रुचि, योग्यता तथा अवस्था और देश–काल–पात्र को ध्यान में रखते हुए ज्योतिष पर 'सरल ज्योतिष' की रचना की गयी। इस पुस्तक में ज्योतिष से सम्बन्धित खगोल ज्ञान, गणित, ज्योतिष फलित, गोचर, पंचांग के अध्ययन तथा कुण्डली मिलान के प्रारम्भिक ज्ञान के विषयों को लिखा गया है ताकि इनका अध्ययन कर पाठक और छात्र जल्दी से जल्दी ज्योतिष फलित सीख सकें।

कम्प्यूटर की सुविधा मिलने के कारण पाठकों–छात्रों को गणित, खगोल आदि के गहन अध्ययन की आवश्यकता नहीं है। उन्हें केवल प्रारम्भिक ज्ञान की ही आवश्यकता है। इसलिए पाठ्यक्रम में गणित तथा खगोल का केवल प्रारम्भिक विषय दिया गया है। प्रत्येक पाठक या छात्र ज्योतिष फलित करना चाहता है। इस रुचि को ध्यान में रखते हुए इसका कुछ विस्तार से वर्णन किया गया है। अधिक ज्ञान के लिए छात्रों को आगे की कक्षाओं में भी अध्ययन करना चाहिये जैसे–ज्योतिष भूषण, ज्योतिष प्रभाकर तथा ज्योतिष शास्त्राचार्य। इन पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने के बाद छात्र ज्योतिष विषय में पारंगत हो जाते हैं। फिर केवल अभ्यास की ही आवश्यकता रह जाती है।

दिनांक 1 जनवरी 2003 स्थान –दिल्ली

फ्यूचर पॉइंट
एस्ट्रो सॉल्यूशन्स

1985 से भारत का सबसे अग्रणी ज्योतिषीय संस्थान

सबसे विश्वसनीय ज्योतिषीय उत्पाद व सेवाएं

ज्योतिषीय सामग्री

माला, रुद्राक्ष, रत्न, फेंगशुई, स्फटिक, पारद, पिरामिड, यंत्र, शंख इत्यादि।

ज्योतिषीय प्रकाशन

ज्योतिष, अंकशास्त्र, हस्तरेखा, वास्तु पुस्तकें, **फ्यूचर समाचार** मैग्जीन व जर्नल।

ज्योतिषीय सॉफ्टवेयर

सर्वश्रेष्ठ ज्योतिषीय सॉफ्टवेयर जैसे **लियो पाम** व **लियो स्टार** ।

ज्योतिषीय शिक्षा

ज्योतिष, अंकशास्त्र, हस्तरेखा व वास्तु मे प्रशिक्षण एवं शिक्षा।

जन्मपत्री व परामर्श

सभी प्रकार की जन्मपत्री व ज्योतिषीय, वास्तु, हस्तरेखा परामर्श ।

प्रशिक्षण डी.वी.डी

घर बैठे हमारी प्रशिक्षण डी.वी.डी ज्योतिषीय विद्वान बनें।

फ्यूचर पॉइंट
www.futurepointindia.com

मुख्य कार्यालय : X-35, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, दिल्ली-110020
फोन : 91-11-40541000, 1010 फैक्स : 40541001

शाखा कार्यालय : डी-68, हौज खास नयी दिल्ली-110016
फोन : 40541020, 1022 फैक्स : 40541021

View & shop our products and services @ www.**futurepointindia**.com

Did you check out the world`s leading Astrological Website...?

Discover	Learn	Shop
Horoscope	Astrology	Yantras
Predictions	Numerology	Stones
Tarot Readings	Palmistry	Rudrakshas
Share Market	Lal Kitab	Crystals
Biorythms	Tarot	Pyramids
Consultation	Vastu	Rosary
Mantras	Feng Shui	Kavach
Remedies	Zodiac	Konch

Discover a world of Astrology & Spiritual Solutions. Simply log on to

www.futurepointindia.com

पाठ 1

कुण्डली एवं भाव परिचय

जन्मपत्री किसी निश्चित स्थान पर किसी निश्चित समय के लिए आकाश का नक्शा होती है। उस समय जो भचक्र की राशि पूर्व क्षितिज पर उदित होती है, उसका संकेत करती है जिसे लग्न की संज्ञा दी जाती है। इसे प्रथम भाव के नाम से भी जाना जाता है।

जन्मपत्री के रूपः

भारत के विभिन्न भागों में जन्मपत्री को विभिन्न रूपों में चित्रित किया जाता है जिनमें उत्तर भारतीय, दक्षिण भारतीय और बंगला विधियाँ अधिक प्रचलित हैं।

चित्र नं 1 भारत के उत्तरी भाग में इसका प्रयोग किया जाता है।

सबसे ऊपर मध्य भाग को लग्न अथवा प्रथम भाव की उदीयमान राशि माना जाता है और जन्म समय उदित होने वाली राशि की संख्या लिखी जाती है।

उदाहरण– कुण्डली में सिंह राशि के लिए 5 संख्याओं को लग्न में लिखा जाता है। तदुपरान्त भावों की गिनती घड़ी की विपरीत चाल से क्रमशः की जाती है। राशियों को इसी क्रम में अगले भावों में क्रमशः लिखा जाता है जैसा कि चित्र नं. 1 में दिखाया गया है।

चित्र नं. 1

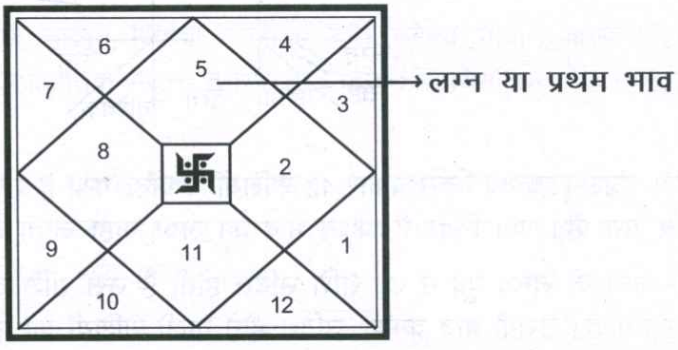

भारत के दक्षिणी भाग में प्रचलित इस जन्मपत्री का रूप चित्र नं. 2 के अनुसार होता है। इस रूप में राशियों की स्थिति भावों में स्थिर रखी जाती है और जैसा कि चित्र में दिखाया गया है, ऊपर के बायें हाथ के वर्ग में मीन राशि लिखी जाती है और घड़ी की चाल के क्रम में मेष, वृष, मिथुन आदि राशियाँ लिख दी जाती हैं और लग्न स्पष्ट राशि को उस राशि वर्ग में शब्द में लिखा जाता है और उस पर लग्न

का निशान ◇ भी लगा दिया जाता है। उसके पश्चात् जन्म समय ग्रह स्पष्ट सारणी से ग्रहों की जो स्थिति होती है उसके अनुसार सम्बन्धित राशि में बैठा दिया जाता है।

चित्र नं. 2

चित्र नं. 3 में जन्मपत्री के रूप का प्रयोग सामान्यतया बंगाल और उसके पड़ोसी क्षेत्र में किया जाता है। इस रूप में ऊपरी कोष्ठ में मेष राशि लिखी जाती है और तदुपरान्त घड़ी की विपरीत चाल के अनुसार क्रमशः कोष्ठों में वृष, मिथुन आदि राशियाँ लिख दी जाती हैं। जन्मसमय जो लग्न स्पष्ट राशि होती है, उसे उस राशि वर्ग में शब्दों में लिखा जाता है और उस पर लग्न का निशान // भी लगा दिया जाता है। इसके पश्चात् जन्म समय ग्रह स्पष्ट सारणी से ग्रहों की जो स्थिति होती है उसके अनुसार सम्बन्धित राशि में बैठा दिया जाता है।

चित्र नं. 3

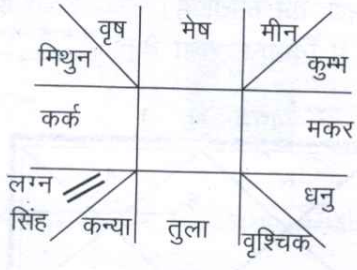

ब्रह्माण्ड को, कालपुरुष को जिस प्रकार 12 राशियों में बांटा गया है उसी प्रकार काल पुरुष को 12 भावों में भी बांटा गया है। भाव स्थिर हैं, प्रथम भाव को लग्न कहा जाता है।

जातक के जन्म के समय पूर्व में जो राशि उदित होती है उस राशि की संख्या को लग्न या प्रथम भाव में लिखा जाता है। उसके बाद क्रमशः उदित होने वाली राशियों को द्वितीय, तृतीय भाव में लिखा जाता है। भाव पूर्व से उत्तर पश्चिम दिशा में चलते हैं, इसको विपरीत घड़ी गति भी कह सकते हैं।

वह ग्रह जो किसी भाव के कार्य को करता है उसे उस भाव का कारक ग्रह कहते हैं। भाव के कार्य को भाव का कारकत्व कहते हैं।

❑

पाठ–2

भावों के कारकत्व

हम जानते हैं कि भाव बारह होते हैं। उन भावों को विभिन्न नामों से जाना जाता है। इस अध्याय में हम उनका परिचय देंगे।

पृथ्वी अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूम रही है। अगर हम क्षितिज की तरफ देखेंगे तो पाएंगे कि राशिचक्र की राशियां एक–2 करके उदय होती हैं। राशिचक्र की प्रत्येक राशि पूर्वी क्षितिज पर 24 घंटे के पश्चात् पुनः उदित होगी। किसी घटना या शुभ कार्य के होने पर पूर्व दिशा में उदित होने वाली राशि को लग्न कहते हैं। लग्न को जन्मकुंडली का प्रथम भाव भी कहा जाता है।

द्वितीय भाव का अर्थ है लग्न से गिने जाने पर दूसरा भाव, अन्य भावों की भी इसी प्रकार से लग्न अर्थात् भाव से गिने जाने पर संज्ञा दी जाएगी।

जन्मकुंडली के प्रत्येक भाव से जीवन के निश्चित पहलुओं के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है जिसका वर्णन इस प्रकार है–

प्रथम भाव :
देह, काया, शरीर रचना, व्यक्तित्व, चेहरा, स्वास्थ्य, चरित्र, स्वभाव, बुद्धि, आयुष्य, सौभाग्य, सम्मान, प्रतिष्ठा, समृद्धि।

द्वितीय भाव :
संपत्ति, परिवार, वाणी, दाहिनी आंख, नाखून, जिह्वा, नासिका, दांत, उद्देश्य, भोजन, कल्पना, अवलोकन, जवाहरात, गहनें, कीमती पत्थर, अप्राकृतिक मैथुन, ठगना और जीवन साथियों के बीच हिंसा।

तृतीय भाव :
छोटे भाई और बहन, सहोदर भाई बहन, संबंधी, रिश्तेदार, पड़ोसी, साहस, निश्चियता, बहादुरी, सीना, दायां कान, हाथ, लघु यात्राएं, नाड़ी तंत्र, संचारण, संप्रेषण, लेखन, पुस्तक संपादन, समाचार पत्रों की सूचना, विवरण, संवाद इत्यादि लिखना, शिक्षा, बुद्धि इत्यादि।

चतुर्थ भाव :
माता, संबंधी, वाहन, घरेलु वातावरण, खजाना, भूमि, आवास, शिक्षा, जमीन जायदाद, आनुवंशिक प्रकृत्ति, जीवन का उतरार्ध भाग, छिपा खजाना, गुप्त प्रेम संबंधी, सीना, विवाहित जीवन में ससुराल पक्ष और परिवार का हस्तक्षेप, आभूषण, कपड़े।

पंचम भाव :

संतान, बुद्धि, प्रसिद्धि, श्रेणी, उदर, प्रेम संबंध, सुख, मनोरंजन, सट्टा, पूर्व जन्म, आत्मा, जीवन स्तर, पद, प्रतिष्ठा, कलात्मकता, हृदय, पीठ, खेलों में निपुणता, प्रतियोगिता में सफलता।

षष्ठ भाव :

रोग, ऋण, विवाद, अभाव, चोट, मामा, मामी, शत्रु, सेवा, भोजन, कपड़े, चोरी, बदनामी, पालतु पशु, अधिनस्थ कर्मचारी, किरायेदार, कमर।

सप्तम भाव :

पति/पत्नी का व्यक्तित्व, जीवन साथी के साथ रिश्ता, इच्छाएं, काम शक्ति, साझेदारी, प्रत्यक्ष शत्रु, मुआवजा, यात्रा, कानून, जीवन के लिए खतरा, विदेशों में प्रभाव और प्रतिष्ठा, अपने और जनता के साथ रिश्ते, यौन रोग, मूत्र रोग।

अष्टम भाव :

आयु, मृत्यु का प्रकार यानी मृत्यु कैसे होगी, जननांग, बाधाएं, दुर्घटना, मुफ्त की संपत्ति, विरासत, बपौती, पैतृक संपत्ति, वसीयत, पेंशन, परिदान, चोरी, डकैती, चिंता, रूकावट, युद्ध, शत्रु, विरासत में मिला धन, मानसिक वेदना, विवाहेतर जीवन।

नवम भाव :

सौभाग्य, धर्म, चरित्र, दादा–दादी, लंबी यात्राएं, पोता, बुजुर्गों व देवताओं के प्रति श्रद्धा व भक्ति, आध्यात्मिक उन्नति, स्वप्न, उच्च शिक्षा, पत्नी का छोटा भाई, भाई की पत्नी, तीर्थ यात्रा, दर्शन, आत्माओं से संपर्क।

दशम भाव :

व्यवसाय, कीर्ति, शक्ति, अधिकार, नेतृत्व, सत्ता, सम्मान, सफलता, रूतवा, घुटने, चरित्र, कर्म, जीवन में उद्देश्य, पिता, मालिक, नियोजक, अधिकारी, अधिकारियों से संबंध, व्यापार में सफलता, नौकरी में तरक्की, सरकार से सम्मान।

एकादश भाव :

लाभ, समृद्धि, कामनाओं की पूर्ति, मित्र, बड़ा भाई, टखने, बायां कान, परामर्शदाता, प्रिय, रोग मूक्ति, प्रत्याशा, पुत्रवधु, इच्छाएं, कार्यों में सफलता।

द्वादश भाव :

हानि, दण्ड, कारावास, व्यय, दान, विवाह, जल आश्रयों से संबंधित कार्य, वैदिक यज्ञ, अदा किया गया जुर्माना, विवाहेतर काम क्रीड़ा, काम क्रीड़ा और यौन संबंधों से व्युत्पन्न रोग, काम क्रीड़ा में कमजोरी, शयन सुविधा, ऐय्याशी, भोग विलास, पत्नी की हानि, शादी में नुकसान, नौकरी छूटना, अपने लोगों से अलगाव, संबंध विच्छेद, लंबी यात्राएं, विदेश में व्यवस्थापन।

भावों की संज्ञा

जन्म कुण्डली में लग्न केन्द्र बिन्दु होता है। महर्षियों ने जीवन को धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष को प्राप्त करने का साधन माना है। इसलिए कुण्डली को भी धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष के तीन परिराशियों में बांटा है।

संज्ञा	भाव
धर्म	1 5 9
अर्थ	2 6 10
काम	3 7 11
मोक्ष	4 8 12
केन्द्र भाव	1 4 7 10
त्रिकोण भाव	1 5 9
पणफर भाव	2 5 8 11
अपोक्लिम भाव	3 6 9 12
चतुरस्र भाव	4 8
उपचय भाव	3 6 10 11
अनुपचय भाव	1 2 4 5 7 8 9 12
त्रिकया दुष्ट भाव	6 8 12
पतित भाव	6 12
मारक भाव	2 7
आयु भाव	3 8

योग कारक ग्रह

1. यदि कोई ग्रह केन्द्र तथा त्रिकोण का स्वामी होता है तो वह ग्रह योगकारक होता है।
2. जो ग्रह 3, 6, 8, 11, 12 भावों के किन्हीं दो का स्वामी होता है अकारक होता है।
3. चर लग्न में 11वें भाव का स्वामी, स्थिर में 9वें भाव का स्वामी और द्विस्वभाव में 7वें भाव का स्वामी बाधक होता है।

लग्न	योगकारक	अकारक	बाधक
मेष	सूर्य	बुध	शनि
वृष	शनि	गुरु	शनि
मिथुन	बुध	मंगल	गुरु
कर्क	मंगल	बुध	शुक्र
सिंह	मंगल	शनि	मंगल
कन्या	बुध	मंगल	गुरु
तुला	शनि	गुरु	सूर्य
वृश्चिक	चन्द्र	बुध	चन्द्र
धनु	गुरु	शुक्र	बुध
मकर	शुक्र	गुरु	मंगल
कुम्भ	शुक्र	चन्द्र	शुक्र
मीन	गुरु	शुक्र	बुध

❑

पाठ–3

ग्रह परिचय

शुभ–अशुभ ग्रह

शुभ चन्द्रमा, शुभ बुध, शुक्र और गुरु ये क्रम से अधिकाधिक शुभ माने गये हैं, अर्थात् चन्द्रमा से बुध, बुध से शुक्र और शुक्र से गुरु अधिक शुभ हैं। सूर्य, मंगल, शनि व राहु ये क्रम से अधिकाधिक पापी ग्रह कहे गये हैं, अर्थात् सूर्य से मंगल, मंगल से शनि और शनि से राहु अधिक पापी ग्रह हैं।

उच्च–नीच ग्रह

ग्रह	उच्च राशि	परम अंश	नीच राशि	मूल त्रिकोण	
				राशि	अंश
सूर्य	मेष	10°	तुला	सिंह	0^0–20^0
चन्द्रमा	वृष	3°	वृश्चिक	वृष	4^0–20^0
मंगल	मकर	28°	कर्क	मेष	0^0–12^0
बुध	कन्या	15°	मीन	कन्या	16^0–20^0
बृहस्पति	कर्क	5°	मकर	धनु	0^0–10^0
शुक्र	मीन	27°	कन्या	तुला	0^0–15^0
शनि	तुला	20°	मेष	कुंभ	0^0–20^0
राहु	मिथुन	15°	धनु	कन्या	0^0–15^0
केतु	धनु	15°	मिथुन	मीन	0^0–15^0

प्रत्येक ग्रह जिस राशि में उच्च का होता है उससे सातवीं राशि में नीच का होता है तथा उसके परम अंश समान रहते हैं। ग्रहों के उच्च–नीच बोध से कुण्डली का फलादेश किया जा सकता है।

ग्रहों का अस्त उदय

ग्रहों की दो प्रकार की गतियां होती हैं – वक्री गति (Retrograde) और सरल गति (Direct) इन गतियों के आधार पर सभी ग्रह सूर्य से भिन्न भिन्न राशियों पर अस्त होते हैं। जिसकी सारणी निम्न प्रकार है–

ग्रहों की अस्त सारणी

ग्रह	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सरल गति (Direct)	$\pm 12^0$	$\pm 17^0$	$\pm 14^0$	$\pm 11^0$	$\pm 10^0$	$\pm 16^0$
वक्र गति (Retrograde)	—	$\pm 8^0$	$\pm 12^0$	$\pm 11^0$	$\pm 8^0$	$\pm 16^0$

ग्रहों की मैत्री–शत्रुता

ग्रहों में पांच प्रकार की मित्रता–शत्रुता मानी गई है– अधिमित्र, मित्र, सम, शत्रु और अधिशत्रु। कुण्डली में ग्रह मित्र के भाव में स्थित हो तो शुभ और शत्रु के भाव में हो तो अशुभ फल देता है।

ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री तालिका

ग्रह	मित्र ग्रह	सम ग्रह	शत्रु ग्रह
सूर्य	चं., मं., बृ.	बु.	शु., श., रा. के.
चन्द्रमा	सू., बु.	श., शु., बृ., मं.	रा., के.
मंगल	सू., चं., बृ., के.	शु.,श.	बु., रा.
बुध	सू, शु.	मं., बृ., श., के., रा.	चं.
बृहस्पति	सू., चं., मं.	श., रा., के.	बु., शु.
शुक्र	बु., श., रा., के.	बृ., मं.	सू., चं.
शनि	बु., शु., रा.	बृ.	सू. चं. मं., के.
राहु	शु., श.	बु., बृ.	सू., मं., चं., के.
केतु	मं., शु.	बु., बृ.	श., रा., सू., चं.

तात्कालिक मैत्री

नैसर्गिक मैत्री के अलावा तात्कालिक मैत्री का भी विचार करना होता है। दोनों मित्रता (नैसर्गिक और तात्कालिक) के आधार पर पंचधा मैत्री चक्र बनता है।

जिस भाव में ग्रह स्थित होता है उससे 2, 3, 4 तथा 10, 11, 12 स्थानों में स्थित ग्रह तात्कालिक मित्र होते हैं तथा 5, 6, 7 तथा 7, 8, 9 एवं ग्रह के साथ स्थित ग्रह तात्कालिक शत्रु ग्रह होते हैं।

ग्रहों की तात्कालिक मैत्री तालिका

ग्रहों की तात्कालिक मैत्री जन्मकुंडली के आधार पर निर्धारित की जाती है। उदाहरण कुंडली के आधार पर तात्कालिक मैत्री निम्न अनुसार होगी।

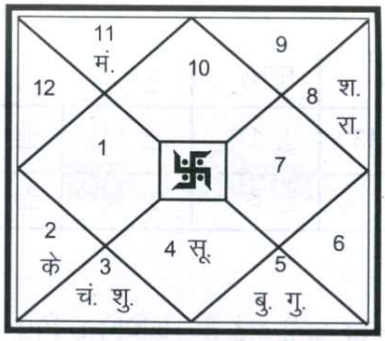

उदाहरण कुंडली

ग्रह	तात्कालिक मित्र	तात्कालिक शत्रु
सूर्य	चं. शु. के. बु. बृ	मं. श. रा.
चन्द्रमा	के. सू. बु. बृ.	शु. मं. श. रा.
मंगल	के. श. रा.	चं शु. सू. बु. बृ.
बुध	सू. चं. शु. के. श. रा.	मं. बृ.
बृहस्पति	सू. चं. शु. के. श. रा.	मं. बु.
शुक्र	सू. के. बृ. बु.	चं. मं. श. रा.
शनि	मं. बु. बृ.	रा. के. चं. शु. सू.
राहु	मं. बु. बृ.	के. चं. शु. सू. श.
केतु	मं. चं. शु. सू. बु. बृ.	श. रा.

पंचधा मैत्री

नैसर्गिक मैत्री और तात्कालिक मैत्री के आधार पर पंचधा मैत्री चक्र बनाया जाता है। पंचधा मैत्री चक्र में पांच प्रकार की स्थितियां होती हैं–अतिमित्र, मित्र, सम, शत्रु, अतिशत्रु। जब कोई ग्रह नैसर्गिक मैत्री में मित्र और तात्कालिक मैत्री में भी मित्र हो तो पंचधा मैत्री में वह अतिमित्र होता है। नैसर्गिक मैत्री में सम हो तथा तात्कालिक मैत्री में शत्रु हो तो पंचधा मैत्री में शत्रु हो जाता है। नैसर्गिक मैत्री में शत्रु हो तथा तात्कालिक मैत्री में भी शत्रु हो तो अतिशत्रु हो जाता है।

पंचधा मैत्री में पांच प्रकार की मैत्री होती है – मित्र, सम, शत्रु, अतिमित्र, अतिशत्रु ।

जिसको हम निम्न सारणी के अनुसार समझ सकते हैं :

नैसर्गिक मैत्री		तात्कालिक मैत्री		पंचधा मैत्री
मित्र	+	मित्र	=	अतिमित्र
मित्र	+	सम	=	मित्र
मित्र	+	शत्रु	=	सम
सम	+	मित्र	=	मित्र
सम	+	सम	=	सम
सम	+	शत्रु	=	शत्रु
शत्रु	+	मित्र	=	सम
शत्रु	+	सम	=	शत्रु
शत्रु	+	शत्रु	=	अतिशत्रु

उदाहरण कुंडली के लिए पंचधा मैत्री चक्र निम्न अनुसार होगा :–

	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
सू.	—	अतिमित्र	सम	मित्र	अतिमित्र	सम	अतिशत्रु	अतिशत्रु	सम
चं.	अतिमित्र	—	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	अतिशत्रु	सम
मं.	सम	सम	—	अतिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	अतिमित्र
बु.	अतिमित्र	सम	शत्रु	—	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र
बृ.	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	अतिशत्रु	—	सम	मित्र	मित्र	मित्र
शु.	सम	अतिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	—	सम	सम	अतिमित्र
श.	अतिशत्रु	अतिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	—	सम	अतिशत्रु
रा.	अतिशत्रु	अतिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	—	अतिशत्रु
के.	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अतिशत्रु	अतिशत्रु	––

पंचधा मैत्री के आधार पर ग्रहों के सप्त वर्गी बल का साधन किया जाता है। पंचधा मैत्री के अनुसार अतिमित्र के ग्रह में ग्रह का बल 22 कला 30 विकला होगा। मित्र के घर में 15 कला बल, सम के स्थान में 7 कला 30 विकला, शत्रु के स्थान में 3 कला 45 विकला, अतिशत्रु के स्थान में 1 कला 52 विकला बल, अपने ही भाव में 30 कला बल, मूल त्रिकोण राशि में 45 कला बल और उच्चराशि में 60 कला बल मिलता है।

आत्मादि

आत्मादि के द्वारा जातक की आत्मा, मन आदि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इनके कारक बलवान् होंगे तो ये भी पुष्ट होंगे और यदि कारक निर्बल अवस्था में होंगे तो ये भी निर्बल होंगे। वर्ण प्रश्न में नष्ट द्रव्यादि, चोर का रंग–रूप आदि तथा कुण्डली में जातक के रंग–रूप आदि की जानकारी ग्रह के वर्ण से प्राप्त होती है।

ग्रहों के कारकत्व :

सूर्य	:	आत्मा
चन्द्रमा	:	मन
मंगल	:	बल
बुध	:	वाणी
बृहस्पति	:	ज्ञान
शुक्र	:	काम वासना
शनि	:	दुःख

ग्रहों के रंग :

सूर्य	:	नारंगी
चन्द्र	:	क्रीम
मंगल	:	लाल
बुध	:	हरा
गुरु	:	पीला
शुक्र	:	सफेद (पारदर्शी)
शनि	:	काला / नीला

ग्रहों की दिशाऐं :

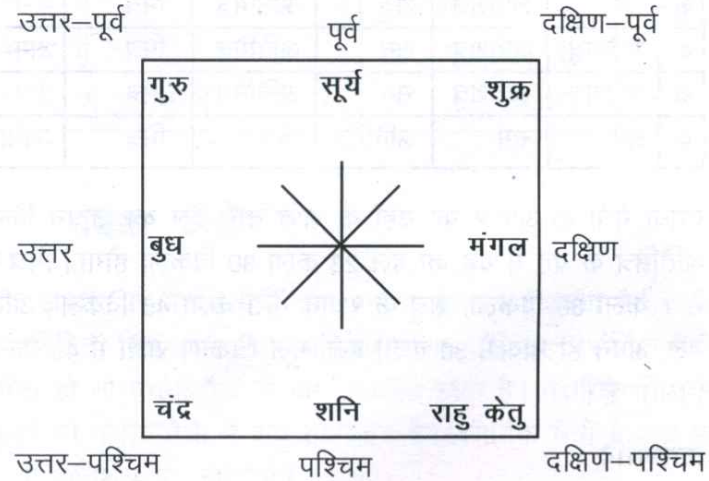

ग्रहों के गुण :

सात्त्विक	:	सूर्य, चन्द्र, गुरु
राजसिक	:	शुक्र, बुध
तामसिक	:	मंगल, शनि

ग्रह–स्थान :

सूर्य	:	मन्दिर
चन्द्र	:	जलीय स्थान
मंगल	:	आग्नेय स्थान
बुध	:	क्रीड़ा–स्थल
गुरु	:	कोषागार
शुक्र	:	शयनकक्ष
शनि	:	गन्दे स्थान

ग्रह–ऋतु :

शुक्र	:	वसन्त
सूर्य, मंगल	:	ग्रीष्म
चन्द्र	:	वर्षा
बुध	:	शरद
गुरु	:	हेमन्त
शनि	:	शिशिर

ग्रह–स्वाद :

सूर्य	:	तिक्त
चन्द्र	:	लवणीय
मंगल	:	कटु
गुरु	:	मधु
शुक्र	:	खट्टा

ग्रहों का मंत्रिमण्डल :

सूर्य	:	राजा
चन्द्र	:	मंत्री
मंगल	:	सेनापति
बुध	:	राजकुमार
गुरु, शुक्र	:	सलाहकार
शनि	:	सेवक

ग्रहों की इन्द्रियाँ :

सूर्य, मंगल	:	रूप
चन्द्र, शुक्र	:	रस
बुध	:	गन्ध
गुरु	:	शब्द
शनि	:	स्पर्श

ग्रह-रत्न :

सूर्य	:	माणिक्य
चन्द्र	:	मोती
मंगल	:	मूँगा
बुध	:	पन्ना
गुरु	:	पुखराज
शुक्र	:	हीरा, जिरकॉन
शनि	:	नीलम
राहु	:	गोमेद
केतु	:	लहसुनिया

ग्रह-धातु :

मंगल, शनि	:	तांबा
चन्द्र, शुक्र	:	चांदी
बुध	:	घण्टा–धातु (कास्य)
गुरु	:	सोना
शनि	:	लोहा
राहु, केतु	:	शीशा

ग्रहों के वस्त्र :

सूर्य	:	मोटा
चन्द्र	:	नया
मंगल	:	दग्ध (जला हुआ)
बुध	:	भीगा हुआ
गुरु	:	हाल का बना किन्तु नया नहीं
शुक्र	:	टिकाऊ
शनि	:	फटा–चिथड़ा

ग्रह-वृक्ष :

सूर्य	:	मोटे तने का पेड़
चन्द्र	:	रबड़ का पेड़
मंगल	:	नीबू का पेड़
बुध	:	फलहीन वृक्ष
गुरु	:	फलहीन वृक्ष
शुक्र	:	फूलदार वृक्ष
शनि	:	अनुपयोगी पेड़

ग्रहों के कारकत्व

ग्रहों को कुछ नैसर्गिक काम सौंपे गये हैं। उनका भी विचार करना आवश्यक है। भारतीय ज्योतिष फलित का आधार ग्रह, राशियां तथा भाव हैं। इसलिये ग्रहों, राशियों तथा भावों की संज्ञाओं का ज्ञान आवश्यक हो जाता है। भारतीय ज्योतिष में सात ग्रह तथा दो छाया ग्रहों को स्थान प्राप्त है। सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र तथा शनि सात ग्रह हैं तथा राहु केतु छाया ग्रह हैं।

सूर्य

सूर्य पिता का प्रतीक है। यह ब्रह्माण्ड की आत्मा, अहम्, सहानुभूति, प्रभाव, यश, स्वास्थ्य, दाएँ नेत्र, दिन, ऊर्जा, औषधियाँ, चिकित्सक, अधिकारी वर्ग, पिता, राजा, राजनीति, चिकित्सा विज्ञान, गौरव, पराक्रम का कारक है। ज्योतिषीय दृष्टि से सूर्य पितृ, प्रकृति, लम्बा, अल्प बाल, क्रूर ग्रह, तांबे जैसे रंग, राजसी, दार्शनिक, पूंजी उधार देने वाले, रोगों से बचाने की शक्ति, दृढ़ इच्छा शक्ति, पद का प्रतीक है।

पदार्थ : ईंधन, बिजली, चर्म, ऊन, सूखा अनाज, विष, तथा गेहूँ सूर्य के अधीन हैं। सूर्य बीजों का विकास करता है।

स्थान : खुले स्थान, पर्वत, वन, प्रमुख शहर, पूजा के स्थान, न्यायालय, पूर्व दिशा, ऐसा स्थान जहां पानी न हो।

अंग : सिर, पेट, हड्डियां, हृदय, नेत्र, मस्तिष्क।

रोग : उच्च रक्तचाप, तीव्रज्वर, पेट तथा नेत्र संबंधी रोग, पित्तज बीमारियां तथा हृदय रोग देता है। जब सूर्य पीड़ित होता है तथा जलीय राशियों में स्थित होता है तो क्षय रोग, पेचिश रोग देता है।

धातु / रत्न : तांबा, सोना, माणिक्य

चन्द्रमा

इसका शरीर स्थूल है। घुंघराले बालों, गोरा रंग तथा सुंदर आंखों का प्रतीक है। चन्द्रमा मन, माता, भ्रमण की रुचि, रस, सम्मान, निद्रा, प्रसन्नता, धन, यात्रा, जल, अस्थिर मन का कारक ग्रह है।

पदार्थ : कपड़ा, दूध, शहद, मीठी वस्तुएं, चावल, जौ,

स्थान : झील, समुद्र, नदियां, महानदी, पर्वत, महल।

अंग : नसों, मस्तिष्क, छाती, अंडाशय तथा प्रजनन

रोग : सांस की बीमारी, त्वचा की बीमारियां, अपच, मन्दाग्नि आदि बीमारियों का कारक ग्रह है। यह कफ तथा वायु का भी कारक ग्रह है।

धातु / रत्न : मोती, चांदी

मंगल

शक्ति, साहस, पराक्रम, प्रतियोगिता, क्रोध, उत्तेजना, षड्यन्त्र, शत्रु, विपक्ष, विवाद, शस्त्र, सेनाध्यक्ष, युद्ध, दुर्घटना, अग्नि, घाव, भूमि, अचल सम्पत्ति, छोटा भाई, चाचा के लड़के, नेता, पुलिस, सर्जन, मेकैनिकल इंजीनियर, अग्निमय आंखें, क्रूर प्रकृति, अस्थिर बुद्धि, स्वतन्त्र प्रकृति, दुराग्रही, युवा, छोटे भाई, फौजी प्रकृति, हवाई यात्राओं, हत्या करने वाला, मजदूरों के नेता।

पदार्थ : हथियार, भूमि, तम्बाकू, सरसों।
स्थान : रसोई, इंजन, अग्नि स्थल, युद्ध भूमि, पुलिस स्टेशन।
अंग : रक्त, पेशी, पित्त, सिर, नाक, कान आदि।
रोग : रक्त संबंधी रोग, उच्च या निम्न रक्तचाप, रक्तस्राव, अग्नि से जलना, गर्भपात।
धातु / रत्न : तांबा, सोना, मूंगा।

बुध

इसका अपना कोई प्रभाव नहीं होता और यह जिसके साथ होता है वैसा ही हो जाता है। बुध हास्य विनोद का प्रतिनिधि ग्रह है। बहुत बोलना, उसके पास विविध विषयों पर बहुत सारी सूचनाएं होती हैं। यह राजकुमार है। यह मितव्ययी, व्यापारिक प्रकृति वाला, बुद्धिमत्ता, वाणी–पटुता तर्क, अभिव्यक्ति, शिक्षा, शिक्षण, गणित, डाकिया, ज्योतिषी, लेखाकार, व्यापार, कमीशन एजेंट, प्रकाशन, राजनीति में मध्यवर्ती व्यक्ति, नाटक, धातुओं का मिश्रण, मामा, मित्र, सम्बन्धी आदि।

पदार्थ : हरा चना, पन्ना, तिलहन, खाद्य तेल, पालक, मिश्रित धातुयें।
स्थान : स्कूल, खेल के मैदान, पार्क, विश्वविद्यालय।
अंग : मस्तिष्क, जिह्वा, स्नायु, कंठ, त्वचा, वाक्शक्ति
रोग : स्मरण शक्ति की हानि, त्वचा की बीमारियाँ, दौरे, चेचक, कफ, वात पित्त, उन्माद, एवं गूंगापन।
धातु / रत्न : पन्ना, पीतल, सोना।

बृहस्पति

विवेक, बुद्धिमत्ता, शिक्षण, शरीर की मांसलता, धार्मिक कार्य, ईश्वर के प्रति निष्ठा, बड़ा भाई, पवित्र स्थान, दार्शनिकता, धार्मिक ग्रन्थों का पठन–पाठन, सच्चाई का प्रतीक, दार्शनिक, प्रत्येक प्रकार के विज्ञान में रुचि रखने वाला, धार्मिक, गुरु, अध्यापक, दान देना, परोपकार, मन्त्री, सलाहकार, फलदार वृक्ष, पुत्र आदि।

पदार्थ : पीली वस्तुएं, चने की दाल।
स्थान : न्यायालय, पाठशाला, मन्दिर, धार्मिक स्थान।
अंग : विवेक, शक्ति, उदर, जिगर, जंघा का कारक है।
रोग : जिगर की बीमारियाँ, गुर्दे की बीमारियाँ, मधुमेह, जलोदर, पाचन–क्रिया के रोग। वसा के द्वारा उत्पन्न रोग।
धातु / रत्न : सोना, पुखराज

शुक्र

पति/पत्नी, विवाह, रतिक्रिया, प्रेम सम्बन्ध, संगीत, काव्य, इत्र–सुगंध, घर की सजावट, ऐश्वर्य, दूसरों के साथ–सहयोग, फूल, फूलदार वृक्ष, पौधे, सौंदर्य, आँखों की रोशनी, आभूषण, जलीय स्थान, सिल्कन कपड़ा, सफेद रंग, वाहन, शयन कक्ष, सुख–साधन आदि। काले घुंघराले बाल, विशाल शरीर, कालिमा लिए रंग, चौड़ी आंखें, सुंदर चेहरे, नाक नक्श का प्रतिनिधि है। शुक्राणु, रति का शौकीन, प्रेम–सम्बन्ध, आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी है। नृत्य–कला, ऐन्द्रिय सुख, ड्रामा, अभिनय, सजावट का कारक है।

पदार्थ : इत्र, सजावट की वस्तु, सिल्क।
स्थान : शयनकक्ष, सिनेमा, फुब्बारा।
अंग : रति क्रिया के अंग, लिंग, मूत्राशय, बाल, शुक्र कीटाणु,
रोग : मधुमेह, रतिज संबधि रोग, गुप्त रोग, यौन असमर्थता, आंखों की कमजोरी, श्वेत प्रदर, वीर्यपात।
धातु / रत्न : हीरा, चांदी।

शनि

आयु, दुख, रोग, मृत्यु, संकट, अनादर, गरीबी, आजीविका, अनैतिक तथा अधार्मिक कार्य, विदेशी भाषा, विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा, मेहनत वाले कार्य, कृषीय व्यवसाय, लोहा, तेल, खनिज पदार्थ, कर्मचारी, सेवक, नौकरियां, चोरी, क्रूर कार्य, पंगुता, अंग–भंग, लोभ, लालच बिस्तरे पर पड़े रहना, चार दीवारी में बन्द रहना, जेल, हास्पीटल में पड़े रहना, वायु, जोड़ों के दर्द, कठोर वाणी आदि। रूखे–सूखे बाल, लम्बे बड़े अंग, बड़े दांत तथा वृद्ध शरीर, काले रंग का दिखने वाला होता है। यह अशुभ ग्रह है। मन्द गति ग्रह है। निराशा तथा जुए का प्रतीक है।

स्थान : गन्दे और अंधेरे स्थान, गुफा, जंगल।
पदार्थ : लोहा, काले चने, भांग, तेल, पेट्रोल, कोयला, केरोसिन।
अंग : दांत, कलाई, पीठ, पैर।
रोग : सारे पुराने लाइलाज रोग, दांत, सांस, क्षय, वातज, गुदा के रोग, जख्म, जोड़ों के दर्द आदि।
धातु / रत्न : नीलम, लोहा, पंच धातु।

राहु

छाया ग्रह, दादा, कठोर वाणी, जुआ, भ्रामक तर्क, गतिशीलता, यात्राएं, विजातीय लोग, विदेशी लोग, विदेश यात्रा, विष, चोरी, दुष्टता, विधवा, धार्मिक यात्राएं, षडयन्त्रकारी ।

पदार्थ : अण्डे, नारियल, मांस।
अंग : होठ, त्वचा
रोग : कुष्ठ रोग, श्वेत रोग, चेचक, हैजा, संक्रामक रोग।
धातु / रत्न : अष्ट धातु, गोमेद इसका रत्न है।

केतु

दर्द, ज्वर, घाव, शत्रुओं को नुकसान पहुंचाना, तांत्रिक तंत्र, जादू–टोना, कुत्ता, सींग वाले पशु, बहुरंगी पक्षी, मोक्ष, अचानक होने वाली घटनाऐ, अशुभ धार्मिक प्रकृति, साम्प्रदायिक कट्टर पन्थी, घमंडी, स्वार्थी।

रोग : आंत्रिक जोड़ों, चेचक, हैजा तथा संक्रामक रोगों
धातु / रत्न : अष्ट धातु, लहसुनिया।

ग्रहों की अन्य विशेषताएँ

प्रकाश ग्रह : सूर्य, चन्द्र

शुभ ग्रह : गुरु, शुक्र तथा चन्द्र (सशर्त) एवं बुध (सशर्त)
शर्त – चंद्र पक्षबली होना चाहिए, बुध शुभ राशि अथवा शुभ ग्रह के साथ होना चाहिए।

अशुभ ग्रह : सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु चंद्र (पापी), बुध (पापी)

बहिर्युति ग्रह : मंगल, गुरु, शनि

अन्तर्युति ग्रह : बुध, शुक्र

राशि चक्र में ग्रहों की दैनिक औसत गति

सूर्य	: 1^0
चन्द्र	: 12^0
मंगल	: 42′
बुध	: 75′
गुरु	: 5′
शुक्र	: 75′
शनि	: 2′
राहु/केतु	: 3′

ग्रहों की अवस्था

महर्षि पाराशर ने ग्रहों की मात्रात्मक फल देने की क्षमता का अनुमान लगाने के लिये विभिन्न अवस्थाएं बतलाइ हैं। मुख्यतः
1. दीप्तादि अवस्था
2. बालादि अवस्था
3. जाग्रतादि अवस्था

1. दीप्तादि अवस्था :

यह नौ अवस्थाएं होती हैं। राशि में ग्रहों की स्थिति के आधार पर 9 अवस्थाएं होती हैं जो निम्न प्रकार हैं :

ग्रह की स्थिति	अवस्था
उच्च राशि	दीप्त
स्वराशि	स्वस्थ
अतिमित्र	मुदित
मित्र	शान्त
सम	दीन
शत्रु	दुःखी
पाप ग्रह	विकल
अति शत्रु	खल
सूर्य से अस्त	कोपी

दीप्त ग्रह की दशान्तर्दशा में राज्य लाभ, अधिकार प्राप्त, धन, वाहन, स्त्री, पुत्रादि का लाभ व आदर सत्कार व राज्य सम्मान प्राप्त होता है।

स्वस्थ अर्थात स्वक्षेत्री ग्रह की दशान्तर्दशा के स्वास्थ्य लाभ, धन, सुख, विद्या यश स्त्री वाहन, भूमि आदि का लाभ होता है।

मुदितावस्था (अधि मित्र की राशि) में स्थित ग्रह की दशान्तर्दशा में वस्त्र, आभूषण पुत्र, धन, वाहन आदि का लाभ होता है।

शान्तावस्था (मित्रराशि) में स्थित ग्रह की दशान्तर्दशा में सुख, धर्म, भूमि, पुत्र स्त्री, वाहन, सम्मान प्राप्त होता है।

दीनावस्था (समग्रह की राशि) में स्थित ग्रह की दशान्तर्दशा में स्थान परिवर्तन, बन्धुओं से विरोध निन्दित, हीन स्वभाव, मित्र साथ छोड़ देते हैं, रोग आदि होने की सम्भावना होती है।

दुःखावस्था (शत्रुक्षेत्री) ग्रह की दशान्तर्दशा में जातक को कष्ट प्राप्त होते हैं। विदेश यात्रा, चोरी, अग्नि या रोगादि से धन हानि होती है।

विकलावस्था में (पापयुक्त ग्रह) की दशान्तर्दशा में मन में हीन भावना, मित्रों की मृत्यु, परिवार जनों की मृत्यु, स्त्री, पुत्र वाहन, भूमि, वस्त्रादि की हानि होती है।

खलावस्था अति (पाप ग्रह की राशि में स्थित) ग्रह की दशान्तर्दशा में कलह, वियोग (बन्धु,माता या पिता आदि की मृत्यु) शत्रुओं से पराजय, धन, भूमि, वाहन की हानि होती है।

कोपीअवस्था (सूर्य से अस्त) ग्रह की दशान्तर्दशा में अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं। विद्या, धन, भूमि, वाहन, पुत्र, स्त्री, बन्धुओं से पीड़ा होती है।

2. बालादि अवस्था :

बालादि अवस्था में हम ग्रह के अंशों के अनुसार फल कथन करते हैं। 6^0–6^0 अंश की यह अवस्था होती है। विषम एवं सम राशियों के अनुसार ग्रहों की अवस्थाएं निम्न प्रकार होती है :–

विषम राशि में ग्रह के अंश	अवस्था	सम राशि में ग्रह के अंश
0^0–6^0	बाल	24^0–30^0
6^0–12^0	कुमार	18^0–24^0
12^0–18^0	युवावस्था	12^0–18^0
18^0–24^0	वृद्धावस्था	6^0–12^0
24^0–30^0	मृतावस्था	0^0–6^0

बालावस्था में ग्रह का चौथाई फल, कुमारावस्था में आधा, युवावस्था मे पूरा, वृद्धावस्था में मामूली तथा मृतावस्था में शून्य फल प्राप्त होता है।

3. जाग्रतादि अवस्था :

विषम राशि में ग्रह के अंश	विषम राशि	सम राशि में ग्रह के अंश
0^0–10^0	जाग्रत	20^0–30^0
10^0–20^0	स्वप्न	10^0–20^0
20^0–30^0	सुषुप्त	0^0–10^0

जाग्रत अवस्था में पूर्ण फल, स्वप्न में मध्यम तथा सुषुप्ति अवस्था में शून्य फल मिलता है।

इस प्रकार ग्रह का मात्रात्मक फल का विचार बृहत् पाराशर होरा शास्त्र में मिलात है। महर्षि पाराशर ने ग्रह का मात्रात्मक बल का विचार ग्रह भाव बल (षष्ठ बल) आदि से तथा षष्ठ वर्गीय बल से भी किया है। लिखने का अर्थ केवल इतना ही है कि ग्रह के बल का भी उतना ही महत्व है जितना किसी अन्य बल का। इसलिए फल कथन से पहले ग्रह की अवस्था तथा अंशों का ध्यान रखकर मात्रात्मक फल का अनुमान करना चाहिये। क्योंकि दाशान्तर्दशा के द्वारा दोनों तत्त्वों का समावेश करके फल कथन करना चाहिये।

ग्रहों के सम्बन्ध

ग्रहों के चार प्रकार के सम्बन्ध माने हैं। कुछ आचार्यों ने पांच प्रकार के सम्बन्ध भी कहे हैं।

1. दो ग्रहों में परस्पर राशि परिवर्तन का योग हो, अर्थात् 'क' ग्रह 'ख' ग्रह की राशि में बैठा हो और 'ख' ग्रह 'क' ग्रह की राशि में बैठा हो तो यह अति उत्तम सम्बन्ध होता है।

2. जब दो ग्रह परस्पर एक–दूसरे को देख रहे हों अर्थात् 'क' ग्रह 'ख' ग्रह को देख रहा हो और 'ख' ग्रह 'क' ग्रह को देख रहा हो तो यह मध्यम सम्बन्ध माना जाता है।

3. दोनों ग्रहों में से एक ग्रह दूसरे की राशि में बैठा हो और दोनों एक–दूसरे को देखता हों तो यह तीसरा सम्बन्ध माना जाता है।

4. दोनों ग्रह एक ही राशि में संयुक्त होकर बैठे हों तो यह चौथे प्रकार का सम्बन्ध होता है और अधम कहा गया है।

5. जब दो ग्रह एक–दूसरे से त्रिकोण (पांचवें–नवें) स्थान पर स्थित हों तो यह मतान्तर से पांचवां सम्बन्ध होता है।

ग्रहों की दृष्टियां

सभी ग्रह अपने स्थान से सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं लेकिन मंगल अपने स्थान से चौथे और आठवें स्थानों को, गुरु अपने स्थान से पांचवें और नवें स्थानों को व शनि अपने स्थान से तीसरे और दसवें स्थानों को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है।

कुछ प्राचीन आचार्यों ने राहु–केतु की दृष्टि को भी मान्यता दी है, लेकिन महर्षि पराशर ने इनकी कोई दृष्टि नहीं मानी है। अन्य आचार्यों के मत से राहु अपने स्थान से सातवें, पांचवें और नवें स्थानों को पूर्ण दृष्टि से देखता है। ऐसी ही केतु की भी दृष्टि होती है।

प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से तीसरे और दसवें स्थानों को एक पाद दृष्टि से, पांचवें और नवें को दो पाद दृष्टि से तथा चौथे और आठवें स्थान को तीन पाद दृष्टि से देखता है।

सूर्य और मंगल की ऊर्ध्व दृष्टि है, बुध और शुक्र की तिरछी, चन्द्रमा और गुरु की बराबर (सम) तथा राहु और शनि की नीची दृष्टि है।

ग्रहों का दृष्टि चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु/केतु (मतांतर से)
दृष्टियां	7	7	4, 7, 8	7	5,7,9	7	3, 7, 10	5, 7, 9

भावों के स्थिर कारक ग्रह

भाव	भाव का नाम	कारक ग्रह
1. प्रथम भाव	तनु भाव	सूर्य
2. द्वितीय भाव	धन भाव	बृहस्पति
3. तृतीय भाव	सहज भाव	मंगल
4. चतुर्थ भाव	सुख भाव	चन्द्रमा
5. पंचम भाव	पुत्र भाव	बृहस्पति
6. षष्ठ भाव	शत्रु भाव	शनि
7. सप्तम भाव	कलत्र भाव	शुक्र (पुरुष)/गुरु (स्त्री)
8. अष्टम भाव	आयु भाव	शनि
9. नवम भाव	धर्म, भाग्य, पितृ भाव	बृहस्पति
10. दशम भाव	कर्म भाव	बुध
11. एकादश भाव	आय भाव	बृहस्पति
12. द्वादश भाव	व्यय भाव	शनि

अन्य ज्योतिष विद्वानों ने मत के अन्य कारक भी माने हैं जैसे– प्रथम भाव का कारक सूर्य के साथ चन्द्रमा भी है। द्वितीय भाव का कारक बुध वाणी पटुता का कारक, तृतीय भाव का शनि–आयु कारक, चतुर्थ भाव का शुक्र–वाहन का कारक, पंचम भाव का कारक बहुस्पति–पुत्र, विद्या षष्ठ भाव का बुध– मामा का कारक, दशम भाव का मंगल–पराक्रम, तकनीकी शिक्षा, प्रतियोगिता का कारक तथा द्वादश भाव का शुक्र सम्भोग का कारक ग्रह भी माना है।

आत्मादि चर कारक

सूर्यादि नौ ग्रहों में जो ग्रह स्पष्ट तुल्य अंशों में अधिक हो, अर्थात् अधिक अंशों वाला हो, वह आत्मकारक, उससे कम अंशों वाला ग्रह अमात्यकारक, उससे कम अंशों वाला ग्रह भ्रातृकारक, उससे कम अंशों वाला मातृकारक, उससे कम अंशों वाला मात्रकारक, उससे कम अंशों वाला पुत्रकारक, उससे कम अंशों वाला ज्ञातिकारक तथा उससे कम अंशों वाला कलात्र कारक कहा गया है।

ग्रहों के लोक

पूर्व में जातक किस लोक में था और मृत्यु के पश्चात् कहां जायेगा आदि के विचार के लिए ग्रहों के लोक का उपयोग होता है।

स्वर्ग का अधिपति गुरु, पितृलोक के शुक्र और चन्द्रमा, पाताललोक का बुध, मृत्युलोक का मंगल और सूर्य तथा नरक का अधिपति शनि है।

❑

पाठ–4

राशि परिचय

भारतीय ज्योतिष में भचक्र का प्रथम बिन्दु अश्विनी नक्षत्र से लिया जाता है। इस प्रथम बिन्दु से भचक्र को 12 भागों में बांटा जाता है। इस प्रकार प्रत्येक राशि का कोणीय मान 30^0 होता है। 12 राशियों के नाम और उनके स्वामी (वे ग्रह जिन्हें इन राशियों का स्वामी कहा जाता है) निम्नलिखित हैं।

सं.	अंग्रेजी नाम	हिन्दी नाम	राशि चिह्न	अंश	स्वामी
1	ARIES	मेष	♈	0^0 - 30^0	मंगल
2	TAURUS	वृष	♉	30^0 - 60^0	शुक्र
3	GEMINI	मिथुन	♊	60^0 - 90^0	बुध
4	CANCER	कर्क	♋	90^0 - 120^0	चन्द्रमा
5	LEO	सिंह	♌	120^0 - 150^0	सूर्य
6	VIRGO	कन्या	♍	150^0 - 180^0	बुध
7	LIBRA	तुला	♎	180^0 - 210^0	शुक्र
8	SCORPIO	वृश्चिक	♏	210^0 - 240^0	मंगल
9	SAGITTARIUS	धनु	♐	240^0 - 270^0	बृहस्पति
10	CAPRICORN	मकर	♑	270^0 -300^0	शनि
11	AQUARIUS	कुम्भ	♒	300^0 - 330^0	शनि
12	PISCES	मीन	♓	330^0-360^0	बृहस्पति

राशियों के गुण धर्म

मेष राशि (♈)

भौतिक लक्षण : मध्यम कद, पतला मांसल शरीर, लंबा चेहरा और गर्दन, चौड़ा मस्तक, सिर या कनपटी पर निशान, सुदृढ़ दंतपक्ति, गोल आंखें, घुंघराले बाल।

अन्य गुणः

सौभाग्यशाली वर्ष : 16, 20, 28, 34, 41, 48, 51

कष्टप्रद वर्ष : 1, 3, 6, 8, 15, 21, 36, 40, 45, 56, 63

महत्वाकांक्षी, अग्रणी और उत्साही, अड़ियल मगर स्पष्टवादी, व्यावहारिक, सौंदर्य, कला और सुरुचि प्रेमी। साहसिक, वाद–विवाद में रुचि, झगड़ालू। धार्मिक कट्टरपंथी, धैर्यहीन। जल से डर, भ्रमण प्रिय, प्रारंभिक जीवन में संघर्ष रहते हैं। योजना बनाने में निपुण, कार्यगति तीव्र, प्रशासन में सक्षम। दीर्घकालीन कार्यों में अरुचि। संकट का सामना करने की प्रतिभा परंतु दीर्घकालीन कष्टों से लड़ने में अक्षम। दूरदृष्टि, आदर्शवादी, उचित–अनुचित के मापदंडों का स्वयं निर्माता। लघु स्तर के कार्यों में अरुचि, विशालकाय उद्यमों से लगाव। उत्तम स्वभाव और आकर्षण, विपरीत लिंग के व्यक्ति प्रभावित होते हैं। जीवन का स्वयं निर्माता, कामी, प्रेम प्रसंगों में असफल। गृह और परिवार से लगाव, सदा परिवारजनों के मध्य रहना पसंद करते हैं। घर को साफ–सुथरा रखते हैं। सरकार में उच्च पदों पर आसीन।

संभावित रोग : सिरदर्द, जलना, तीव्र ज्वर, पक्षाघात, मुंहासे, आधा–सीसी का दर्द, चेचक और स्नायविक व्याधियां। अधिक विश्राम और निद्रा, स्वादिष्ट भोजन और सब्जियों में रुचि।

रत्नों के रखने का स्थान, धातु, अग्नि, खनिज पदार्थ, लाल रंग, पाप राशि, मिलनसार, तुनुक मिजाज, झूठ बोलना, पृष्ठोदय, पुरुष राशि, क्रूर राशि, अग्नि तत्व, रजो गुण, दिनबली होती है।

वृष राशि (♉)

भौतिक लक्षण : मध्यम कद, प्रायः मोटा शरीर, चौड़ा मस्तक, मोटी गर्दन, सुंदर आकर्षक चेहरा, बड़े कान और आंखें, चौड़े कंधे, गठीला शरीर, गेहुंआ रंग, सफेद दांत, भारी जांघें, घुंघराले बाल, कमर या बगल में मस्सा।

अन्य गुणः प्रेमपूर्ण व्यवहार, सौंदर्य उपासक, संगीत और कला में रुचि। आरामपसंद, प्रेम, सुविधाओं और उत्तम भोजन में रुचि। उत्तम शारीरिक और मानसिक शक्ति। अच्छे मित्र, स्पष्टवादी। निष्कर्ष निकालने से पूर्व भले–बुरे का अध्ययन। धन संचयी, खर्च में सावधान। आत्मनिर्भर, स्वयं की विशिष्ट कार्य प्रणाली और सिद्धांत। कूटनीतिक व्यवहार के कारण इनकों समझना कठिन होता है।

बारीकी के काम में महारत, स्मरण शक्ति उत्तम, प्रत्येक कार्य प्रसन्नतापूर्वक संपन्न करते हैं। उच्चकोटि के पदों पर कार्यरत, सुख–सुविधाओं की सामग्री जैसे इलेक्ट्रॉनिक सामान, सौंदर्य प्रसाधन, बाग–बगीचे, इत्र, आभूषण आदि के व्यापार में रुचि। उत्तम अभिनेता, संगीतज्ञ, फिल्म निर्माता आदि होते हैं। कन्या विद्यालय या महिला क्लब में कार्यरत। भाग्यवान, आभूषणों और बागवानी पर धन व्यय करते हैं। विपरीत लिंग के व्यक्ति आकर्षित होते हैं, कन्या संतान अधिक होती है। विवाहित जीवन में तलाक बहुत कम होते हैं।

संभावित रोग : टॉन्सिल, डिप्थीरिया, पायरिया, जुकाम, कब्ज। जीवन में एक बार मतिभ्रम अवश्य होता है। 8 से 16 और 36 से 47 वर्ष की आयु में पारिवारिक समस्याओं के कारण मानसिक कष्ट होता है। उन्हें कठिनाइयों में हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

कठिन वर्ष : 1, 2, 8, 33, 44 और 61

वन अथवा खेत, जहां पशु बाँधे जाते हैं, जलपूर्ण खेत जहां धान पैदा होता है। शुभ राशि, स्त्री राशि, क्षमाशील, चौड़ी जांघें, बड़ा चेहरा, तुनुक मिज़ाज जब किसी बात पर क्रोधित हो जाए, व्यापारी वर्ग पृष्ठोदय तथा रात्रिबली होती है।

मिथुन राशि (II)

भौतिक लक्षणः लंबा, सुडौल शरीर, पतले और लंबे हाथ, मध्यम रंग, थोडी के पास गड्ढा, सक्रिय, स्पष्ट वचन, तीखी–सक्रिय काली आंखें, लंबी नाक, चेहरे पर मस्सा। **अन्य गुण** : साहसी, मानव स्वभाव का ज्ञान, सहानुभूतिपूर्ण और दयालु। ज्ञान, मौलिकता और चुस्ती में उत्तम, वक्त की नजाकत तुरंत भांप लेते हैं। घोखाघड़ी के कारण हानि उठाते हैं। ईश्वर की सहायता उपलब्ध होती है। जरूरत के मुताबकि स्वयं को ढाल लेते हैं। परिवर्तनशील मिज़ाज, धैर्यहीन, बेचैन। मानसिक कार्यों में प्रवीण। संकल्पशक्ति कमजोर, निर्णयक्षमता तीव्र और एकाग्रता उत्तम होती है। यंत्र विज्ञान में प्रवीण होते हैं। प्रत्येक विषय की जानकारी रखते हैं। वार्तालाप में उत्कृष्ट रहते हैं, कवि, वक्ता, लेखक, संगीतज्ञ आदि होते हैं। दो व्यवसाय भी हो सकते हैं। दो कार्य साथ–साथ सफलतापूर्वक संपन्न कर सकते हैं। नौकरी में किस्मत साथ नहीं देती है। समाज में सम्मान होता है। महिलाओं द्वारा कार्य में बाधा या हानि होती है। विपरीत लिंग के व्यक्तियों के साथ सावधानी बरतनी चाहिए। धर्म और अध्यात्म में रुचि होती है। महिलाओं इनकी कमजोरी होती है। उनका स्नेह पाने में प्रवीण होते हैं। सामाजिक उत्सवों आदि में भाग लेने के लिए तत्पर रहते हैं। विवाह में उत्साह और रुचि रहती है।

संभाव्य रोग : जुकाम, खांसी, यक्ष्मा, इंफ्लुएंजा। 33 से 46 वर्ष की आयु का समय इनके जीवन का स्वर्णकाल रहता है। 47 से 56 वर्ष में कष्ट रहते हैं। आयु के 6, 21 और 32 वें वर्ष अशुभ होते हैं। जहां नर्तक, संगीतकार, कलाकार वेश्याएं रहती हैं, उनका प्रतिनिधित्व करती है। शयनकक्ष, मनोरंजन करना, ताश खेलना आदि स्थानों की स्वामी है। यह उभयोदय राशि, घुंघराले बाल, काले ओष्ठ, अन्य व्यक्तियों को समझने में चतुर, उन्नत नाक, संगीत में रुचि, गृह कार्य में रुचि, पतली, लम्बी उंगलियां, मध्य दिन में बली रहती है। पुरुष राशि है।

कर्क राशि (☋)

भौतिक लक्षणः छोटा कद, बौनापन, शरीर का ऊपरी भाग बड़ा, बचपन में दुबला शरीर, सुदृढ पुरुषत्व, गोल चेहरा, चेहरे पर भय की छाया, पीला–फीका रंग, भूरे बाल, लहराई सी चाल, चौड़े दांत, चौड़े कंधे, सीधे नहीं चलते हैं।

अन्य गुण : कल्पनाशक्ति उत्तम, नकल उतारने में महारत, कई अभिनेता और नकलची इस राशि के होते हैं। नये विचारों को शीघ्र अपना लेते हैं, नये वातावरण में शीघ्र ढल जाते हैं। परिश्रम द्वारा धन संचय करते हैं। परिवर्तनशील प्रकृति के कार्य कर सकते हैं। व्यापार विशेषकर खान–पान के कार्य में निपुण होते हैं। अच्छे नेता, वक्ता, लेखक, सलाहकार होते है। क्रोधी और धैर्यहीन होते हैं। मूड बदलता रहता है। भरोसेमंद नहीं होते। बातूनी, आत्मनिर्भर, ईमानदार और न झुकने वाले होते हैं। न्यायप्रिय होते हैं। स्मरणशक्ति उत्तम रहती है। अच्छे मेहमानवाज होते हैं। विद्वानों के प्रिय होते हैं। परिवार और संतान में आसक्त रहते हैं। आदर्श जीवन साथी साबित होते हैं। प्रायः महिलाओं के चक्कर में रहते हैं। बेचैन और भटकते रहते हैं।

संभाव्य रोग : फेफड़ों का संक्रमण, खांसी, यक्ष्मा, अजीर्ण, अफरा, स्नायविक दुर्बलता, पीलिया आदि। 21 से 36 वर्ष की आयु का समय सौभाग्यशाली होता है। 37 से 52 वर्ष में आर्थिक कठिनाइयां और शत्रुओं से कष्ट होते हैं। 52 से 69 वर्ष का समय अति उत्तम रहता है। अशुभ वर्ष 5,25,40,48 और 62।

जलीय खेत जहां धान पैदा होता है। कुएं, तालाब, नदी के किनारे जहां पौधों की अधिकता होती है, आदि स्थानों की स्थायी है। चलने में तेज, धन का शौकीन, शुभ राशि, मिलनसार प्रकृति, निःस्वार्थ, दूसरों के लिए बलिदान देने वाला जातक होता है। स्त्री राशि है।

सिंह राशि (♌)

भौतिक लक्षण : अच्छा कद, चौड़े कंधे, सुदृढ़ शरीर, प्रभावशाली व्यक्तित्व, अंडाकार चेहरा, शरीर का ऊपरी भाग सुडौल, पतली कमर, नीली या पीली आंखें।

अन्य गुण : प्रभुत्वशाली, मुखर, ताकतवर, प्रशासन में सक्षम। स्पष्टवादी, दयालु, क्षमाशील, महत्वाकांक्षी, संकल्पशील। पठन–पाठन के शौकीन होते हैं। आय सीमित होने पर भी शान से जीते हैं। लोगों में आत्मविश्वास, जागृत करने में निपुण होते हैं। चाटुकारी से अप्रसन्न होते हैं। मुख्य गुण है इनका शांत स्वभाव। पूर्व दिशा की यात्रा और पूर्व दिशा की ओर, मुख करके कार्य करना लाभकारी रहता है। आत्मविश्वास और वस्तुओं का संग्रह इनकी सफलता के मूलाधार हैं। आत्मविश्वास और धैर्य के बल पर कठिन कार्य में भी सफल होते हैं। अवसर का लाभ उठाने से नहीं चूकते हैं। नाटक, कविता और कलाओं में रुचि होती है। राजा और परिवार के लिए वफादार रहते हैं। सट्टेबाजी में रुचि होती है। सरकारी नौकरी, पुलिस और सेना में सफल रहते हैं। किसी एक क्षेत्र में महारत हासिल करते हैं। व्यक्तित्व आकर्षक होता है, विपरीत लिंग के व्यक्ति आकर्षित होते हैं। काम–वासना का आधिक्य रहता है, मांसाहारी भोजन पसंद करते हैं। दूरस्थ स्थान, पर्वत आदि में घूमने के शौकीन होते हैं, ढंडे स्थानों से बचाव करते हैं।

संभाव्य रोग : शोथ, लू लगना, मिर्गी, ज्वर, तानिका शोथ (मैंनिंगाइटिस), हृदय रोग आदि।

19 से 36 वर्ष की आयु का समय उत्तम होता है। 37 से 42 वर्ष कष्टप्रद होते हैं। 46 से 62 वर्ष के समय में स्वास्थ्य समस्याएं, परेशानियां, मुकदमे रहते हैं। 21, 28 और 35 वें वर्ष सौभाग्यशाली होते हैं। 66 वें वर्ष में दुर्घटना की संभावना होती है। 5,13,28 और 48वें वर्ष अशुभ होते हैं।

घने वनों के स्थान, पर्वत, टीले, किले, दिनबली, शीर्षोदय, निवास–गुफाएं, लम्बे गाल, चौड़ा चेहरा, क्रूर राशि, पुरुष राशि, दिनबली होती है।

कन्या राशि (♍)

भौतिक लक्षण : मध्यम कद, काले बाल और आंख, त्वरित चुस्त चाल, वास्तविक आयु से कम के प्रतीत होते हैं, विकसित छाती, सीधी नाक, पतली और तीखी आवाज, धनुषाकार धनी भौंहें, गर्दन या जांधों पर निशान।

अन्य गुण : बहुत बुद्धिमान, विश्लेषक, विलक्षण बुद्धि वाला अन्य की भावनाओं और त्रुटियों का निंदक। भाषाओं के ज्ञानी होते हैं और किसी प्रक्रिया को समझने में

वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उपयोग करते हैं। भावनाओं में बह जाते हैं। सोच समझ कर निर्णय लेते हैं। आत्मविश्वास की कमी, घबराये से रहते हैं। सुव्यवस्थित अपने विचार की बारीकियों को समझने में सक्षम होते हैं। स्वयं के स्वार्थ के प्रति जागरूक, मितव्ययी, कूटनीतिज्ञ, चतुर होते हैं। गृहसज्जा में निपुण, गणितज्ञ, परविद्या में रुचि होती है।

उदर रोगों से सावधान रहना चाहिए। पेचिश, टायफायड, पथरी आदि संभाव्य रोग है। विवाह में विलंब, वैवाहिक जीवन सुखी, संतान कम होती है। आय उत्तम, कार्य–व्यवसाय में सफलता, संपत्ति के मालिक होते हैं। नाममात्र की व्याधि होने पर भी डॉक्टर के पास चले जाते हैं। पृथ्वी तत्व की राशि होने के कारण बागवानी और खेती में रुचि लेते हैं। धन संचय में रुचि होती है।

20 से 25 वर्ष की आयु में सफल और साहसी होते हैं। 25 से 35 वर्ष की आयु में स्वयं का मकान होता है। 36 से 48 वर्ष कष्टप्रद होते हैं। 49 से 62 वर्ष सौभाग्यशाली होते हैं, अचानक लाभ होता है। 23 और 24वें वर्ष बहुत उत्तम रहते हैं जबकि 4, 16, 22, 36 और 55वें वर्ष कष्टप्रद होते हैं। जीवन के अंतिम चरण में टी. बी. हो सकती है।

स्त्री राशि, मनोरंजन के स्थान, चारागाह, शुभ राशि, मध्यम कद शीर्षोदय राशि, पौधों वाली भूमि, कन्धों तथा भुजाओं का झुकना, सच्चा दयालुता, काले बाल, अच्छी मानसिक योग्यता, विधि अनुसार कार्य करने वाली तर्कशील होती है।

तुला राशि (♎)

भौतिक लक्षण : लंबा–पतला, सुदृढ़–सुडौल शरीर, सुंदर चेहरा, लावण्यमयी त्वचा, मध्यायु में गंजापन हो जाता है, भौंहें सुंदरता में वृद्धि करती हैं। नाक थोड़ी मुड़ी हुई (तोते जैसी) होती है, दांतों के मध्य में खाली जगह होती है, मस्तक उठा हुआ होता है।

अन्य गुण : नम्र, दयालु, ईमानदार, न्याय करने में निपुण, निर्णय लेने से पूर्व हर पहलू का विश्लेषण करते हैं। दूसरों के धन के लालुप होते हैं मगर आश्रितों के सहायक रहते हैं। भावुक मगर लचीले स्वभाव के होते हैं। क्रोध शीघ्र शांत हो जाता है। स्वयं की बजाय अन्यों का अधिक ध्यान रखते हैं। वाद–विवाद में पटु होते हैं। सदा न्याय, शांति, प्रेम का समर्थन करते हैं। तुला वायु तत्व की राशि होने के कारण सदा सुंदरता और प्रकृति के प्रेमी होते हैं। पर्यटन के शौकीन होते हैं, इस कारण आवास में भी परिवर्तन कर लेते हैं। उच्चकोटि का जीवन यापन करते हैं। वेशभूषा, फर्नीचर, वाहन और अन्य सुविधाओं का ध्यान रखते हैं। व्यापार में कुशल होते हैं। अधिकांशतः लोकप्रिय होते हैं, व्यापार में अच्छे साझेदार साबित होते हैं। उत्तम सेल्समैन, लाएसां अधिकारी और रिसेप्शनिस्ट बनते हैं। कलाप्रेमी होते हैं और महिलाओं के मध्य विचरना पसंद करते हैं। सौभाग्यशाली महिलाएं इन्हें पसंद करती हैं।

संभाव्य रोग : गुर्दों के रोग, मेरुदंड में दर्द, संक्रामक रोग। महिलाओं में गर्भाशय के रोग होते हैं। 18 से 27 वर्ष की आयु में बहुत प्रगति करते हैं, 28 से 42 वर्ष के मध्य उत्तम धनार्जन होता है। 8, 15, 35, 62 और 64 अशुभ वर्ष हैं।

व्यापारी, दुकान, अनाज का स्थान, व्यापारी का घर, वर्ण काला, मध्यम कद, शीर्षोदय, व्यापारिक स्थान, जवानी में पतला शरीर परन्तु मोटापे की ओर झुकाव, गोल चेहरा, पुरुष राशि की होती है।

वृश्चिक राशि (♏)

भौतिक लक्षण : मध्यम कद, सुडौल शरीर और अंग, चौड़ा चेहरा, घुंघराले बाल, श्याम वर्ण, उन्नत ठोड़ी।

अन्य गुण : स्पष्टवादी, निडर, रूखा व्यवहार। उत्तम मस्तिष्क, बुद्धिमान, इच्छाशक्ति से युक्त। शब्दों का उत्तम चुनाव करते हैं। अन्य लोगों के मामलों में दखल नहीं देते हैं। अक्सर तानाशाह होते हैं, कभी थकान नहीं होती। जब तक आश्वस्त न हो जाएं कि उनका विषय का ज्ञान सर्वोच्च कोटि का है, मुह नहीं खोलते। वार्तालाप और लेखन में दक्ष होते हैं, अपने बुद्धिबल के सहारे रहते हैं। उच्चकोटि की प्रशासनिक क्षमता और आत्मविश्वास से युक्त होते हैं। गुप्त रूप से अपराध करने में सक्षम होते हैं। परिश्रम और साहस के बल पर धनार्जन करते हैं। स्वयं के बल पर सफल होते हैं। सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय होते हैं। समाज में सलाहकार/नेता बनते हैं। सेना और पुलिस में सफलतापूर्वक कार्य करते हैं, इनके बहुत से शत्रु होते हैं। मौलिक अनुसंधान में चतुर होते हैं। अकेले रहकर बेहतर कार्य करते हैं। मैदान के खेलों के शौकीन होते हैं। संगीत, कला, नृत्य आदि में प्रवीण होते हैं। पराविद्या में रूचि होती है। काम–वासना अधिक होती है, साथी को पशु की तरह प्रयोग करते हैं।

संभाव्य रोग : गुप्त रोग, प्रोस्टेंट ग्रंथि, पित्ताशय आदि के रोग आयु के 29 से 45 वर्ष सौभाग्यशाली होते हैं। 62 से 71 वर्ष की आयु में गंभीर व्याधि होती है या ऑपरेशन होता है।

अशुभ वर्ष : 11, 28, 38, 52, 62

छेद या बिल वाला स्थान, विष, शीर्षोदय राशि, चौड़ी, फैली हुई आंखें तथा छाती। बाल्यावस्था में बीमार, क्रूर कामों में रुचि, साहसी, सहनशक्ति, प्रबन्धक, स्त्री राशि होती है।

धनु राशि (♐)

भौतिक लक्षण : सुंदर, सुविकसित आकृति, बादामी आंखें, भूरे बाल, धनी और ऊंची भौंहें, लंबा चेहरा, लंबी नाक, सुंदर आकृति, चाल सीधी नहीं होती है। मोटे होंठ, नाक, कान और दांत।

अन्य गुण : स्वतंत्र, दयालु, ईमानदार, भरोसेमंद, ईश्वर भक्त। चौकन्ने, अतीन्द्रिय ज्ञानयुक्त, बात की तह तक शीघ्र पहुंच जाते हैं। आंखें कमजोर हो सकती हैं, कुबड़ापन संभव है। न्यायप्रिय, स्पष्टवादी, परंपरावादी, व्यावसायिक दृष्टिकोण। कभी–कभी बेचैन और चिंतित हो जाते हैं। दोहरी मानसिकता, हरफनमौला, प्रत्येक विषय सीखने को इच्छुक, प्रसन्नचित्त रहते हैं। कानून का पालन करने वाले, अदालतों से दूर रहते हैं। सादे जीवन से प्रसन्न, समय के अनुसार अपने को ढाल लेते हैं। कला और काव्य के प्रेमी, सर्जनात्मक प्रतिमा के धनी। कानून का पालन करते हैं, अदालत के पचड़ों से दूर रहते हैं। पराविद्या और दर्शनशास्त्र में रुचि होती है।

खानपान और सेक्स में संयम बरतते हैं। कार्य में सफाई, सुव्यवस्था, क्रमबद्धता, अनुशासन और परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त करते हैं। आत्मविश्वास उत्तम होता है। हाथ के कार्य को अधूरा नहीं छोड़ते हैं।

सरकार से सहयोग मिलता है, विरासत में जायदाद प्राप्त करते हैं।

संभाव्य रोग : साइटिका, गठिया का दर्द, कूल्हे की हड्डी टूटना, गाउट, फेफड़ों की व्याधि आदि। अध्यापक, वक्ता, धर्मगुरु, न्यायाधीश, वकील आदि कार्यों में सफल होते हैं। 18 से 37 वर्ष की आयु के मध्य आर्थिक स्थिति उत्तम होती है। 38 से 47 वर्ष में घरेलू कष्ट रहता है। 61 से 69 वर्ष के दौरान संपन्नता रहती है।

अशुभ वर्ष : 2, 10, 18, 31, 38 एवं 42

वह स्थान जहां घोड़े, हाथी या रथ (मोटर कार) रखे जाते हैं। राजा का निवास, पाप राशि, पुरुष राशि, दिनबली, पृष्ठोदय, लम्बोतरा चेहरा और गर्दन, कान तथा नाक बड़े, अत्यधिक उदार, अच्छे दिल वाला, भौतिक संस्कृति को पसंद करने वाला, यात्रा–पसंद, ऊँची आवाज आदि लक्षण के होते हैं।

मकर राशि (♑)

भौतिक लक्षण : दुबला–पतला शरीर, उम्र के साथ स्वास्थ्य सुधरता है, बड़े दांत, बड़ा मुख, नाक विशिष्ट रहती है, बाल काले और मोटे होते हैं, चेहरा पतला और अंडाकार, कुबड़ी मकर, घुटनों पर मस्सा या निशान, मगरमच्छ के समान जबड़े, लघु मस्तक, दाढ़ी में बाल कम रहते हैं।

अन्य गुणधर्म : मितव्ययी, विचारशील, उत्तम विवेकशक्ति, सत्ताप्रेमी, आत्मनिर्भर, बुद्धिजीवी।

किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिलने तक निराश ही रहते हैं। सांसारिक कार्यों में तथ्यों और आंकड़ों का प्रयोग करते हैं। ईमानदार और निष्कपट होते हैं। शक्ति के आगे अडिग रहते हैं परंतु सज्जनता और मित्रता के सामने नतमस्तक हो जाते हैं। संगठन क्षमता उत्तम होती है। कठिनाई में भी किसी से सहायता के लिए नहीं कहते हैं। वाकशक्ति में बाधाएं रहती हैं। उच्च और सामाजिक पदों के लिए उपयुक्त होते हैं। तकनीकी और वित्तीय कार्यों में सफल होते हैं। नवागंतुकों के साथ मित्रता में शिथिल रहते हैं पर पुराने मित्रों से अच्छे संबंध होते हैं।

प्रेम प्रसंग में रुचि कम होती है पर परिवार और प्रियजनों की उत्तम देखभाल करते हैं। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से बातचीत में शिथिल और अति सावधान रहते हैं। स्वयं से वरिष्ट आयु के विपरीत लिंग व्यक्तियों से संबंध स्थापित करते हैं।

संभाव्य रोग : घुटनों में चोट, त्वचा रोग, खरौंच, हड्डी टूटना, गठिया, पित्ती आदि। बाल्यावस्था में अग्नि, हथियार या लोहे से चोट की आशंका रहती है।

33 से 49 वर्ष की आयु में जीवन आनंदप्रद रहता है। 50–51 वर्ष में स्वास्थ्य कष्ट होता है।

अशुभ वर्ष : 5, 13, 27, 36, 57, 62 और 67

जलीय स्थान, बहुत मात्रा में पानी वाले स्थान, नदी के किनारे, पृष्ठोदय राशि, स्त्री राशि निचले अंगों में कमजोरी, बलवान होते हैं।

कुंभ राशि (♒)

भौतिक लक्षण : मध्यम कद, हष्ट–पुष्ट, चेहरा सुंदर और गोल, गाल भरे हुए, कनपटियां और जांघें विकसित होती हैं। गोरा रंग, भूरे बाल, असुंदर दांत, पिंडलियों में मस्सा, शरीर पर घने बाल हाथ और पैर मोटे, नसें विकसित होती हैं।

अन्य गुण धर्म : मानवीय दृष्टिकोण और प्रगतिशील जीवन और उसकी समस्याओं के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण रखते हैं। संकोची होते हैं, निर्णय लेने से पूर्व पूर्ण नापतोल करते हैं या अन्य लोगों द्वारा कार्यारंभ करने तक प्रतीक्षा करते हैं। सदा सतर्कता, धैर्य, एकाग्रता, अध्ययनशीलता से युक्त रहते हैं। वार्तालाप रुचिकर होता है। स्पष्टवादी, सबके प्रिय होते हैं। दयालु, अध्ययन प्रेमी और सज्जन होते हैं। प्रकृतिप्रेमी होते हैं। मित्रता निभाते हैं, रुचि–अरुचि तीव्र होती है। एकांतप्रिय होते हैं। अतीन्द्रिय शक्ति से युक्त होते हैं, ध्यान–साधना में रुचि होती है। स्मरणशक्ति तीव्र, दृष्टिकोण वैज्ञानिक होता है।

गरीबों के सेवक होते हैं। नवीन तकनीक और मशीनरी, अनुसंधान, निवेश आदि द्वारा धनार्जन करते हैं। तकनीकी शिक्षा में रुचि होती है। परिवार से लगाव होता है। जीवनसाथी के चुनाव में आयु को अनदेखी कर बुद्धि और शिक्षा में समानता पर जोर देते हैं। गृह सुसज्जित होता है जिसमें आधुनिक ढंग से पुरातत्विक सामग्री एकत्रित रहती है। अपने प्रेम को अभिव्यक्त नहीं करते। अगर इनका प्रेमी वासनप्रिय हो तो वह असंतुष्ट होता है क्योंकि कुंभ राशि के व्यक्ति शीतल होते हैं।

संभाव्य रोग : संक्रामक रोग, दंत व्याधि, टॉन्सिल आदि 22 से 40 वर्ष की आयु में संपन्नता रहती है। 41 से 43 वर्ष में हथियार, लोहे या काष्ठ से चोट की आशंका रहती है। 44 से 67 वर्ष भाग्यशाली होते हैं। 68 वर्ष से बाद का समय अशुभ होता है।

अशुभ वर्ष : 33, 48, 64

वे स्थान जहां पानी सूख जाता है, जहां शराब बनती है, जहां पक्षी रहते हैं और जहां घड़े रखे जाते हैं। पाप राशि, दिनबली, शीर्षोदय, देखने में सुंदर, प्रतिभावान, क्षमाशील स्वभाव का होता है। पुरुष राशि है।

मीन राशि (♓)

भौतिक लक्षण : नाटा और मोटा शरीर, हाथ–पांव काफी छोटे होते हैं। केश मुलायम, गोरा रंग, चेहरा कांतियुक्त होता है। सुंदर और आकर्षक, आखें बड़ी–बड़ी, मजबूत गोलाकार कंधे, थोडी में गड्ढा होता है।

अन्य गुण धर्म : आकृति अप्रभावशाली होती है, बेचैन रहते हैं, कल्पनाशील और रोमांटिक होते हैं। ईमानदार और मानवीय, कभी शांत तो कभी क्रोधी, अन्यों की राय से प्रभावित रहते हैं, आत्म विश्वास में कमी होती है। अत्यधिक सहानुभूतिपूर्ण, क्षमाशील, दयालु और भरोसेमंद होते हैं। स्वयं की योग्यता को पहचानते हैं जिसकी वजह से प्रगति में बाधा रहती है। परंपरावादी, अत्यधिक अंधविश्वासी, अकेले रहने वाले, ईश्वरभक्त, पक्के धार्मिक कर्मकांडी होते हैं। जंतुओं के कष्ट को भी नहीं देख सकते हैं और सहायता प्रदान करते हैं। महत्वाकांक्षाओं की कमी रहती

है, भौतिक जगत में प्रगति धीमी रहती है। दो व्यवसाय साथ–साथ हो सकते हैं, नये कार्य में भी शीघ्र दक्ष हो जाते हैं। अच्छे कर्मचारी साबित होते हैं। द्रव पदार्थों के व्यापार में सफल होते हैं आयात–निर्यात में लाभ होता है। उदर रोग, घुटनों और पैरों की चोट संभाव्य होती हैं।

घरेलू एवं व्यावसायिक जीवन आनंदमय होता है। जीवनसाथी की सुंदरता, ज्ञान और ललित कलाओं को प्राथमिकता देते हैं। प्रायः दो विवाह हो सकते हैं, जीवनसाथी का प्रभाव प्रबल रहता है।

27 से 43 वर्ष की आयु में संपन्नता रहती है। 44 से 60 वर्ष कष्टप्रद रहते हैं। 61 से 69 वर्ष भागयशाली रहते हैं।

अशुभ वर्ष : 8, 13, 36 और 48

धार्मिक, पवित्र स्थान, पवित्र नदियों का स्थान, मंदिर, तीर्थ स्थान, समुद्र आदि कद छोटा, उभयोदय, सुगठित शरीर, पत्नी को, चाहने वाला, शिक्षित विद्वान्, कम बोलने वाला होता है। स्त्री राशि है।

राशियों का वर्गीकरण

पुरुष या विषम राशियां	: मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुंभ
स्त्री या सम राशियां	: वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन
चर राशियां	: मेष, कर्क, तुला, मकर
स्थिर राशियां	: वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ
द्विस्वभाव राशियां	: मिथुन, कन्या, धनु, मीन
अग्नितत्व की राशियां	: मेष, सिंह, धनु
पृथ्वी तत्व की राशियां	: वृष, कन्या, मकर
वायु तत्व की राशियां	: मिथुन, तुला, कुंभ
जल तत्व की राशियां	: कर्क, वृश्चिक, मीन
दीर्घ तत्व की राशियां	: कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु
ह्रस्व तत्व की राशियां	: मेष, वृष, मिथुन, मकर, कुंभ, मीन

राशियों का स्वभाव

राशियों का स्वभाव तीन प्रकार का होता हैं – चर, स्थिर एवं द्विस्वभाव।

चर राशि : मेष, कर्क, तुला, मकर

स्थिर राशि : वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ

द्विस्वभाव राशि : मिथुन, कन्या, धनु, मीन

राशियों के तत्त्व

राशियां चार प्रकार के तत्त्वों की होती हैं –अग्नि, पृथ्वी, वायु एवं जल।

अग्नि तत्त्व : मेष, सिंह एवं धनु
पृथ्वी तत्त्व : वृष, कन्या एवं मकर
वायु तत्त्व : मिथुन, तुला एवं कुम्भ
जल तत्त्व : कर्क, वृश्चिक एवं मीन

राशियों के लिंग

राशियों के लिंग दो प्रकार के होते हैं – पुरुष लिंग, स्त्री लिंग

पुरुष लिंग : मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु एवं कुम्भ
स्त्री लिंग : वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर एवं मीन

राशियों की प्रकृति

राशियों की प्रकृति चार प्रकार की होती है – पित्त, वायु, मिश्रित एवं कफ।

पित्त प्रकृति : मेष, सिंह एवं धनु
वायु प्रकृति : वृष, कन्या एवं मकर
मिश्रित प्रकृति : मिथुन, तुला एवं कुम्भ
कफ प्रकृति : कर्क, वृश्चिक एवं मीन

राशियों के वर्ण (जातियां)

राशियों की जातियां चार प्रकार की होती है – क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एवं ब्राह्मण।

क्षत्रिय वर्ण : मेष, सिंह, धनु
वैश्य वर्ण : वृष, कन्या, मकर
शूद्र वर्ण : मिथुन, तुला, कुम्भ
ब्राह्मण वर्ण : कर्क, वृश्चिक, मीन

राशियों की दिशाएं

राशियों की दिशाएं चार प्रकार की होती है – पूर्व, दक्षिण, पश्चिम एवं उत्तर।

पूर्व दिशा : मेष, सिंह, धनु
दक्षिण दिशा : वृष, कन्या, मकर
पश्चिम दिशा : मिथुन, तुला, कुम्भ
उत्तर दिशा : कर्क, वृश्चिक, मीन

राशियों के बल

राशियों के बल दो प्रकार के होते हैं – दिन बली और रात्रि बली

दिन बली : सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ, मीन

रात्रि बली : मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु, मकर

राशियों के पाद

राशियों के पाद तीन प्रकार के होते हैं – द्विपाद, चतुष्पाद तथा बहुपाद।

द्विपाद : मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ तथा धनु का पूर्वोत्तर भाग

चतुष्पाद : मेष, वृष, सिंह, धनु, का उत्तरोत्तर भाग एवं मकर का पूर्वोत्तर भाग।

बहुपाद : कर्क, मीन, मकर का उत्तरोत्तर भाग, वृश्चिक।

कालपुरुष के अंग

क्र.	राशियां	शरीर के अंग
1.	मेष	सिर
2.	वृष	आँखें, चेहरा, गर्दन, मुंह के अन्दर का भाग
3.	मिथुन	भुजाएं, छाती के ऊपर का भाग, कान, कंधे
4.	कर्क	हृदय, फेफड़े स्तन, पेट का ऊपरी भाग
5.	सिंह	छाती के नीचे का भाग, नाभि से ऊपर का भाग
6.	कन्या	कमर, कूल्हे, नाभि के नीचे का भाग, आँतें, मूत्राशय के ऊपर का भाग
7.	तुला	मूत्राशय, नाभि के पीछे का भाग
8.	वृश्चिक	गुदा द्वार, लिंग
9.	धनु	जांघें
10.	मकर	दोनों घुटने तथा पीठ
11.	कुम्भ	कान, घुटनों से नीचे का भाग, पिंडलियाँ
12.	मीन	आँखें, पैर

❑

पाठ–5

ज्योतिष सम्बन्धित खगोल शास्त्र

खगोलशास्त्र वह विज्ञान है जिसमें ब्रह्माण्ड में स्थित विभिन्न ग्रहों तथा अन्य पिण्डों का विस्तार से अध्ययन किया जाता है। हम इस अध्याय में केवल ज्योतिष से सम्बन्धित विषयों का ही अध्ययन करेंगे।

सबसे आरम्भ में भारतीय तथा पाश्चात्य मत में भिन्नता का अध्ययन संक्षिप्त में करेंगे।

1. पाश्चात्य मत से ब्रह्माण्ड का निर्माण 200 करोड़ वर्ष पूर्व एक महा विस्फोट (Big-bang) से हुआ। भारतीय मत से ग्रहों एवं अन्य महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं की सृष्टि के आरम्भ होने से अन्त तक, कुल परिभ्रमण की संख्याओं का अनुमान किया गया।
2. पाश्चात्य मत में खगोलीय गणनाएँ सूर्य को केन्द्र मान कर की जाती हैं। भारतीय मत में खगोलीय गणनाएँ पृथ्वी को केन्द्र मान कर की जाती है।
3. पाश्चात्य मत में खगोलीय गणनाएँ चलायमान बिन्दु से की जाती हैं। बसंत संपात के समय सूर्य नक्षत्र मंडल जहां होता है उसे मेष राशि का प्रथम बिन्दु मान लेते हैं जो प्रत्येक वर्ष 50''–52'' खिसक जाता है। इसलिए उसे चलायमान बिन्दु कहते हैं। भारतीय मत में खगोलीय गणनाएँ एक स्थिर बिन्दु से करते हैं जो मेष राशि (अश्विनी नक्षत्र) का प्रारम्भिक बिन्दु है।
   स्थिर एवं चलायमान मेष राशि के बिन्दु के बीच की कोणीय दूरी को अयनांश कहते हैं जो 1.1.2001 को 23°–52′ है।
4. पाश्चात्य मत में दिन की गणना पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमने के अनुसार की जाती है जब कि भारतीय पद्धति में दिन की गणना सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक की जाती है। मास की गणना चन्द्रमा के पृथ्वी के चारों ओर परिभ्रमण पर आधारित है तथा चन्द्रमा की कलाओं के अनुसार होती है। एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या तक के समय को एक चन्द्र मास कहते हैं। तीस दिन को सावन मास कहते हैं तथा सूर्य के अश्विनी के प्रथम बिन्दु से पुनः उस बिन्दु पर दुबारा आने तक को सौर वर्ष कहते हैं। भारतीय पद्धति में स्थानीय समय को मान्यता दी जाती है जब कि पाश्चात्य पद्धति में मानक समय का व्यवहार किया जाता है।
5. भारतीय पद्धति में खगोलशास्त्र एवं ज्योतिषशास्त्र एक–दूसरे के अभिन्न अंग हैं। दोनों का विकास साथ–साथ हुआ। पाश्चात्य पद्धति में खगोलशास्त्र का विकास एक भौतिक विज्ञान की भाँति हुआ।
6. भारतीय पद्धति में ब्रह्माण्ड में स्थित ग्रहों तथा पिण्डों के अलावा उनकी गति, पात (nodes), भदोच्च बिन्दु, युति बिन्दु, भाद्री आदि उपग्रहों का भी विस्तार से अध्ययन हुआ है जब कि पाश्चात्य पद्धति में ऐसा कुछ भी नहीं है।

परिभाषाएं

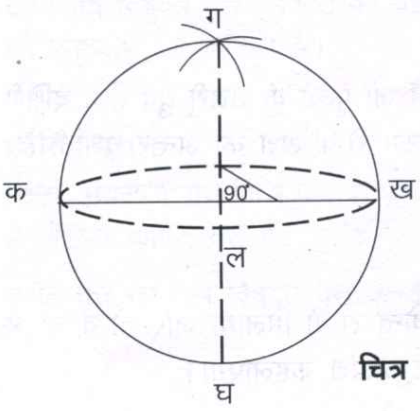

चित्र 1

भूगोल (Geography)

भू का तात्पर्य भूमि से है अर्थात् भूमि की गोलाकार आकृति को भूगोल कहते हैं। यही हमारी पृथ्वी है। जिस पर हर प्रकार का जीवन है।

भू–मध्य रेखा पृथ्वी पर वह वृत्ताकार रेखा है जो पृथ्वी को समान दो भागों में बांटती है। (उत्तरी गोलार्द्ध और दक्षिण गोलार्द्ध)

विषुवत् रेखा या भू–मध्य रेखा (Epliptic)

चित्र 1 में गोल को पृथ्वी मान लें तो ग एवं घ पृथ्वी के दो ध्रुव हैं। बृहत् वृत्त क ल ख काल्पनिक भौगोलिक विषुवत् रेखा या भू–मध्य रेखा है। भू–मध्य रेखा वह बृहत् वृत्त है जो पृथ्वी के चारों ओर इसके अक्ष (धुरी जिसके चारों ओर पृथ्वी घूमती है) पर लम्बवत् है। पृथ्वी का अक्ष वस्तुतः उत्तरी ध्रुव ग तथा दक्षिणी ध्रुव घ को मिलाने वाली रेखा ही है। भू–मध्य रेखा इस पर समकोण बनाती है।

मध्याह्न रेखा (Meridian)

पृथ्वी पर भौगोलिक ध्रुवों ग एवं घ को मिलाने वाली रेखा को भौगोलिक मध्याह्न रेखा कहते हैं। यह मध्याह्न रेखा भू–मध्य रेखा को 90^0 के कोण पर काटती है।

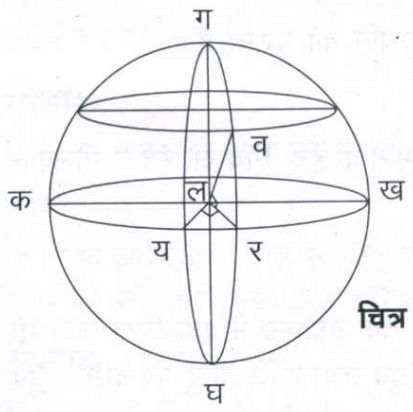

चित्र 2

मानक मध्याह्न रेखा (Principal Meridian)

पृथ्वी के ध्रुवों को मिलाने वाली काल्पनिक रेखा को जो ग्रीनविच से होकर गुजरती है, सर्वसम्मति से मानक मध्याह्न रेखा (Principal Meridian) माना गया है।

देशान्तर (Longitude)

मान लिया जाय कि चित्र 2 में ग, य, घ मुख्य मध्याह्न रेखा है जो भू–मध्य रेखा को य बिन्दु पर काटती है तथा एक अन्य मध्याह्न रेखा भू–मध्य रेखा को बिन्दु र पर काटती है। इन दो मध्याह्न रेखाओं के भू–मध्य रेखा पर काटने वाले बिन्दुओं य, र द्वारा पृथ्वी के केन्द्र ल पर जो कोण य, ल, र बनेगा

वह मध्याह्न रेखा ग, र, घ का देशांतर कहा जाएगा। अर्थात् ग्रीन बीच से पूर्व और पश्चिम की ओर एक स्थान से दूसरे स्थान तक का अंशान्तत देशान्तर कहलाता है। पूर्व में हो तो उसे पूर्वी देशान्तर और यदि पश्चिम में स्थित हो तो उसे पश्चिमी देशान्तर कहेंगे।

देशान्तर रेखाएँ वास्तव में पृथ्वी की सतह पर वे काल्पनिक वृत्त हैं जो पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव में से होकर गुजरते हैं। एक देशान्तर रेखा दूसरे देशान्तर रेखा से 1^0 अंश का अन्तर दर्शाती है। इन्हें (Longitude) भी कहते हैं।

अक्षांश (Latitude)

चित्र 2 में मध्याह्न रेखा ग, र, घ पर व एक बिन्दु है यदि व को केन्द्र ल से मिलाया जाए तो व, ल, र एक कोण होगा। इस कोण को अक्षांश कहते हैं तथा यह व का अक्षांश कहलाएगा।

भू–मध्य रेखा पर अक्षांश 0^0 होगा। उत्तरी गोलार्ध (भू–मध्य रेखा से उत्तरी ध्रुव का भाग) में जो स्थान होगा उसको उत्तरी अक्षांश एवं जो स्थान दक्षिणी गोलार्ध में होगा उसे दक्षिणी अक्षांश कहा जाएगा। एक ही मध्याह्न रेखा पर विभिन्न स्थानों का देशान्तर एक ही होगा परन्तु अक्षांश भिन्न होंगे। इसी प्रकार एक ही अक्षांश पर स्थित देशान्तर भिन्न–भिन्न होंगे।

अक्षांश रेखाएँ वास्तव में पृथ्वी की सतह पर वे काल्पनिक वृत्त हैं जो भू–मध्य रेखा (बृहत वृत्त) के समान्तर होते हैं। 90^0 उत्तरी अक्षांश उत्तरी ध्रुव तथा 90^0 दक्षिणी अक्षांश दक्षिणी ध्रुव हैं। इन्हें (Latitude) भी कहते हैं। अर्थात् भू–मध्य रेखा से उत्तर या दक्षिण की ओर एक स्थान से दूसरे स्थान तक का अंशान्तर अक्षांश कहलाता है।

देशान्तर रेखाएँ वास्तव में पृथ्वी की सतह पर वे काल्पनिक वृत्त हैं जो पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव में से होकर गुजरते हैं। एक देशान्तर रेखा दूसरे देशान्तर रेखा से 4 मिनट का अन्तर दर्शाती है। इन्हें (Latitude) भी कहते हैं।

अक्षांश तथा देशान्तर पृथ्वी पर स्थित किसी भी स्थान की सही स्थिति को दर्शाते हैं।

गोल (Celestial Sphere)

यदि भूगोल का ब्रह्माण्ड में अनंत तक काल्पनिक विस्तार कर दे तो भूमि के ईद–गिर्द जो खाली गोलकार आसमान नजर आता है उसे गोल कहते हैं।

खगोलीय ध्रुव (Celestial Poles)

पृथ्वी के अक्ष को (उत्तरी ध्रुव को तथा दक्षिणी ध्रुव को) यदि अनंत तक ब्रह्माण्ड में बढ़ा दिया जाय तो ब्रह्माण्ड के जिस भाग पर उत्तरी ध्रुव मिलेगा उसे खगोलीय उत्तरी ध्रुव तथा जिस बिन्दु पर दक्षिणी ध्रुव मिलेगा उसे खगोलीय दक्षिणी ध्रुव कहेंगे।

खगोलीय विषुवत् वृत्त (Celestial equator)

खगोलीय विषुवत् वृत्त ब्रह्माण्ड का वह वृहत् वृत्त है जिसका तल खगोलीय ध्रुवों को मिलाने वाली रेखा को समकोण पर काटता है। अर्थात् भू–मध्य रेखा का ब्रह्माण्ड में अनंत तक विस्तार ही विषुवत वृत कहलाता है।

क्रांति वृत्त

नक्षत्र मंडल में सूर्य जिस पथ पर भ्रमण करता हुआ दिखाई पड़ता है उसे क्रांतिपथ या क्रान्ति वृत्त कहते है। ग, घ क्रान्ति वृत्त है।

क्रांति वृत्त का तल विषुवत् वृत्त के तल के साथ $23^0–28'$ का कोण बनाता है।

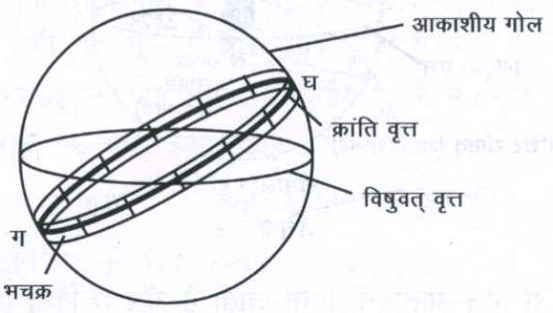

चित्र 3

भचक्र (Zodiac)

भचक्र आकाश में वह काल्पनिक पट्टी है जो क्रांति वृत्त के 9^0 उत्तर 9^0 दक्षिण तक फैली हुई है। जिसमें सभी ग्रह नक्षत्र विचरण करते हुए दिखाई देते हैं।

खगोलीय अक्षांश

इसे विक्षेप या शर भी कहते हैं। ब्रह्माण्ड में स्थित किसी भी पिण्ड या ग्रह की स्थिति जानने के लिये ग्रह से क्रांति वृत्त पर लम्बवत् चाप खींचा जाता है। उस चाप की कोणीय दूरी को खगोलीय अक्षांश कहते हैं।

भोगांश

किसी भी आकाशीय पिण्ड का भोगांश, उसके क्रांति वृत्त पर मेष से प्रथम बिन्दु से कोणीय दूरी होती है।

क्रांति

किसी भी आकाशीय पिण्ड से विषुवत् वृत्त पर जो लम्बवत् चाप डाला जाएगा और उसके द्वारा पृथ्वी के केन्द्र पर जो कोण बनेगा उस कोण को पिंड की क्रांति कहते हैं।

अयनांश (Ayanamsa)

बंसत सम्पात बिन्दु और निरायन मेष प्रथम बिन्दु के बीच कोणीय अन्तर को अयनांश कहते हैं।

सूर्य की क्रांति में परिवर्तन

वसंत संपात (लगभग 21 मार्च) को सूर्य की क्रान्ति शून्य होती है क्योंकि उस दिन सूर्य विषुवत् वृत्त पर आ जाता है। चित्र 5 में ल बिन्दु बसंत संपात को दर्शाता है। यह बिन्दु सायन पद्धति में मेष का प्रथम बिन्दु (शून्य भोगांश बिन्दु) कहलाता है।

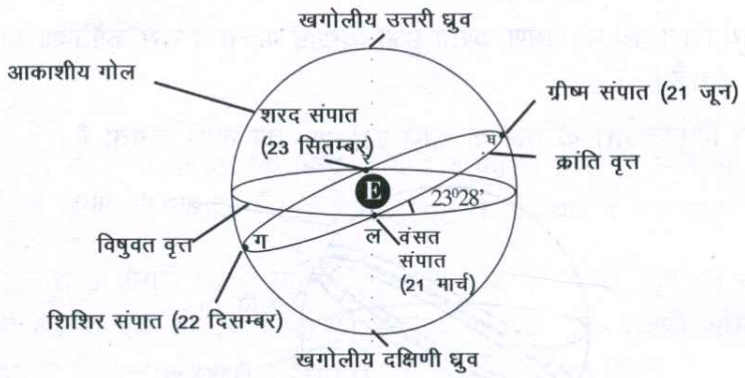

चित्र 4

सूर्य की क्रांति ल बिन्दु से दिन–प्रतिदिन बढ़ती जाती है और घ बिन्दु (21 जून के लगभग) अधिकतम होती है। यहां सूर्य की क्रांति 23^0–28′ होती है। इस बिन्दु को ग्रीष्म संपात कहते हैं। इसके बाद सूर्य की क्रांति घटने लगती है और र बिन्दु (23 सितम्बर के लगभग) शून्य हो जाती है क्योंकि सूर्य पुनः विषुवत् वृत्त पर होता है। इस बिन्दु को शरद सम्पात कहते हैं। यहां से सूर्य की क्रांति दक्षिण दिशा में पुनः बढ़ने लगती है और बिन्दु ग पर (22 दिसम्बर के लगभग) अधिकतम हो जाती है। इस बिन्दु को शिशिर सम्पात कहते हैं। यहां से सूर्य उत्तरायण हो जाता है और उसकी क्रांति पुनः घटने लगती है और 21 मार्च को बिन्दु ल पर शून्य हो जाती है। इस प्रकार सूर्य का एक वर्ष हो जाता है।

ग, ल, घ वृत्त सूर्य का घूमना उत्तरायण तथा घ, र, ग वृत्त पर घूमना दक्षिणायन कहलाता है। इसी वृत्त पर भ्रमण के कारण ही ग्रीष्म ऋतु 21 मार्च से आरम्भ और शरद् ऋतु 23 सितम्बर से आरम्भ होती है।

ऋतु परिवर्तन सूर्य के भ्रमण के कारण होता है। वास्तव में सूर्य स्थिर है और पृथ्वी भ्रमण कर रही है। परन्तु हम पृथ्वी पर खड़े हो कर जब सूर्य को देखते हैं तो सूर्य भ्रमण करता हुआ प्रतीत होता है।

सौर मंडल (Solar System)

तारे (Stars)

तारे स्वतः चमकने वाले आकाशीय पिण्ड हैं। सूर्य एक तारा है। तारे स्थिर हैं। और प्रत्येक तारे के ईर्द–गिर्द ग्रह चक्र लगाते हैं।

ग्रह (Planet)

वह आकाशीय पिण्ड हैं जो सूर्य के चारों ओर भ्रमण करते हैं जो सूर्य के प्रकाश से चमकते हैं। स्थिर तारे टिमटिमाते रहते हैं जबकि ग्रहों की चमक एक समान रहती हैं।

चन्द्रमा (Moon)

एक आकाशीय पिण्ड है जो पृथ्वी के चारों ओर घूमता है। इसलिए इसे उपग्रह भी कहते हैं। पृथ्वी के अलावा और ग्रहों के भी उपग्रह होते हैं।

सौर–मंडल (Solar System)

यह सूर्य, ग्रहों, उपग्रहों, घूमकेतु, उल्का, लघुग्रहों तथा ग्रहों के धूल कर्ण एवं गैसीय कणों से बना है। हमारा सौर–मंडल ब्रह्माण्ड का एक छोटा भाग है। इस सौर–मण्डल में हम रहते हैं। हमारा सौर–मंडल सूर्य के इर्द–गिर्द केन्द्रित है। सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हैं।

हमारे सौर–मंगडल में अभी तक नौ ग्रहों का पता लगा है। भारतीय पद्धति में केवल पांच ग्रहों को ही माना है। सूर्य से दूरी के क्रम से ज्ञात ग्रहों के नाम इस प्रकार हैं।

1. बुध 2. शुक्र 3. पृथ्वी 4. मंगल 5. बृहस्पति
6. शनि 7. यूरेनस 8. नेप्चून 9. प्लूटो

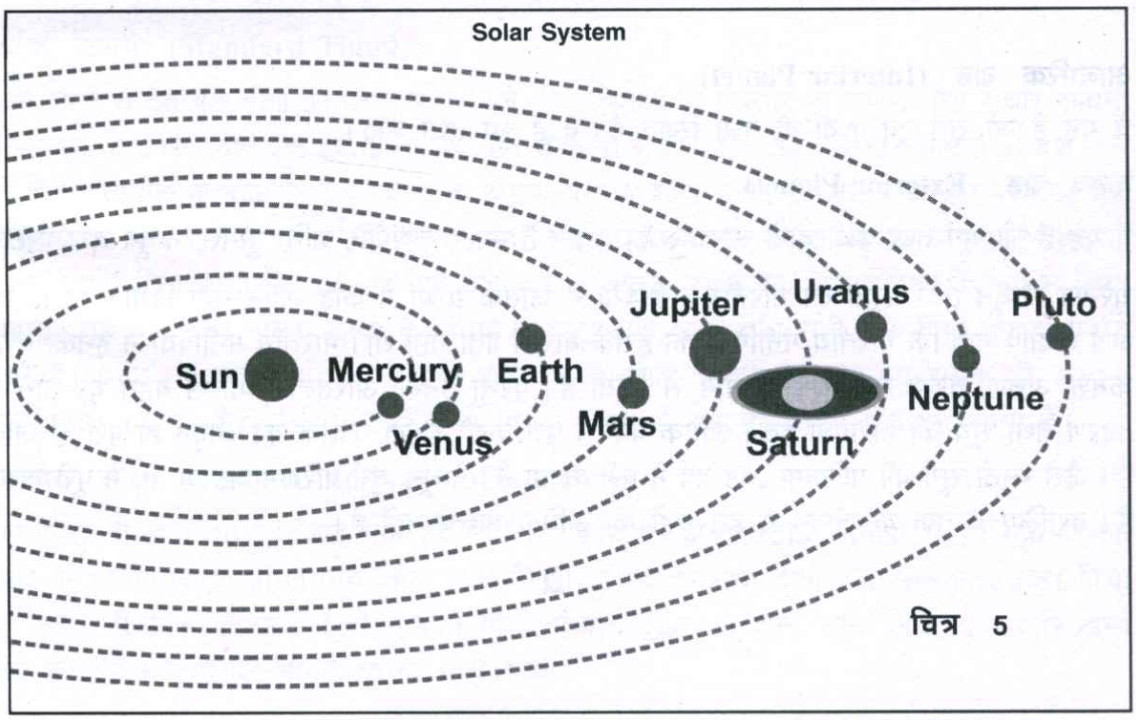

चित्र 5

सूर्य एक तारा है तथा चन्द्रमा उपग्रह। भारतीय ज्योतिष पद्धति में बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति तथा शनि ग्रहों को हो मान्यता दी है। वास्तव में (Planet) प्लानेट का हिन्दी रूपान्तर ग्रह उचित नहीं क्योंकि भारतीय पद्धति उसको ग्रह मानती है जिसका प्रभाव हम ग्रहण करते हैं या जिसका अस्तित्व हमें प्रभावित करता है। इसलिये भारतीय पद्धति ने सूर्य चन्द्रमा, राहु तथा केतु को भी ग्रह माना है। जबकि राहु तथा केतु का कोई भौतिक अस्तित्व नहीं। यह हम जानते हैं कि पृथ्वी सूर्य का तथा चन्द्रमा पृथ्वी का वृत्तकार परिभ्रमण करते है।

जहां यह दोनों वृत्त एक–दूसरे को काटते हैं उन बिन्दुओं को राहु तथा केतु कहते हैं। चित्र में क, ख राहु तथा केतु हैं।

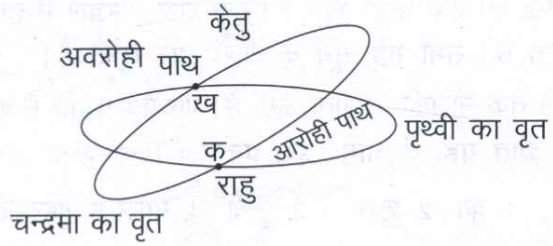

चित्र 6

आन्तरिक ग्रह (Interior Planet)

वे ग्रह हैं जो सूर्य एवं पृथ्वी के मध्य स्थित है। वे हैं बुध तथा शुक्र।

वाह्य ग्रह (Exterior Planet)

वे गह हैं जो सूर्य तथा पृथ्वी दोनों से बाहर हैं। वे ग्रह हैं मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस, नेप्चून तथा प्लूटो।

यूरेनस, नेप्चून तथा प्लूटो को भारतीय मनीषियों ने जातक ग्रन्थों में कोई स्थान नहीं दिया। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि भारतीय मनीषियों को इसके बारे में पता नहीं था। भारतीय मनीषियों ने इनका वर्णन क्रमशः अरुण, वरुण तथा यम के नाम से किया है। परन्तु इनका अस्तित्व पृथ्वी से बहुत दूर होने के कारण तथा सूर्य की परिक्रमा इतने अधिक वर्षो में पूरा करते हैं कि जातक का जीवन ही पूरी हो जाता है। जैसे प्लूटो सूर्य की परिक्रमा 248 वर्ष में पूरी करता है। नेप्चून सूर्य परिक्रमा 164.8 वर्ष में पूरी करता है। इसलिए जातक के जीवन में इन ग्रहों का अधिक महत्त्व नहीं है।

❑

पाठ–6

गणित

हम यह जानते हैं कि सूर्य से ही समय, दिन एवं रात तथा ऋतुओं का निर्माण हुआ। पौराणिक हिन्दु दिन सूर्योदय से पुनः सूर्योदय तक मानते हैं। जब सूर्य सिर पर होता है तो स्थानीय दोपहर होती है। पृथ्वी एक समतल तत्व नहीं है अपितु नारंगी की तरह गोल है और अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है। इससे सिद्ध होता है कि पूर्व के देशों में सूर्य पहले दिखाई देगा और पश्चिम के देशों में बाद में दिखाई देगा इस प्रकार सब स्थानों पर सूर्योदय का समय अलग–अलग होगा।

स्थानीय समय (Local Mean Time)

ऊपर हम देख चुके हैं कि पूर्व के देशों में सूर्य पहले दिखाई देगा तथा पश्चिम के देशों में बाद में दिखाई देगा। इसलिए प्रत्येक स्थान का स्थानीय समय भिन्न होता है परन्तु समय के व्यतीत होने की दर में समानता लाने के लिए तथा जटिल गणितीय संगणना से बचने के लिये ''स्थानीय औसत समय''(L.M.T.) का मान लिया जाता है। यह समय किसी भी स्थान के अक्षांश और देशान्तर पर निर्भर करता है। ज्योतिष में हम सबसे पहले दिए हुए समय को स्थानीय औसत समय में बदलते हैं।

मानक समय (Standard Time)

किसी स्थान से देश बड़ा होता है। परन्तु आने–जाने की सुविधाओं के विस्तार के कारण तथा संचार साधनों के विकास के कारण देश एक इकाई हो गया है। डाक, तार, टेलीफोन आदि संचार साधनों से देश जुड़ गये हैं। यातायात के साधनों के विकास के कारण प्रत्येक शहर दूसरे से जुड़ गया है। इसलिए देश के समय की आवश्यकता का अनुभव किया गया जिसमें प्रत्येक शहर का समय एक हो। सन् 1906 ई. में यह निर्णय लिया गया कि 82^0–30′ पूर्व देशान्तर को भारत का मानक मध्याह्न रेखा के रूप में लिया जाएगा। यह भारत का मानक समय है। हवाई जहाज़, डाक, रेल आदि सभी इस समय का ही प्रयोग करते हैं। आज तो हमारी घड़ियाँ भी इसी समय के अनुसार चलती हैं। स्थानीय समय की कल्पना समाप्तप्राय हो गई है। इसलिये ज्योतिष में मानक समय से स्थानीय समय निकाला जाता है।

ग्रीनविच माध्य समय (Greenwitch Mean Time)

आज देश ही नहीं सारा संसार एक हो गया है। इसलिये अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भी एक मानक समय की आवश्यकता को अनुभव किया गया जिससे विश्व के सभी देशों द्वारा उसका हवाला दिया जा सके। ग्रीनविच के मध्य में से गुजरने वाली मध्याह्न रेखा को शून्य मान लिया गया और अन्य देशों को इसके अनुसार मानक समय दिये गये।

समय का रूपान्तरण (Time Conversion)

हमने देखा है कि पृथ्वी 24 घन्टे में 360^0 घूम लेती है। इस प्रकार

$360^0 = 24$ घण्टे, $360^0 = 24X60$ मिनट

$1^0 = \frac{24X60}{360} = 4$ मिनट

इस सिद्धान्त का प्रयोग करके एक स्थान के समय को दूसरे स्थान के समय में परिवर्तित कर सकते हैं। हमें केवल याद रखना होगा कि जो देश ग्रीनविच के पूर्व में स्थित हैं उनमें ग्रीनविच के समय में जोड़ा (+) जाता है तथा जो देश ग्रीनविच के पश्चिम में स्थित हैं उनमें ग्रीनविच के समय में से घटाया (–) जाता है।

उदाहरण

भारत की मानक मध्याह्न रेखा का देशान्तर $82^0–30'$ पूर्व है तो मानक समय क्या होगा?

$1^0 = 4$ मिनट

$82^0–30 = 82X4+30X4$ सेकॅण्ड

$= 328$ मि. + 120 सेकॅण्ड (2 मिनट)

330 मिनट = 328 मि. + 2 मिनट

= 5 घंटे 30 मिनट

भारत क्योंकि ग्रीनविच से पूर्व में स्थित है इसलिए ग्रीनविच के समय में 5 घंटे 30 मिनट जोड़े जाएंगे। यदि ग्रीनविच में समय 6–00 है तो भारत में 6–00+5–30= 11घंटे 30 मिनट का समय होगा। यदि गीनविच के समय 10 घंटे 30 मिनट है तो भारत में 16 घंटे का समय होगा, अर्थात सायं 4 बजे ।

स्थानिक समय संस्कार (Local Mean Time)

यह समय की वह अवधि है जिसे किसी देश के मानक समय से उस स्थान के स्थानीय औसत समय को मालूम करने के लिये प्रयोग किया जाता है। स्थानीय औसत शुद्धि या तो मानक समय में (+) जोड़ी जाती है या (–) घटाई जाती है। यदि स्थान मानक स्थान से पूर्व में है तो मानक समय में अन्तर को जोड़ा जाएगा और यदि स्थान मानक स्थान से पश्चिम में स्थित है तो मानक समय में से अन्तर को घटाया जाएगा। उदाहरण लें कि भारत का मानक स्थान $82^0–30'$ है। दिल्ली का देशान्तर $77^0–13'$ है। दिल्ली मानक स्थान से पश्चिम स्थित है, तो अन्तर घटाया जाएगा।

$80^030' – 77^013' = 5^017'$ मि0

$1^0 = 4$ मिनट

$5^017 = 05X4 + 17X4$ सेकॅण्ड

$= 20$ मि. + 68 सेकॅण्ड

= 21मि0 8 सेकॅण्ड

अब यदि भारतीय मानक समय (IST) में से 21 मि. 8 सेकॅण्ड घटा दिये जाएंगे तो दिल्ली का स्थानीय समय निकल आएगा। जैसे घड़ी में शाम के 5 घ. 30 मि. हैं तो,

दिल्ली का स्थानीय समय =शाम के (5घं. 30मि.) –(0–21 मि. 8 सै.)

घं.	मि.	से.
5	30	00
–	21	08
5	08	52

=5घं. 08 मि. 52 से.

इस प्रकार किसी स्थान के मानक समय से स्थानीय समय निकाला जा सकता है।

❑

पाठ–7

लग्न साधन एवं द्वादश भाव स्पष्ट

कुण्डली निर्माण में सबसे पहले लग्न साधन करना पड़ता है। किसी भी कुण्डली के निर्माण में तीन चीजों की जानकारी चाहिए। वे हैं जन्मसमय, जन्मस्थान व जन्म तारीख।

लग्न (Ascendant)

जन्म समय किसी निश्चित स्थान के पूर्वी क्षितिज पर राशि चक्र की जो राशि उदित हो रही होती है वह लग्न कहलाता है।

साम्पातिक समय (Sidereal Time)

लग्न साधन के लिए हमें साम्पातिक समय की आवश्यकता होती है।

पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र पूरा करने में 24 घंटे लेती हैं। लेकिन यही पृथ्वी का चक्र जब किसी निश्चित तारे के सन्दर्भ में पूरा होता है तो 24 घंटे से 3 मिनट 56 सेकेण्ड कम लगते हैं।

इस प्रकार जो समय बनता है उसे साम्पातिक समय कहते हैं।

लग्न साधन विधि

उदाहरण 1– 12 जून 1987 को समय 3.55 सायं पर कलकत्ता में जन्मे व्यक्ति के लिए जन्म लग्न एवं दषम भाव की गणना करें।

हल – सर्वप्रथम हमें इस तिथि और समय के आधार पर सांपातिक काल की गणना करनी होगी जिसको हम सारणी–1 द्वारा देखेंगे।

12 जून 2001 के लिए सांपातिक काल	=	17h	20m	39s
1987 के लिए सारणी–2 से वर्ष शुद्धि संस्कार	=	(-)	02m	24s
अतः 12 जून 1987 (0 hrs.) पर सांपातिक काल	=	17h	18m	15s
कलकत्ता के लिए समय शुद्धि संस्कार	=	(-)		04s
	=	17h	18m	11s ..... (i)

अब हमें जन्म समय 3.55 सायं को स्थानिक समय में परिवर्तन करना होगा इसके लिए कलकत्ता का

रेखांश देखेंगे। कलकत्ता का रेखांश 88°20' है। भारत का मध्य रेखांश 82°30' है। अतः कलकत्ता का स्थानीय समय संस्कार का मान + 23m 30s होगा,

जन्म समय	=	15h	55m	00s
समय शुद्धि संस्कार		+00h	23m	20s
जन्म समय का स्थानीय समय	=	16h	18m	20s

उपर्युक्त समय में सांपातिक काल की शुद्धि सारणी–4 से देखेंगे।

16 घंटे के लिए सांपातिक काल शुद्धि	=	+	02m	38s
18 मिनट के लिए सांपातिक काल शुद्धि	=	+	00m	03s
	=	16h	21m	01s ..... (ii)

क्योंकि जन्म समय रात के 12 बजे के बाद है इसलिए समीकरण (i) और (ii) को जोड़ेंगे जिससे वास्तविक सांपातिक काल प्राप्त होगा,

समीकरण (i) से प्राप्त मान	=	17h	18m	11s ..... (i)
समीकरण (ii) से प्राप्त मान	=	+16h	21m	01s ..... (ii)
	=	+33h	39m	12s
या अभीष्ट सांपातिक काल (24 घंटे घटाने पर)	=	09h	39m	12s

अब हमको सांपातिक काल 09h 39m 12s के लिए जन्म लग्न एवं दशम भाव की गणना करनी होगी। इसके लिए कलकत्ता के अक्षांश को ध्यान में रखते हुए लग्न सारणी का चयन करना होगा। कलकत्ता के अक्षांश 22°35' हैं इस आधार पर फ्यूचर पंचांग में लग्न सारणी देखें तो निम्न मान प्राप्त होते हैं।

09h 40m पर लग्न स्पष्ट	=	6^s	25°	49'
09h 30m पर लग्न स्पष्ट	=	6^s	23°	37'
10 मिनट में लग्न स्पष्ट का अंतर	=		2°	12'

600 सेकंड में लग्न स्पष्ट का अंतर = 132'

9m 12s = 552 सेकंड के लिए लग्न का अंतर $= \frac{132' \times 552\ s}{600\ s}$

= 121' 26" = 2° 1' 26"

09h 30m पर लग्न स्पष्ट	=	6^s	23°	37' 00"
9m 12s = 552 सेकंड के लिए लग्न का अंतर	=	+	2°	01' 26"
	=	6^s	25°	38' 26"
सन 1987 के लिए अयनांश संस्कार सारणी–5 से देखें	= +		0°	19' 00"
अभीष्ट लग्न स्पष्ट	=	6^s	25°	57' 26"

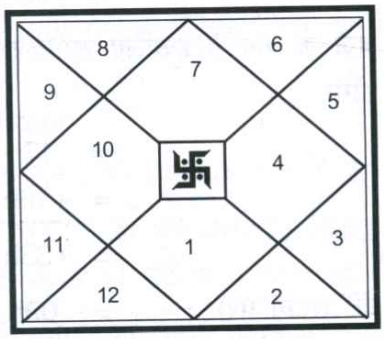

विदेश में जन्मे जातक की लग्न साधन विधि

युद्ध/ग्रीष्म समय संस्कार

(War/ Summer Time correction)

कुछ देश जैसे इंगलैंड, अमेरीका, कैनेडा, मैक्सिको, यू.एस.एस. आर आदि देशों में ग्रीष्मकाल में समर टाइम का अनुसरण किया जाता है। इन देशों में किसी निश्चित तारीख के घड़ियों को एक घंटा आगे कर दिया जाता है। उस अवधि में जन्में जातक का जो जन्म समय होगा उसमें एक घंटा कम करके उस देश का मानक समय प्राप्त होता है। विभिन्न देश समर टाइम का अनुसरण भिन्न–भिन्न तारिखों को करते हैं इसका विवरण Table of Ascendant में दिया होता है। इसलिए जब भी किसी विदेश में जन्में जातक की कुण्डली बनानी हो इस बात का विशेषकर ध्यान रखें।

दक्षिणी गोलार्द्ध में जन्मे जातक का लग्न स्पष्ट साधन :

दक्षिणी गोलार्द्ध में जन्में जातक के लग्न साधन के लिए भी यही Table of Ascendant की सहायता लेनी होगी और साम्पातिक काल निकाल कर लग्न साधन करना होगा।

साम्पातिक काल साधन की विधि बिलकुल वैसी ही है जैसे उत्तरी गोलार्द्ध में जन्में जातक के लिए किया था। बस अंतर इतना है कि जो भी विधिवत साम्पातिक समय निकालें उस में 12 घंटे जोड़ देने से जो प्राप्त हो उसमें से 24 घंटे घटा दें तो साम्पातिक समय आ जायेगा।

प्रातः साम्पातिक समय से लग्न साधन के लिए दिये गये अक्षांश को उत्तरी अक्षांश वाली लग्न सारणी से लग्न स्पष्ट करें इस तरह जो लग्न स्पष्ट हो उस में से 6 राशि जोड़ दें तो दक्षिणी गोलार्द्ध में जन्में जातक का लग्न स्पष्ट हो जायेगा। अयनांशा संस्कार पहले की तरह ही होगा।

द्वादश भाव स्पष्ट

किसी निर्धारित समय पर उस स्थान की मध्याह्न रेखा (मध्य आकाश या मध्यबिन्दु) क्रान्तिवृत्त को जिस बिन्दु पर काटती है उस बिन्दु को दशमभाव कहते हैं। दशम भाव का विषुवांश उस समय का सम्पात् समय होता है। इसे प्रायः विषुवांश मध्य आकाश भी कहते हैं।

इस प्रकार दशम भाव स्पष्ट करेंगे। दशम भाव के लिए इसी पुस्तक में दी गई तालिका अनुसार गणना करेंगे। यह तालिका सभी स्थानों अर्थात् पृथ्वी के सभी शहरों के लिए एक ही होती है।

दशम भाव एवं भाव स्पष्ट

दशम भाव स्पष्ट

इसी प्रकार हम दशम भाव स्पष्ट की गणना करने के लिए सांपातिक काल 09h 39m 12s के लिए फ्यूचर पंचांग में दशम भाव सारणी देखेंगे जो लग्न सारणी के अंत में दी गई है।

09h 40m पर दशम भाव स्पष्ट	=	3^s	29°	22'
09h 30m पर दशम भाव स्पष्ट	=	3^s	26°	49'
			2°	33'
10 मिनट में दशम भाव स्पष्ट का अंतर	=		2°	33'
600 सेकंड में दशम भाव स्पष्ट का अंतर	=			153'

9m 12s = 552 सेकंड के लिए

दशम भाव स्पष्ट का अंतर $= \frac{153' \times 552\ s}{600\ s}$

$= 140'45" = 2° 20' 45"$

09h 30m पर दशम भाव स्पष्ट	=	3^s	26°	49' 00"
8m 07s = 487 सेकंड के लिए				
दशम भाव स्पष्ट का अंतर	=	+	2°	20' 45"
	=	3^s	29°	09' 45"
सन 1987 के लिए अयनांश संस्कार				
सारणी–5 से देखें	=	+	0°	19' 00"
अभीष्ट दशम भाव स्पष्ट	=	3^s	29°	28' 45"
प्रथम भाव मध्य	=	6^s	25°	57' 26"
दशम भाव मध्य	=	3^s	29°	28' 45"

$$\frac{\text{(प्रथम भाव का मध्य रेखांश) – (दशम भाव का मध्य रेखांश)}}{6}$$

$$\frac{6^s\ 25°\ 57'\ 26" - 3^s\ 29°\ 28'\ 45"}{6} = \frac{2^s\ 26°\ 28'\ 41"}{6}$$

$$= \frac{86°\ 28'\ 41"}{6} = 14°\ 24'\ 46"\ 50'''$$ षष्ठांश प्राप्त हुआ है।

नोट–6 से भाग देने का कारण यह है कि दशम भाव से लग्न तक तीन भाव मध्य और तीन भाव संधि (प्रारंभ) पड़ते हैं।

प्राप्त हुए षष्ठांश के दशम भाव के मध्य रेखांश में बारी–बारी जोड़ते जाने पर क्रमशः अगले भावों के भाव मध्य व संधि रेखांश प्राप्त हो जाएंगे।

दशम भाव मध्य रेखांश	=	3 s	29°	28' 45"	00'''
प्रथम व दशम भाव के बीच षष्ठांश	=	+	14°	24' 46"	50'''
दशम व एकादश भाव संधि रेखांश	=	4 s	13°	53' 31"	50'''
		+	14°	24' 46"	50'''
एकादश भाव मध्य रेखांश	=	4 s	28°	18' 18"	40'''
		+	14°	24' 46"	50'''
एकादश एवं द्वादश भाव संधि रेखांश	=	5 s	12°	43' 05"	30'''
		+	14°	24' 46"	50'''
द्वादश भाव मध्य रेखांश	=	5 s	27°	07' 52"	20'''
		+	14°	24' 46"	50'''
द्वादश एवं प्रथम भाव संधि रेखांश	=	6 s	11°	32' 39"	10'''
		+	14°	24' 46"	50'''
प्रथम भाव मध्य रेखांश	=	6 s	25°	57' 26"	00'''

अब प्राप्त हुए स्पष्ट भाव मध्य रेखांश और भाव संधि रेखांश में 6 राशि जोड़ देने से भाव के सामने वाले भाव मध्य और भाव संधि रेखांश स्पष्ट हो जाएंगे।

जैसे–

• दशम भाव का मध्य रेखांश	=	3 s	29°	28' 45"	00'''
		+ 6 s			
चतुर्थ भाव मध्य रेखांश	=	9 s	29°	28' 45"	00'''
• 10वें और 11वें भाव का संधि रेखांश	=	4 s	13°	53' 31"	50'''
		+ 6 s			
चतुर्थ और पंचम भाव का संधि रेखांश	=	10 s	13°	53' 31"	50'''
• 11वें भाव का मध्य रेखांश	=	4 s	28°	18' 18"	40'''
		+ 6 s			
पंचम भाव का मध्य रेखांश	=	10 s	28°	18' 18"	40'''
• 11वें और 12वें भाव का संधि रेखांश	=	5 s	12°	43' 05"	30'''
		+ 6 s			
पंचम और षष्ठम भाव का संधि रेखांश	=	11 s	12°	43' 05"	30'''

• 12वें भाव का मध्य रेखांश	=	5 s	27°	07' 52"	20'''
		+ 6 s			
षष्ठम भाव का मध्य रेखांश	=	11 s	27°	07' 52"	20'''
• 12वें और प्रथम भाव का संधि रेखांश	=	6 s	11°	32' 39"	10'''
		+ 6 s			
षष्ठम और सप्तम भाव का संधि रेखांश	=	0 s	11°	32' 39"	10'''
• प्रथम भाव का मध्य रेखांश	=	6 s	25°	57' 26"	00'''
		+ 6 s			
सप्तम भाव का मध्य रेखांश	=	0 s	25°	57' 26"	00'''

इस प्रकार प्रथम भाव के मध्य रेखांश से चतुर्थ भाव के मध्य रेखांश के अंतर को लेकर प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ भावों के भाव मध्य और भाव संधि रेखांश ज्ञात करेंगे।

जैसे–

चतुर्थ भाव का मध्य रेखांश	=	9 s	29°	28' 45"	00'''
प्रथम भाव का मध्य रेखांश	=	6 s	25°	57' 26"	00'''
अंतर	=	3 s	3°	31' 19"	00'''

षष्ठांश ज्ञात करने के लिए इस अंतर में 6 से भाग देंगे,

$$\frac{3^{s} 3^\circ 31' 19'' 00'''}{6} = \frac{93^\circ 31' 19''}{6} = 15^\circ 35' 13'' 10'''$$

प्राप्त हुए षष्ठांश को प्रथम भाव मध्य रेखांश में बारी–बारी जोड़े जाने से क्रमशः अगले भावों के भाव मध्य व संधि रेखांश प्राप्त हो जायेंगे।

प्रथम भाव मध्य रेखांश	=	6 s	25°	57' 26"	00'''
		+	15°	35' 13"	10'''
प्रथम और द्वितीय भाव संधि रेखांश	=	7 s	11°	32' 39"	10'''
		+	15°	35' 13"	10'''
द्वितीय भाव मध्य रेखांश	=	7 s	27°	07' 52"	20'''

द्वितीय भाव मध्य रेखांश	=	7 s	27°	07' 52"	20'''
	+		15°	35' 13"	10'''
द्वितीय और तृतीय भाव संधि रेखांश	=	8 s	12°	43' 05"	30'''
	+		15°	35' 13"	10'''
तृतीय भाव मध्य रेखांश	=	8 s	28°	18' 18"	40'''
	+		15°	35' 13"	10'''
तृतीय व चतुर्थ भाव संधि रेखांश	=	9 s	13°	53' 31"	50'''
	+		15°	35' 13"	10'''
चतुर्थ भाव मध्य रेखांश	=	9 s	29°	38' 45"	00'''

अब प्राप्त हुए स्पष्ट भाव मध्य और संधि रेखांश में 6 राशि जोड़ देने से भाव के सामने वाले भाव मध्य और संधि रेखांश स्पष्ट हो जाएंगे। जैसे हमने दशम से प्रथम भावों के रेखाशों में 6 राशि जोड़ी है। उसी तरह से यह भी प्रथम से चतुर्थ भावों में 6 राशि जोड़ेंगे।

• प्रथम भाव मध्य रेखांश	=	6 s	25°	57' 26"	00'''
	+	6 s			
सप्तम भाव मध्य रेखांश	=	0 s	25°	57' 26"	00'''
• प्रथम और द्वितीय भाव संधि रेखांश	=	7 s	11°	32' 39"	10'''
	+	6 s			
सप्तम और अष्टम भाव संधि रेखांश	=	1 s	11°	32' 39"	10'''
• द्वितीय भाव मध्य रेखांश	=	7 s	27°	7' 52"	20'''
	+	6 s			
अष्टम भाव मध्य रेखांश	=	1 s	27°	7' 52"	20'''
• द्वितीय और तृतीय भाव संधि	=	8 s	12°	43' 05"	30'''
	+	6 s			
अष्टम और नवम भाव संधि रेखांश	=	2 s	12°	43' 05"	30'''
• तृतीय भाव मध्य रेखांश	=	8 s	28°	18' 18"	40'''
	+	6 s			
नवम भाव मध्य रेखांश	=	2 s	28°	18' 18"	40'''

• तृतीय और चतुर्थ भाव संधि रेखांश = 9^s 13° 53' 31" 50'''
+ 6^s

नवम और दशम भाव संधि रेखांश = 3^s 13° 53' 31" 50'''

• चतुर्थ भाव मध्य रेखांश = 9^s 29° 38' 45" 00'''
+ 6^s

दशम भाव मध्य रेखांश = 3^s 29° 38' 45" 00'''

भाव स्पष्ट तालिका

भाव	भाव प्रारंभ (सन्धि)	भाव मध्य
1.	06रा 11° 32′ 39″ 10‴	06रा 25° 57′ 26″ 00‴
2.	07रा 11° 32′ 39″ 10‴	07रा 27° 07′ 52″ 20‴
3.	08रा 12° 43′ 05″ 30‴	08रा 28° 18′ 18″ 40‴
4.	09रा 13° 53′ 31″ 50‴	09रा 29° 28′ 45″ 00‴
5.	10रा 13° 53′ 31″ 50‴	10रा 28° 18′ 18″ 40‴
6.	11रा 12° 43′ 05″ 30‴	11रा 27° 07′ 52″ 20‴
7.	00रा 11° 32′ 39″ 10‴	00रा 25° 57′ 26″ 00‴
8.	01रा 11° 32′ 39″ 10‴	01रा 27° 07′ 52″ 20‴
9.	02रा 12° 43′ 05″ 30‴	02रा 28° 18′ 18″ 40‴
10.	03रा 13° 53′ 31″ 50‴	03रा 29° 28′ 45″ 00‴
11.	04रा 13° 53′ 31″ 50‴	04रा 28° 18′ 18″ 40‴
12.	05रा 12° 43′ 05″ 30‴	05रा 27° 07′ 52″ 20‴

सारणी–1 : वर्ष 2001 के लिए समय 00:00 घंटे पर 82°30' पर साम्पातिक काल

तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल	तिथि	सां.काल
	घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.		घं.मि.से.
	जनवरी	22	10:06:58	14	13:28:02	5	16:53:03	29	20:25:57	19	23:50:58	10	03:15:59
		23	10:10:55	15	13:31:59	6	16:57:00	30	20:29:54	20	23:54:55	11	03:19:56
1	6:41:57	24	10:14:51	16	13:35:56	7	17:00:56	31	20:33:50	21	23:58:51	12	03:23:52
2	6:45:54	25	10:18:48	17	13:39:52	8	17:04:53		**अगस्त**	22	00:02:48	13	03:27:49
3	6:49:50	26	10:22:44	18	13:43:49	9	17:08:50			23	00:06:44	14	03:31:45
4	6:53:47	27	10:26:41	19	13:47:45	10	17:12:46	1	20:37:47	24	00:10:41	15	03:35:42
5	6:57:43	28	10:30:37	20	13:51:42	11	17:16:43	2	20:41:44	25	00:14:38	16	03:39:38
6	7:01:40	29	10:34:34	21	13:55:38	12	17:20:39	3	20:45:40	26	00:18:34	17	03:43:35
7	7:05:37		**मार्च**	22	13:59:35	13	17:24:36	4	20:49:37	27	00:22:31	18	03:47:32
8	7:09:33			23	14:03:31	14	17:28:32	5	20:53:33	28	00:26:27	19	03:51:28
9	7:13:30	1	10:34:34	24	14:07:28	15	17:32:29	6	20:57:30	29	00:30:24	20	03:55:25
10	7:17:26	2	10:38:31	25	14:11:25	16	17:36:25	7	21:01:26	30	00:34:20	21	03:59:21
11	7:21:23	3	10:42:27	26	14:15:21	17	17:40:22	8	21:05:23		**अक्तूबर**	22	04:03:18
12	7:25:19	4	10:46:24	27	14:19:18	18	17:44:19	9	21:09:19			23	04:07:14
13	7:29:16	5	10:50:20	28	14:23:14	19	17:48:15	10	21:13:16	1	00:38:17	24	04:11:11
14	7:33:12	6	10:54:17	29	14:27:11	20	17:52:12	11	21:17:13	2	00:42:13	25	04:15:07
15	7:37:09	7	10:58:13	30	14:31:07	21	17:56:08	12	21:21:09	3	00:46:10	26	04:19:04
16	7:41:06	8	11:02:10		**मई**	22	18:00:05	13	21:25:06	4	00:50:07	27	04:23:01
17	7:45:02	9	11:06:06			23	18:04:01	14	21:29:02	5	00:54:03	28	04:26:57
18	7:48:59	10	11:10:03	1	14:35:04	24	18:07:58	15	21:32:59	6	00:58:00	29	04:30:54
19	7:52:55	11	11:14:00	2	14:39:00	25	18:11:54	16	21:36:55	7	01:01:56	30	04:34:50
20	7:56:52	12	11:17:56	3	14:42:57	26	18:15:51	17	21:40:52	8	01:05:53		**दिसंबर**
21	8:00:48	13	11:21:53	4	14:46:54	27	18:19:48	18	21:44:48	9	01:09:49		
22	8:04:45	14	11:25:49	5	14:50:50	28	18:23:44	19	21:48:45	10	01:13:46	1	04:38:47
23	8:08:41	15	11:29:46	6	14:54:47	29	18:27:41	20	21:52:42	11	01:17:42	2	04:42:43
24	8:12:38	16	11:33:42	7	14:58:43	30	18:31:37	21	21:56:38	12	01:21:39	3	04:46:40
25	8:16:35	17	11:37:39	8	15:02:40		**जुलाई**	22	22:00:35	13	01:25:36	4	04:50:36
26	8:20:31	18	11:41:35	9	15:06:36			23	22:04:31	14	01:29:32	5	04:54:33
27	8:24:28	19	11:45:32	10	15:10:33	1	18:35:34	24	22:08:28	15	01:33:29	6	04:58:30
28	8:28:24	20	11:49:29	11	15:14:29	2	18:39:30	25	22:12:24	16	01:37:25	7	05:02:26
29	8:32:21	21	11:53:25	12	15:18:26	3	18:43:27	26	22:16:21	17	01:41:22	8	05:06:23
30	8:36:17	22	11:57:22	13	15:22:23	4	18:47:23	27	22:20:17	18	01:45:18	9	05:10:19
31	8:40:14	23	12:01:18	14	15:26:19	5	18:51:20	28	22:24:14	19	01:49:15	10	05:14:16
	फरवरी	24	12:05:15	15	15:30:16	6	18:55:17	29	22:28:11	20	01:53:11	11	05:18:12
		25	12:09:11	16	15:34:12	7	18:59:13	30	22:32:07	21	01:57:08	12	05:22:09
1	8:44:10	26	12:13:08	17	15:38:09	8	19:03:10	31	22:36:04	22	02:01:05	13	05:26:05
2	8:48:07	27	12:17:04	18	15:42:05	9	19:07:06		**सितंबर**	23	02:05:01	14	05:30:02
3	8:52:04	28	12:21:01	19	15:46:02	10	19:11:03			24	02:08:58	15	05:33:59
4	8:56:00	29	12:24:58	20	15:49:58	11	19:14:59	1	22:40:00	25	02:12:54	16	05:37:55
5	8:59:57	30	12:28:54	21	15:53:55	12	19:18:56	2	22:43:57	26	02:16:51	17	05:41:52
6	9:03:53	31	12:32:51	22	15:57:52	13	19:22:52	3	22:47:53	27	02:20:47	18	05:45:48
7	9:07:50		**अप्रैल**	23	16:01:48	14	19:26:49	4	22:51:50	28	02:24:44	19	05:49:45
8	9:11:46			24	16:05:45	15	19:30:46	5	22:55:46	29	02:28:40	20	05:53:41
9	9:15:43	1	12:36:47	25	16:09:41	16	19:34:42	6	22:59:43	30	02:22:37	21	05:57:38
10	9:19:39	2	12:40:44	26	16:13:38	17	19:38:39	7	23:03:40	31	02:36:34	22	06:01:34
11	9:23:36	3	12:44:40	27	16:17:34	18	19:42:35	8	23:07:36		**नवंबर**	23	06:05:31
12	9:27:33	4	12:48:37	28	16:21:31	19	19:46:32	9	23:11:33			24	06:09:28
13	9:31:29	5	12:52:33	29	16:25:27	20	19:50:28	10	23:15:29	1	02:40:30	25	06:13:24
14	9:35:26	6	12:56:30	30	16:29:24	21	19:54:25	11	23:19:26	2	02:44:27	26	06:17:21
15	9:39:22	7	13:00:27	31	16:33:21	22	19:58:21	12	23:23:22	3	02:48:23	27	06:21:17
16	9:43:19	8	13:04:23		**जून**	23	20:02:18	13	23:27:19	4	02:52:20	28	06:25:14
17	9:47:15	9	13:08:20			24	20:06:15	14	23:31:15	5	02:56:16	29	06:29:10
18	9:51:12	10	13:12:16	1	16:37:17	25	20:10:11	15	23:35:12	6	03:00:13	30	06:33:07
19	9:55:08	11	13:16:13	2	16:41:14	26	20:14:08	16	23:39:09	7	03:04:09	31	06:37:03
20	9:59:05	12	13:20:09	3	16:45:10	27	20:18:04	17	23:43:05	8	03:08:06		
21	10:03:02	13	13:24:06	4	16:49:07	28	20:22:01	18	23:47:02	9	03:12:03		

सारणी–2 : विभिन्न वर्षों के लिए शुद्धि संस्कार

(सारणी–1 से प्राप्त मानों पर लागू करने हेतु)

* केवल जनवरी एवं फरवरी के लिए

वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार
	मि. : से.		मि. : से.		मि. : से.		मि. : से.		मि. : से.		मि. : से
1901	-03:04	1926	-3:17	1951	-03:30	1976*	-03:43	2000	+00:57	2025	+00:45
1902	-04:02	1927	-4:15	1952*	-04:28	1976	+00:13	2001	+00:00	2026	-00:13
1903	-04:59	1928*	-5:12	1952	-00:31	1977	-00:44	2002	-00:57	2027	-01:10
1904*	-05:56	1928	-1:16	1953	-01:28	1978	-01:41	2003	-01:54	2028*	-02:07
1904	-02:00	1929	-2:13	1954	-02:26	1979	-02:39	2004*	-02:52	2028	+01:49
1905	-02:57	1930	-3:10	1955	-03:23	1980*	-03:36	2004	+01:05	2029	+00:52
1906	-03:54	1931	-4:07	1956*	-04:20	1980	+00:20	2005	+00:08	2030	-00:05
1907	-04:51	1932*	-5:04	1956	-00:24	1981	-00:37	2006	-00:50	2031	-01:03
1908*	-05:49	1932	-1:08	1957	-01:21	1982	-01:34	2007	-01:57	2032*	-02:00
1908	-01:52	1933	-2:05	1958	-02:18	1983	-02:31	2008*	-02:44	2032	+01:56
1909	-02:50	1934	-3:03	1959	-03:16	1984*	-03:29	2008	+01:12	2033	+00:59
1910	-03:47	1935	-4:00	1960*	-04:13	1984	+00:28	2009	+00:15	2034	+00:02
1911	-04:44	1936*	-4:57	1960	-00:16	1985	-00:29	2010	-00:42	2035	-00:55
1912*	-05:41	1936	-1:01	1961	-01:14	1986	-01:27	2011	-01:40	2036*	-01:53
1912	-01:45	1937	-1:58	1962	-02:11	1987	-02:24	2012*	-02:37	2036	+02:04
1913	-02:42	1938	-2:55	1963	-03:08	1988*	-03:21	2012	+01:19	2037	+01:07
1914	-03:39	1939	-3:52	1964*	-04:05	1988	+00:35	2013	+00:22	2038	+00:09
1915	-04:37	1940*	-4:50	1964	-00:09	1989	-00:22	2014	-00:35	2039	-00:48
1916*	-05:34	1940	-0:53	1965	-01:06	1990	-01:19	2015	-01:32	2040*	-01:45
1916	-02:36	1941	-01:50	1966	-02:03	1991	-02:16	2016*	-02:29	2040	+02:11
1917	-02:35	1942	-02:48	1967	-03:01	1992*	-03:14	2016	+01:27	2041	+01:14
1918	-03:32	1943	-03:45	1968*	-03:58	1992	+00:43	2017	+00:30	2042	+00:17
1919	-04:29	1944*	-04:42	1968	-00:02	1993	-00:15	2018	-00:28	2043	-00:41
1920*	-05:27	1944	-00:46	1969	-00:59	1994	-01:12	2019	-01:25	2044*	-01:38
1920	-01:30	1945	-01:43	1970	-01:56	1995	-02:09	2020*	-02:22	2044	+02:18
1921	-02:27	1946	-02:40	1971	-02:53	1996*	-03:06	2020	+01:34	2045	+01:21
1922	-03:25	1947	-03:38	1972*	-03:51	1996	+00:50	2021	+00:37	2046	+00:24
1923	-04:22	1948*	-04:35	1972	+00:06	1997	-00:07	2022	-00:20	2047	-00:33
1924*	-05:19	1948	-00:39	1973	-00:51	1998	-01:04	2023	-01:17	2048*	-01:30
1924	-01:23	1949	-01:36	1974	-01:49	1999	-02:02	2024*	-02:15	2048	+02:26
1925	-02:20	1950	-02:33	1975	-02:46	2000*	-02:59	2024	+01:42	2049	+01:29
										2050	+00:32

.. सारणी–2 क्रमशः अगले पृष्ठ पर

.. सारणी–2 का शेष भाग

सारणी–2 : विभिन्न वर्षों के लिए शुद्धि संस्कार

(सारणी–1 से प्राप्त मानों पर लागू करने हेतु) * केवल जनवरी एवं फरवरी के लिए

वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार	वर्ष	शुद्धि संस्कार
	मि. : से.		मि. : से.		मि. : से.		मि. : से.		मि. : से.		मि. : से.
2051	-00:26	2060*	-01:08	2068*	-00:54	2076*	-00:39	2084*	-00:24	2092*	-00:09
2052*	-01:23	2060	+02:48	2068	+03:03	2076	+03:18	2084	+03:32	2092	+03:47
2052	+02:33	2061	+01:51	2069	+02:06	2077	+02:20	2085	+02:35	2093	+02:50
2053	+02:36	2062	+00:54	2070	+01:08	2078	+01:23	2086	+01:38	2094	+01:53
2054	+00:39	2063	-00:04	2071	+00:11	2079	+00:26	2087	+00:41	2095	+00:55
2055	-00:18	2064*	-01:01	2072*	-00:46	2080*	-00:31	2088*	-00:17	2096*	-00:02
2056*	-01:16	2064	+02:55	2072	+03:10	2080	+03:25	2088	+03:40	2096	+03:54
2056	+02:41	2065	+01:58	2073	+02:13	2081	+02:28	2089	+02:43	2097	+02:57
2057	+01:44	2066	+01:01	2074	+01:16	2082	+01:31	2090	+01:45	2098	+02:00
2058	+00:46	2067	+00:04	2075	+00:19	2083	+00:33	2091	+00:48	2099	+01:03
2059	-00:11									2100	+00:05

सारणी–3 : विभिन्न स्थानों के लिए साम्पातिक काल शुद्धि संस्कार

स्थान	रेखांश	शुद्धि मि.	से.
इलाहाबाद	81° 52' पू.	+ 0	0
बैंगलोर	77° 36' पू.	+ 0	2
बैंकॉक	100° 30' पू.	- 0	12
मुंबई	72° 50' पू.	+ 0	6
कोलकाता	88° 23' पू.	- 0	4
कोलंबो	79° 52' पू.	+ 0	2
ढाका	90° 25' पू.	- 0	5
दिल्ली	77° 13' पू.	+ 0	3
ग्रीनवीच	0° 0' पू.	+ 0	54
इस्लामाबाद	73° 10' पू.	+ 0	6
क्वालालाम्पुर	101° 43' पू.	- 0	13
चेन्नई	80° 15' पू.	+ 0	1
न्यूयॉर्क	74° 00' प.	+ 1	43
पुणे	73° 53' पू.	+ 0	6
रंगून	96° 10' पू.	- 0	9
वाराणसी	83° 01' पू.	- 0	0

सारणी–4 : समय वृद्धि अंतराल के लिए घंटा मिनटों का शुद्धि संस्कार

समय	शुद्धि		समय	शुद्धि	
घंटे	मि.	से.	घंटे	मि.	से.
1	+0	10	20	3	17
2	0	20	21	3	27
3	0	30	22	3	37
4	0	39	23	3	47
5	0	49	24	+3	57
6	0	59			
7	1	9	मिनट	मि.	से.
8	1	19			
9	1	29	6	+0	1
10	1	39	12	0	2
11	1	48	18	0	3
12	1	58	24	0	4
13	2	8	30	0	5
14	2	18	36	0	6
15	2	28	42	0	7
16	2	38	48	0	8
17	2	48	54	0	9
18	2	57	60	+0	10
19	3	7			

सारणी–5 : अयनांश संस्कार

वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार	वर्ष	अयनांश संस्कार
	० : '		० : '		० : '		० : '		० : '		० : '
100	+26:34	1919	+1:16	1956	+0:45	1992	+0:15	2028	-0:16	2064	-0:46
200	+25:01	1920	+1:15	1957	+0:44	1993	+0:14	2029	-0:16	2065	-0:47
300	+23:47	1921	+1:14	1958	+0:43	1994	+0:13	2030	-0:17	2066	-0:47
400	+22:25	1922	+1:14	1959	+0:43	1995	+0:12	2031	-0:18	2067	-0:48
500	+21:01	1923	+1:13	1960	+0:42	1996	+0:11	2032	-0:19	2068	-0:49
600	+19:38	1924	+1:12	1961	+0:41	1997	+0:11	2033	-0:20	2069	-0:50
700	+18:15	1925	+1:11	1962	+0:40	1998	+0:10	2034	-0:20	2070	-0:51
800	+16:51	1926	+1:10	1963	+0:39	1999	+0:09	2035	-0:21	2071	-0:51
900	+15:28	1927	+1:10	1964	+0:39	2000	+0:08	2036	-0:22	2072	-0:52
1000	+14:05	1928	+1:9	1965	+0:38	2001	+0:08	2037	-0:23	2073	-0:53
1100	+12:41	1929	+1:8	1966	+0:37	2002	+0:07	2038	-0:23	2074	-0:54
1200	+11:18	1930	+1:7	1967	+0:36	2003	+0:06	2039	-0:24	2075	-0:54
1300	+9:54	1931	+1:6	1968	+0:35	2004	+0:05	2040	-0:25	2076	-0:55
1400	+8:30	1932	+1:5	1969	+0:34	2005	+0:04	2041	-0:26	2077	-0:56
1500	+7:07	1933	+1:4	1970	+0:33	2006	+0:03	2042	-0:27	2078	-0:57
1600	+5:43	1934	+1:3	1971	+0:32	2007	+0:02	2043	-0:28	2079	-0:58
1700	+4:20	1935	+1:2	1972	+0:31	2008	+0:01	2044	-0:29	2080	-0:59
1800	+2:56	1936	+1:1	1973	+0:30	2009	+0:00	2045	-0:30	2081	-1:00
1900	+1:32	1937	+1:0	1974	+0:30	2010	-0:00	2046	-0:31	2082	-1:01
1901	+1:31	1938	+1:0	1975	+0:29	2011	-0:01	2047	-0:32	2083	-1:02
1902	+1:30	1939	+0:59	1976	+0:28	2012	-0:02	2048	-0:32	2084	-1:03
1903	+1:29	1940	+0:58	1977	+0:27	2013	-0:03	2049	-0:33	2085	-1:03
1904	+1:29	1941	+0:58	1978	+0:27	2014	-0:04	2050	-0:34	2086	-1:04
1905	+1:28	1942	+0:57	1979	+0:26	2015	-0:04	2051	-0:35	2087	-1:05
1906	+1:27	1943	+0:56	1980	+0:25	2016	-0:05	2052	-0:35	2088	-1:06
1907	+1:26	1944	+0:55	1981	+0:24	2017	-0:06	2053	-0:36	2089	-1:07
1908	+1:26	1945	+0:55	1982	+0:24	2018	-0:07	2054	-0:37	2090	-1:07
1909	+1:25	1946	+0:54	1983	+0:23	2019	-0:07	2055	-0:38	2091	-1:08
1910	+1:24	1947	+0:53	1984	+0:22	2020	-0:08	2056	-0:39	2092	-1:09
1911	+1:23	1948	+0:52	1985	+0:21	2021	-0:09	2057	-0:39	2093	-1:10
1912	+1:22	1949	+0:51	1986	+0:20	2022	-0:10	2058	-0:40	2094	-1:10
1913	+1:21	1950	+0:50	1987	+0:19	2023	-0:11	2059	-0:41	2095	-1:11
1914	+1:20	1951	+0:49	1988	+0:18	2024	-0:12	2060	-0:42	2096	-1:12
1915	+1:19	1952	+0:48	1989	+0:17	2025	-0:13	2061	-0:43	2097	-1:13
1916	+1:18	1953	+0:47	1990	+0:16	2026	-0:14	2062	-0:44	2098	-1:14
1917	+1:17	1954	+0:46	1991	+0:15	2027	-0:15	2063	-0:45	2099	-1:15
1918	+1:17	1955	+0:45							2100	-1:16

लग्न सारणी – साम्पातिक काल के आधार पर

	अक्षांश 0°				अक्षांश 5°				अक्षांश 10°			
मि.	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	2 6 00	5 6 00	8 6 00	11 6 00	2 7 59	5 6 00	8 4 00	11 6 00	2 10 00	5 6 00	8 1 59	11 6 00
10	8 17	8 43	8 17	8 43	10 17	8 37	6 18	8 50	12 17	8 32	4 16	8 57
20	10 35	11 27	10 35	11 27	12 34	11 15	8 35	11 39	14 34	11 03	6 34	11 54
30	12 53	14 10	12 53	14 10	14 51	13 52	10 54	14 29	16 50	13 35	8 52	14 50
40	15 11	16 52	15 11	16 52	17 09	16 29	13 12	17 18	19 07	16 06	11 10	17 46
50	17 30	19 35	17 30	19 35	19 26	19 05	15 31	20 06	21 23	18 38	13 29	20 41
	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	2 19 48	5 22 17	8 19 48	1122 17	2 21 44	5 21 41	8 17 51	1122 54	2 23 40	5 21 08	8 15 49	1123 36
10	22 08	24 58	22 08	24 58	24 02	24 17	20 11	25 41	25 56	23 39	18 10	26 29
20	24 28	27 38	24 28	27 38	26 21	26 52	22 32	28 27	28 13	26 09	20 32	29 21
30	26 48	6 0 18	26 48	0 0 18	28 40	29 26	24 54	1 12	3 0 30	28 38	22 55	0 2 12
40	29 10	2 56	29 10	2 56	3 1 00	6 2 00	27 16	3 56	2 48	6 1 07	25 19	5 02
50	3 1 32	5 34	9 1 32	5 34	3 20	4 33	29 40	6 39	5 06	3 35	27 44	7 50
	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 3 54	6 8 11	9 3 54	0 8 11	3 5 40	6 7 05	9 2 05	0 9 21	3 7 24	6 6 02	9 0 10	0 10 37
10	6 18	10 46	6 18	10 46	8 02	9 36	4 31	12 01	9 44	8 29	2 37	13 22
20	8 43	13 21	8 43	13 21	10 24	12 06	6 57	14 40	12 03	10 55	5 06	16 05
30	11 09	15 54	11 09	15 54	12 47	14 35	9 26	17 17	14 23	13 20	7 37	18 47
40	13 35	18 26	13 35	18 26	15 11	17 04	11 55	19 54	16 44	15 45	10 09	21 27
50	16 03	20 58	16 03	20 58	17 36	19 31	14 26	22 28	19 06	18 08	12 42	24 05
	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 18 32	6 23 28	9 18 32	0 23 28	3 20 02	6 21 58	9 16 58	0 25 02	3 21 28	6 20 31	9 15 17	0 26 42
10	21 02	25 56	21 02	25 56	22 28	24 24	19 31	27 34	23 51	22 54	17 54	29 17
20	23 33	28 24	23 33	28 24	24 56	26 48	22 06	1 0 04	26 15	25 15	20 33	1 1 51
30	26 05	7 0 51	26 05	1 0 51	27 24	29 12	24 42	2 34	28 39	27 36	23 13	4 23
40	28 39	3 17	28 39	3 17	29 53	7 1 35	27 20	5 02	4 1 05	29 56	25 54	6 53
50	4 1 13	5 41	10 1 13	5 41	4 2 24	3 58	29 59	7 29	3 31	7 2 16	28 38	9 22
	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 3 49	7 8 05	10 3 49	1 8 05	4 4 55	7 6 19	10 2 39	1 9 55	4 5 57	7 4 35	10 1 23	1 11 50
10	6 26	10 28	6 26	10 28	7 27	8 40	5 20	12 19	8 25	6 54	4 10	14 16
20	9 03	12 50	9 03	12 50	9 59	11 00	8 03	14 43	10 53	9 12	6 58	16 41
30	11 42	15 11	11 42	15 11	12 33	13 20	10 47	17 06	13 22	11 29	9 47	19 05
40	14 21	17 32	14 21	17 32	15 07	15 39	13 32	19 28	15 51	13 46	12 38	21 28
50	17 02	19 52	17 02	19 52	17 42	17 57	16 18	21 49	18 21	7 16 03	15 31	23 49
	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 19 43	7 22 11	1019 43	1 22 11	4 20 18	7 20 15	1019 05	1 24 09	4 20 51	7 18 20	1018 24	26 10
10	22 25	24 30	22 25	24 30	22 54	22 33	21 53	26 28	23 22	20 36	21 18	28 30
20	25 07	26 48	25 07	26 48	25 31	24 51	24 42	28 47	25 53	22 53	24 14	2 0 49
30	27 50	29 06	27 50	29 06	28 08	27 08	27 31	2 1 06	28 24	25 09	27 09	3 08
40	0 33	8 1 24	11 0 33	2 1 24	5 0 45	29 25	11 0 20	3 24	5 0 56	27 26	11 0 06	5 26
50	5 3 16	3 42	3 16	3 42	3 22	8 1 43	3 10	5 42	3 28	29 42	3 03	7 43

लग्न सारणी – साम्पातिक काल के आधार पर

	अक्षांश 13°04' (चेन्नई)				अक्षांश 15°				अक्षांश 17°26' (हैदराबाद)			
मि	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	2 11 16	5 6 00	8 0 43	11 6 00	2 12 05	5 6 00	7 29 55	11 6 00	2 13 07	5 5 59	7 28 52	11 5 59
10	13 32	8 28	3 00	9 01	14 21	8 26	8 2 11	9 05	15 22	8 23	8 1 08	9 09
20	15 48	10 57	5 17	12 03	16 36	10 53	4 28	12 09	17 37	10 47	3 24	12 18
30	18 04	13 25	7 35	15 04	18 51	13 19	6 45	15 14	19 51	13 11	5 41	15 26
40	20 20	15 53	9 53	18 05	21 06	15 45	9 04	18 17	22 05	15 34	7 59	18 34
50	22 35	18 21	12 12	21 04	23 21	18 11	11 23	21 20	24 19	17 58	10 18	21 40
	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	2 24 51	5 20 49	8 14 32	1124 03	2 25 36	5 20 36	8 13 43	1124 22	2 26 33	5 20 21	8 12 38	1124 46
10	27 06	23 16	16 53	27 01	27 51	23 02	16 04	27 22	28 47	22 44	14 59	27 50
20	29 22	25 43	19 15	29 57	3 0 06	25 26	18 26	0 0 21	3 01 01	25 06	17 21	0 00 53
30	3 1 38	28 09	21 39	0 2 52	2 21	27 51	20 49	3 18	03 15	27 28	19 45	03 53
40	3 54	6 0 35	24 03	5 45	4 36	6 0 15	23 14	6 14	05 29	29 50	22 10	06 52
50	6 11	3 00	26 29	8 37	6 52	2 38	25 40	9 08	07 43	6 02 11	24 36	09 49
	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 8 28	6 5 25	8 28 56	0 11 27	3 9 08	6 5 01	8 28 07	0 12 00	3 09 58	6 4 32	8 27 04	0 12 44
10	10 45	7 49	9 1 24	14 15	11 24	7 23	9 0 37	14 50	12 13	6 52	29 34	15 37
20	13 03	10 12	3 54	17 01	13 41	9 45	3 07	17 39	14 28	9 11	9 2 06	18 27
30	15 22	12 35	6 26	19 46	15 58	12 06	5 40	20 25	16 44	11 31	4 39	21 16
40	17 41	14 57	9 00	22 28	18 16	14 27	8 14	23 09	19 00	13 49	7 14	24 02
50	20 00	17 18	11 35	25 09	20 34	16 47	10 50	25 51	21 17	16 7	9 52	26 46
	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 22 20	6 19 39	9 14 12	0 27 48	3 22 53	6 19 06	9 13 29	0 28 31	3 23 34	6 18 25	9 12 31	0 29 27
10	24 41	21 59	16 51	1 0 25	25 12	21 25	16 09	1 1 09	25 51	20 42	15 13	1 2 07
20	27 03	24 19	19 31	3 00	27 32	23 44	18 51	3 45	28 09	22 59	17 57	4 44
30	29 25	26 38	22 14	5 33	29 53	26 01	21 35	6 20	4 00 28	25 15	20 43	7 20
40	4 1 48	28 56	24 58	8 05	4 2 14	28 18	24 21	8 52	02 47	27 30	23 31	9 53
50	4 11	7 1 14	27 45	10 35	4 36	7 00 35	27 09	11 23	05 07	29 46	26 22	12 25
	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 6 35	7 3 32	10 0 33	1 13 04	4 6 58	7 2 52	9 29 59	1 13 52	4 07 27	7 2 01	9 29 15	1 14 54
10	9 00	5 49	3 23	15 31	9 21	5 08	10 2 51	16 20	09 48	4 15	10 2 09	17 23
20	11 25	8 05	6 14	17 56	11 45	7 23	5 45	18 46	12 09	6 30	5 06	19 49
30	13 51	10 21	9 08	20 21	14 09	9 39	8 41	21 10	14 31	8 44	8 05	22 14
40	16 17	12 37	12 02	22 44	16 33	11 54	11 38	23 34	16 53	10 58	11 06	24 37
50	18 44	14 53	14 59	25 06	18 58	14 09	14 37	25 56	19 15	13 12	14 09	27 00
	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 21 11	7 17 09	1017 56	1 27 27	4 21 23	7 16 23	1017 38	1 28 17	4 21 38	7 15 26	1017 13	1 29 21
10	23 38	19 24	20 55	29 47	23 49	18 38	20 40	2 0 37	24 01	17 39	20 18	2 1 40
20	26 06	21 40	23 55	2 2 06	26 14	20 53	23 42	2 56	26 24	19 53	23 25	3 59
30	28 34	23 55	26 55	4 25	28 41	23 08	26 46	5 14	28 48	22 08	26 33	6 17
40	5 1 03	26 11	29 56	6 42	5 1 07	25 23	29 50	7 32	5 1 12	24 22	29 41	8 34
50	3 31	28 27	11 2 58	9 00	3 33	27 39	11 2 55	9 48	3 35	26 37	11 2 50	10 51

लग्न सारणी – साम्पातिक काल के आधार पर

	अक्षांश 18°58' (मुंबई)				अक्षांश 20°				अक्षांश 22°35' (कोलकाता)			
मि	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	2 13 47	5 6 00	7 28 13	11 6 00	2 14 14	5 6 00	7 27 45	11 6 00	2 15 23	5 6 00	7 26 36	11 6 00
10	16 02	8 22	8 0 28	9 12	16 29	8 21	8 0 01	9 14	17 37	8 18	28 50	9 19
20	18 16	10 44	2 44	12 24	18 43	10 42	2 16	12 28	19 50	10 37	8 1 06	12 38
30	20 30	13 06	5 01	15 35	20 56	13 03	4 33	15 41	22 03	12 55	3 21	15 57
40	22 44	15 28	7 19	18 45	23 09	15 24	6 51	18 53	24 15	15 13	5 38	19 14
50	24 57	17 50	9 37	21 55	25 22	17 45	9 09	22 04	26 27	17 31	7 56	22 30
	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	2 27 10	5 20 12	8 11 57	1125 03	2 27 35	5 20 05	8 11 29	1125 14	2 28 38	5 19 49	8 10 16	1125 45
10	29 23	22 33	14 18	28 09	29 48	22 25	13 49	28 23	3 0 50	22 07	12 36	28 58
20	3 1 37	24 54	16 40	0 1 14	3 2 00	24 45	16 12	0 1 29	3 01	24 24	14 58	0 2 09
30	3 50	27 14	19 04	4 17	4 13	27 05	18 35	4 34	5 12	26 41	17 22	5 17
40	6 03	29 35	21 29	7 18	6 26	29 24	21 00	7 36	7 24	28 58	19 47	8 23
50	8 17	6 1 54	23 55	10 17	8 39	6 1 43	23 27	10 36	9 35	6 1 14	22 14	11 27
	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 10 30	6 4 14	8 26 24	0 13 14	3 10 52	6 4 01	8 25 55	0 13 34	3 11 47	6 3 30	8 24 42	0 14 28
10	12 44	6 32	28 54	16 08	13 05	6 19	28 26	16 30	13 58	5 46	27 13	17 27
20	14 59	8 51	1 26	19 00	15 19	8 37	9 0 58	19 23	16 10	8 01	29 46	20 23
30	17 13	11 09	9 4 00	21 50	17 33	10 54	3 32	22 14	18 23	10 16	9 2 21	23 16
40	19 29	13 26	6 36	24 37	19 48	13 10	6 09	25 02	20 35	12 31	4 59	26 06
50	21 44	15 43	9 14	27 22	22 02	15 26	8 48	27 48	22 48	14 45	7 39	28 54
	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 24 00	6 17 59	9 11 54	1 0 05	3 24 18	6 17 42	9 11 29	1 0 31	3 25 01	6 16 58	9 10 21	1 1 39
10	26 16	20 15	14 37	2 45	26 33	19 57	14 12	3 12	27 15	19 11	13 06	4 21
20	28 33	22 31	17 22	5 24	28 49	22 12	16 58	5 51	29 29	21 24	15 54	7 01
30	4 0 51	24 46	20 09	8 00	4 1 06	24 26	19 46	8 27	4 1 43	23 37	18 44	9 38
40	3 09	27 01	22 59	10 34	3 23	26 40	22 36	11 01	3 58	25 49	21 37	12 13
50	5 27	29 15	25 51	13 06	5 40	28 54	25 30	13 34	6 13	28 01	24 33	14 46
	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 7 46	7 1 29	9 28 46	1 15 36	4 7 58	7 1 07	9 28 25	1 16 04	4 8 29	7 0 13	9 27 31	1 17 17
10	10 05	3 43	10 1 42	18 04	10 17	3 21	10 1 23	18 33	10 45	2 24	10 0 32	19 46
20	12 25	5 56	4 41	20 31	12 35	5 34	4 23	20 59	13 01	4 36	3 36	22 13
30	14 45	8 10	7 42	22 56	14 55	7 46	7 26	23 24	15 18	6 47	6 42	24 38
40	17 06	10 23	10 45	25 19	17 14	9 59	10 30	25 48	17 35	8 58	9 51	27 01
50	19 27	12 36	13 50	27 42	19 34	12 12	13 37	28 10	19 53	11 10	13 02	29 23
	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 21 48	7 14 49	1016 57	2 0 02	4 21 54	7 14 24	1016 45	2 0 31	4 22 10	7 13 21	1016 15	2 1 44
10	24 09	17 03	20 05	2 22	24 15	16 37	19 55	2 50	24 28	15 33	19 29	4 03
20	26 31	19 16	23 14	4 41	26 35	18 50	23 06	5 09	26 46	17 45	22 45	6 21
30	28 53	21 30	26 25	6 58	28 56	21 03	26 19	7 26	29 04	19 57	26 03	8 38
40	1 15	23 44	29 36	9 15	1 17	23 17	29 32	9 43	5 1 23	22 09	29 21	10 54
50	5 3 37	25 58	11 2 48	11 31	5 3 39	25 31	11 2 46	11 59	3 41	24 22	11 2 40	13 09

लग्न सारणी – साम्पातिक काल के आधार पर

	अक्षांश 25°				अक्षांश 26°29' (कानपुर)				अक्षांश 28°39' (दिल्ली)			
मि.	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	2 16 30	5 6 00	7 25 29	11 6 00	2 17 12	5 5 59	7 24 47	11 5 59	2 18 15	5 6 00	7 23 44	1106 00
10	18 43	8 16	27 43	9 25	19 24	8 14	27 00	9 28	20 26	8 12	25 56	1109 34
20	20 55	10 32	29 57	12 49	21 35	10 28	29 13	12 56	22 37	10 24	28 09	1113 08
30	23 06	12 48	8 2 12	16 13	23 46	12 43	8 1 28	16 23	24 46	12 36	0 23	1116 40
40	25 18	15 03	4 28	19 35	25 56	14 57	3 44	19 49	26 55	14 48	8 2 38	1120 12
50	27 28	17 19	6 46	22 57	28 06	17 11	6 01	23 14	29 04	17 00	4 54	1123 41
	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	2 29 39	5 19 34	8 9 05	1126 16	3 0 16	5 19 25	8 8 19	1126 36	3 1 12	5 19 12	8 7 11	1127 09
10	3 1 49	21 50	11 25	29 33	2 25	21 38	10 39	29 57	3 20	21 23	9 31	0000 34
20	3 59	24 05	13 46	0 2 49	4 34	23 52	13 00	0 3 15	5 28	23 35	11 51	0003 56
30	6 09	26 19	16 10	6 01	6 43	26 05	15 23	6 30	7 36	25 46	14 14	0007 15
40	8 19	28 34	18 35	9 11	8 52	28 18	17 48	9 42	9 43	27 57	16 39	0010 32
50	10 28	6 0 48	21 02	12 18	11 01	6 00 31	20 15	12 52	11 51	6 0 07	19 05	0013 44
	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 12 38	6 3 02	8 23 31	0 15 23	3 13 10	6 2 43	8 22 44	0 15 58	3 13 58	6 2 17	8 21 34	0016 54
10	14 49	5 15	26 02	18 24	15 19	4 55	25 15	19 01	16 06	4 28	24 06	0019 59
20	16 59	7 28	28 35	21 22	17 29	7 7	27 49	22 01	18 14	6 37	26 40	0023 02
30	19 09	9 41	9 1 11	24 18	19 38	9 19	9 00 25	24 58	20 21	8 47	29 16	0026 01
40	21 20	11 53	3 49	27 10	21 48	11 30	03 04	27 51	22 29	10 56	9 1 55	0028 56
50	23 31	14 05	6 30	29 59	23 58	13 40	05 45	1 0 42	24 38	13 05	4 38	0101 48
	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 25 43	6 16 17	9 9 14	1 2 46	3 26 08	6 15 51	9 8 30	1 3 29	3 26 46	6 15 14	9 7 23	0104 36
10	27 54	18 28	12 00	5 29	28 18	18 01	11 17	6 13	28 55	17 22	10 12	0107 22
20	4 0 06	20 39	14 50	8 10	4 00 29	20 11	14 08	8 55	4 1 04	19 30	13 04	0110 04
30	2 19	22 50	17 42	10 49	2 40	22 21	17 01	11 34	3 13	21 38	15 59	0112 43
40	4 31	25 01	20 37	13 24	4 52	24 30	19 58	14 10	5 22	23 46	18 58	0115 20
50	6 45	27 11	23 35	15 58	7 03	26 39	22 58	16 43	7 32	25 54	22 00	0117 54
	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 8 58	6 29 21	9 26 37	1 18 29	4 9 15	6 28 48	9 26 01	1 19 15	4 9 42	6 28 01	9 25 06	0120 25
10	11 12	7 1 31	29 41	20 58	11 28	7 00 57	29 07	21 44	11 52	7 0 09	28 15	0122 54
20	13 26	3 41	10 2 48	23 25	13 40	3 06	10 2 17	24 10	14 03	2 16	10 1 28	0125 21
30	15 40	5 51	5 58	25 50	15 53	5 15	5 29	26 35	16 14	4 24	4 44	0127 45
40	17 55	8 01	9 11	28 13	18 07	7 24	8 44	28 58	18 25	6 31	8 03	0200 08
50	20 10	10 11	12 26	2 0 35	20 20	9 34	12 02	2 1 20	20 36	8 39	11 26	0202 29
	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 22 25	7 12 21	1015 43	2 2 55	4 22 34	7 11 43	1015 22	2 3 40	4 22 48	7 10 47	1014 51	0204 48
10	24 41	14 31	19 03	5 14	24 48	13 52	18 45	5 58	24 59	12 55	18 18	0207 06
20	26 56	16 42	22 24	7 31	27 02	16 02	22 10	8 15	27 11	15 04	21 48	0209 22
30	29 12	18 53	25 47	9 47	29 16	18 13	25 36	10 31	29 23	17 13	25 19	0211 37
40	5 1 28	21 05	29 10	12 02	5 1 30	20 23	29 03	12 45	5 1 35	19 23	28 52	0213 51
50	3 44	23 17	11 2 35	14 17	3 45	22 35	02 31	14 59	3 48	21 33	11 2 26	0216 04

लग्न सारणी – साम्पातिक काल के आधार पर

	अक्षांश 30°				अक्षांश 30°55' (लुधियाना)				अक्षांश 35°			
मि.	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	2 18 56	5 6 00	7 23 04	11 6 00	2 19 23	5 5 59	7 22 35	11 5 59	2 21 34	5 6 00	7 20 26	11 6 00
10	21 06	8 10	25 15	9 38	21 33	8 09	24 46	9 40	23 41	8 05	22 34	9 54
20	23 16	10 21	27 27	13 15	23 42	10 19	26 58	13 20	25 47	10 11	24 43	13 48
30	25 25	12 32	29 40	16 52	25 50	12 29	29 11	16 59	27 53	12 16	26 54	17 41
40	27 33	14 42	8 1 55	20 27	27 58	14 38	8 1 25	20 37	29 58	14 21	29 06	21 31
50	29 41	16 53	4 10	24 00	3 00 06	16 48	3 40	24 13	3 2 02	16 26	8 1 19	25 19
	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 1 48	5 19 03	8 6 28	1127 31	3 2 12	5 18 57	8 5 57	1127 46	3 4 06	5 18 31	8 3 34	1129 04
10	3 55	21 13	8 46	0 0 59	4 19	21 06	8 15	0 01 16	6 10	20 36	5 50	0 2 45
20	6 02	23 23	11 07	4 24	6 25	23 15	10 35	4 43	8 13	22 41	8 09	6 22
30	8 09	25 33	13 29	7 46	8 31	25 24	12 57	8 07	10 16	24 46	10 29	9 55
40	10 16	27 43	15 53	11 04	10 37	27 33	15 21	11 27	12 19	26 50	12 52	13 23
50	12 22	29 52	18 20	14 19	12 43	29 41	17 48	14 43	14 22	28 55	15 17	16 47
	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 14 29	6 2 01	8 20 49	0 17 30	3 14 49	6 1 49	8 20 17	0 17 56	3 16 24	6 0 59	8 17 45	0 20 05
10	16 35	4 10	23 20	20 38	16 55	3 57	22 48	21 05	18 27	3 03	20 16	23 20
20	18 42	6 18	25 54	23 42	19 01	6 05	25 22	24 10	20 29	5 06	22 49	26 29
30	20 48	8 27	28 31	26 42	21 07	8 12	27 59	27 11	22 32	7 10	25 26	29 34
40	22 55	10 35	9 1 10	29 38	23 13	10 19	9 00 38	1 00 08	24 34	9 13	28 06	1 2 34
50	25 02	12 42	3 53	1 2 31	25 19	12 26	3 21	3 01	26 37	11 16	9 0 50	5 30
	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 27 10	6 14 50	9 6 39	1 5 20	3 27 26	6 14 33	9 6 08	1 5 51	3 28 40	6 13 19	9 3 38	1 8 22
10	29 17	16 57	9 28	8 06	29 32	16 40	8 58	8 37	4 0 43	15 22	6 30	11 09
20	4 1 25	19 04	12 21	10 49	4 1 39	18 46	11 51	11 20	2 46	17 25	9 26	13 53
30	3 33	21 11	15 18	13 29	3 46	20 52	14 48	14 00	4 50	19 28	12 26	16 33
40	5 41	23 18	18 18	16 05	5 54	22 58	17 49	16 37	6 53	21 30	15 31	19 10
50	7 50	25 24	21 22	18 39	8 01	25 04	20 54	19 11	8 57	23 33	18 40	21 44
	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 9 59	6 27 31	9 24 29	1 21 11	4 10 09	6 27 10	9 24 03	1 21 42	4 11 01	6 25 35	9 21 54	1 24 14
10	12 08	29 37	27 40	23 39	12 18	29 16	27 15	24 11	13 05	27 38	25 13	26 42
20	14 17	7 1 44	10 0 55	26 06	14 26	7 1 21	10 0 32	26 37	15 09	29 40	28 37	29 07
30	16 26	3 51	4 14	28 30	16 35	3 27	3 52	29 01	17 14	7 1 43	10 2 05	1 30
40	18 36	5 57	7 36	2 0 53	18 43	5 33	7 16	2 01 23	19 18	3 46	5 38	2 3 51
50	20 46	8 04	11 01	3 13	20 52	7 40	10 43	03 44	21 23	5 50	9 15	6 09
	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 22 56	7 10 11	1014 29	2 5 32	4 23 02	7 09 46	1014 13	2 06 02	4 23 28	7 7 53	1012 56	2 8 26
10	25 07	12 19	18 00	7 49	25 11	11 53	17 46	08 19	25 33	9 57	16 40	10 41
20	27 17	14 27	21 33	10 05	27 20	14 00	21 22	10 34	27 38	12 02	20 28	12 54
30	29 28	16 35	25 08	12 19	29 30	16 08	24 59	12 48	29 44	14 07	24 19	15 06
40	1 38	18 44	28 44	14 32	5 1 40	18 17	28 38	15 01	5 1 49	16 12	28 11	17 16
50	3 49	20 53	11 2 22	16 45	3 50	20 26	11 2 19	17 13	3 54	18 19	11 2 05	19 25

लग्न सारणी – साम्पातिक काल के आधार पर

	अक्षांश 40°				अक्षांश 45°				अक्षांश 50°			
मि	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	2 24 27	5 6 00	7 17 32	11 6 00	2 27 41	5 6 00	7 14 18	11 6 00	3 1 21	5 6 00	7 10 38	11 6 00
10	26 30	8 00	19 37	10 17	29 40	7 54	16 18	10 48	3 13	7 48	12 31	11 37
20	28 33	9 59	21 42	14 32	3 1 37	9 48	18 18	15 35	5 04	9 35	14 25	17 12
30	3 0 35	11 59	23 49	18 46	3 34	11 42	20 20	20 18	6 55	11 23	16 20	22 41
40	2 36	13 59	25 57	22 57	5 29	13 36	22 23	24 57	8 44	13 11	18 16	28 00
50	4 36	15 59	28 07	27 04	7 25	15 30	24 28	29 29	10 34	14 58	20 14	0 3 10
	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 6 36	5 17 58	8 0 18	0 1 06	3 9 20	5 17 24	7 26 34	0 3 55	3 12 22	5 16 46	7 22 14	0 8 07
10	8 35	19 58	2 31	5 03	11 14	19 17	28 43	8 13	14 10	18 34	24 16	12 52
20	10 34	21 57	4 47	8 55	13 08	21 11	8 0 53	12 22	15 58	20 21	26 19	17 23
30	12 33	23 57	7 04	12 40	15 01	23 05	3 06	16 23	17 46	22 09	28 25	21 41
40	14 31	25 56	9 24	16 20	16 55	24 58	5 22	20 15	19 33	23 56	8 0 33	25 46
50	16 29	27 55	11 47	19 53	18 48	26 51	7 40	23 58	21 20	25 43	2 45	29 39
	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 18 27	5 29 54	8 14 12	0 23 20	3 20 41	5 28 45	8 10 01	0 27 34	3 23 07	5 27 30	8 4 59	1 3 20
10	20 25	6 1 52	16 41	26 41	22 34	6 0 38	12 26	1 1 00	24 54	29 18	7 17	6 50
20	22 23	3 51	19 13	29 56	24 26	2 31	14 55	4 20	26 41	6 1 05	9 39	10 10
30	24 21	5 50	21 49	1 3 04	26 19	4 24	17 27	7 31	28 28	2 51	12 05	13 22
40	26 19	7 48	24 28	6 08	28 12	6 17	20 04	10 36	4 0 14	4 38	14 35	16 24
50	28 17	9 46	27 12	9 06	4 0 04	8 10	22 46	13 35	2 01	6 25	17 11	19 19
	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 0 15	6 11 44	9 0 00	1 11 59	4 1 57	6 10 02	8 25 32	1 16 27	4 3 48	6 8 12	8 19 53	1 22 07
10	2 13	13 42	2 54	14 47	3 50	11 55	28 25	19 14	5 34	9 59	22 40	24 48
20	4 12	15 40	5 52	17 31	5 43	13 48	9 1 23	21 56	7 21	11 45	25 35	27 24
30	6 10	17 38	8 55	20 11	7 35	15 41	4 28	24 32	9 08	13 32	28 38	29 55
40	8 08	19 36	12 04	22 46	9 28	17 33	7 40	27 05	10 55	15 19	9 1 49	2 2 21
50	10 07	21 34	15 19	25 18	11 22	19 26	10 59	29 33	12 42	17 05	5 09	4 43
	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 12 06	6 23 32	9 18 40	1 27 47	4 13 15	6 21 19	9 14 26	2 1 58	4 14 29	6 18 52	9 8 40	2 7 00
10	14 05	25 30	22 07	2 0 13	15 08	23 12	18 01	4 19	16 16	20 39	12 21	9 15
20	16 04	27 28	25 40	2 35	17 01	25 05	21 45	6 38	18 04	22 26	16 13	11 26
30	18 03	29 27	29 19	4 55	18 55	26 58	25 37	8 53	19 51	24 14	20 19	13 34
40	20 02	7 1 25	10 3 05	7 13	20 48	28 52	29 38	11 06	21 38	26 01	24 37	15 40
50	22 02	3 24	6 56	9 28	22 42	7 0 46	10 3 47	13 17	23 26	27 49	29 08	17 44
	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 24 01	7 5 24	10 10 54	2 11 41	4 24 36	7 2 40	10 8 05	2 15 25	4 25 13	6 29 37	10 3 52	2 19 45
10	26 01	7 24	14 56	13 53	26 30	4 35	12 30	17 32	27 01	7 1 26	8 50	21 45
20	28 00	9 24	19 03	16 02	28 24	6 30	17 03	19 36	28 49	3 15	13 59	23 43
30	5 0 00	11 25	23 14	18 11	5 0 18	8 26	21 41	21 40	5 0 36	5 05	19 19	25 40
40	2 00	13 27	27 27	20 17	2 12	10 23	26 25	23 41	2 24	6 55	24 47	27 35
50	4 00	15 29	11 1 43	22 23	4 06	12 20	11 1 11	25 42	4 12	8 46	11 0 22	29 29

लग्न सारणी – साम्पातिक काल के आधार पर

मि	अक्षांश 55°				अक्षांश 60°				संपूर्ण पृथ्वी के लिए			
	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे	0 घंटे	6 घंटे	12 घंटे	18 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 5 36	5 6 00	7 6 24	11 6 00	3 10 34	5 6 00	7 1 26	11 6 00	11 6 43	2 6 43	5 6 43	8 6 43
10	7 19	7 41	8 08	13 08	12 07	7 33	2 59	16 50	9 27	9 01	9 27	9 01
20	9 02	9 22	9 54	20 08	13 39	9 06	4 34	27 10	12 10	11 19	12 10	11 19
30	10 45	11 03	11 40	26 55	15 12	10 40	6 08	0 6 36	14 53	13 37	14 53	13 37
40	12 27	12 44	13 27	0 3 22	16 44	12 13	7 44	14 58	17 36	15 55	17 36	15 55
50	14 08	14 24	7 15 16	9 26	18 16	13 46	9 20	22 18	20 18	18 13	20 18	18 13
	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे	1 घंटे	7 घंटे	13 घंटे	19 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 15 49	5 16 05	7 17 06	0 15 07	3 19 48	5 15 20	7 10 57	0 28 41	23 00	2 20 32	5 23 00	20 32
10	17 30	17 46	18 58	20 24	21 20	16 53	12 35	1 4 15	25 41	22 51	25 41	22 51
20	19 11	19 27	20 51	25 18	22 51	18 26	14 14	9 08	28 22	25 11	28 22	25 11
30	20 51	21 07	22 47	29 51	24 23	19 59	15 55	13 28	00 1 01	27 32	6 1 01	27 32
40	22 31	22 48	24 45	1 4 03	25 54	21 32	17 37	17 21	3 40	29 53	3 40	29 53
50	24 11	24 28	26 45	7 58	27 26	23 05	19 21	20 52	6 18	3 2 15	6 18	9 2 15
	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे	2 घंटे	8 घंटे	14 घंटे	20 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	3 25 51	5 26 09	7 28 48	1 11 37	3 28 57	5 24 37	7 21 07	1 24 04	8 54	3 4 38	6 8 54	4 38
10	27 31	27 49	8 0 54	15 03	4 0 29	26 10	22 55	27 01	11 30	7 02	11 30	7 02
20	29 11	29 29	3 04	18 15	2 01	27 42	24 46	29 46	14 04	9 26	14 04	9 26
30	4 0 51	6 1 09	5 18	21 17	3 32	29 15	26 40	2 2 20	16 38	11 52	16 38	11 52
40	2 30	2 49	7 37	24 09	5 04	6 0 47	28 37	4 45	19 10	14 19	19 10	14 19
50	4 10	4 29	10 01	26 53	6 36	2 19	8 0 39	7 03	21 41	16 47	21 41	16 47
	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे	3 घंटे	9 घंटे	15 घंटे	21 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 5 50	6 6 09	8 12 30	1 29 29	4 8 08	6 3 51	8 2 45	2 9 15	24 11	3 19 15	6 24 11	19 15
10	7 30	7 49	15 07	2 1 59	9 40	5 23	4 56	11 21	26 40	21 45	26 40	21 45
20	9 10	9 29	17 50	4 22	11 12	6 55	7 14	13 22	29 08	24 17	29 08	24 17
30	10 50	11 09	20 42	6 41	12 45	8 27	9 39	15 20	1 1 35	26 49	7 1 35	26 49
40	12 30	12 49	23 44	8 55	14 17	9 59	12 14	17 14	4 00	29 22	4 00	29 22
50	14 10	14 29	26 57	11 05	15 50	11 30	14 58	19 05	6 25	4 1 57	6 25	10 1 57
	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे	4 घंटे	10 घंटे	16 घंटे	22 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 15 51	6 16 08	9 0 22	2 13 11	4 17 22	6 13 02	8 17 56	2 20 53	8 49	4 4 32	7 8 49	4 32
10	17 31	17 48	4 01	15 15	18 55	14 34	21 08	22 39	11 12	7 09	11 12	7 09
20	19 12	19 28	7 56	17 15	20 28	16 05	24 38	24 23	13 34	9 47	13 34	9 47
30	20 52	21 09	12 09	19 13	22 01	17 37	28 31	26 05	15 55	12 25	15 55	12 25
40	22 33	22 49	16 41	21 08	23 34	19 08	2 51	27 45	18 15	15 05	18 15	15 05
50	24 13	24 29	21 35	23 02	25 07	20 40	9 7 45	29 25	20 35	17 45	20 35	17 45
	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे	5 घंटे	11 घंटे	17 घंटे	23 घंटे
	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '	रा. ° '
0	4 25 54	6 26 10	9 26 52	2 24 53	4 26 40	6 22 12	9 13 19	3 1 03	22 55	4 20 26	7 22 55	20 26
10	27 35	27 51	10 2 33	26 43	28 13	23 43	19 42	2 40	25 14	23 08	25 14	23 08
20	29 16	29 33	8 38	28 32	29 46	25 15	27 01	4 16	27 32	25 51	27 32	25 51
30	5 0 57	7 1 15	15 05	3 0 20	5 1 20	26 48	10 5 24	5 51	29 50	28 33	29 50	28 33
40	2 38	2 57	21 51	2 06	2 53	28 20	14 50	7 26	2 2 08	5 1 17	8 2 08	11 1 17
50	4 19	4 40	28 52	3 51	4 26	29 53	25 09	9 00	4 26	4 00	4 26	4 00

पाठ–8

ग्रह स्पष्ट

कुण्डली निर्माण के इस पाठ में नवग्रहों के स्पष्ट अर्थात् रेखांश निकालने की विधि बताई जाएगी। नवग्रहों की जन्म समय पर राशि चक्र में क्या स्थिति थी अर्थात् ग्रह किस राशि में कितने अंशों पर गोचर कर रहे थे यह ग्रह स्पष्ट से जाना जाता है। इसके लिए हम पंचांग या एफेमेरिस का प्रयोग करते हैं।

भारतीय पंचांग या एफेमेरिस में ग्रहों की स्थिति प्रति दिन प्रातः 5:30 बजे की दी गई होती है। जिस दिन जितने बजे जातक का जन्म होता है उसके आधार पर हम पंचांग में तिथियों का चुनाव करते हैं। जैसे किसी व्यक्ति का जन्म यदि 4 मई को सायं 17:20 पर हुआ हो तो हम पंचांग से 4 मई के प्रातः 5:30 बजे की ग्रह स्थिति को नोट करेंगे तथा 5 मई को प्रातः 5:30 की ग्रह स्थिति को नोट करेंगे। यह समय अंतराल 24 घंटे का होगा। परंतु हमें सुबह 5:30 से शाम 17:20 अर्थात 11 घंटे 50 मिनट में ग्रह द्वारा चली गई दूरी का आकलन करना होगा। इसके लिए हमें गणित का सामान्य ऐकिक नियम लागू करना होता है। जिसके द्वारा हम 11 घंटे 50 मिनट में ग्रह द्वारा चली गई दूरी का आकलन कर सकते हैं। इस समय अंतराल में चली गई दूरी को 4 मई के प्रातः 5:30 बजे की ग्रह स्थिति में जोड़ देंगे तो हमें निश्चित जन्म समय अर्थात सायं 17:20 पर ग्रह की स्थिति ज्ञात हो जाएगी।

ग्रह स्पष्ट करने के लिए बाजार में विभिन्न पंचांग उपलब्ध हैं। परंतु एन.सी. लाहिरी द्वारा प्रकाशित एफेमेरिस को गणना की दृष्टि से सर्वशुद्ध एवं सर्वमान्य माना गया है तथा किसी भी गणना की शुद्धि के लिए इसको मानक माना जाता है। इन पंचांग और एफेमेरिस में ग्रह स्पष्ट पूरे वर्ष के लिए अर्थात 12 महीनों के लिए दिए होते हैं और यह ग्रह स्पष्ट प्रत्येक माह के लिए अलग–अलग पृष्ठों में दिए गए होते हैं। अतः जिस माह व वर्ष का जन्म हो उस वर्ष का पंचांग या एफेमेरिस द्वारा अमुक माह का पृष्ठ खोलकर ग्रह स्पष्ट प्राप्त किये जा सकते हैं।

यह एफेमेरिस दो प्रकार की उपलब्ध है– पहली, प्रतिवर्ष प्रकाशित होती है तथा दूसरी, कन्डेन्स्ड एफेमेरिस होती है जो पांच या दस वर्ष के आकड़ों के साथ उपलब्ध होती है इसमें ग्रहों की स्थिति प्रति दिन न होकर दो दिन के अंतराल पर होती है। प्रतिदिन की एफेमेरिस द्वारा 24 घंटे के समय अंतराल पर ग्रह स्पष्ट प्राप्त होते हैं जबकि कन्डेन्सड एफेमेरिस में यही ग्रह स्पष्ट 48 घंटे के समय अंतराल पर प्राप्त होते हैं। तात्पर्य यह है कि प्रतिवर्ष की एफेमेरिस द्वारा कन्डेन्सड एफेमेरिस की तुलना में अधिक शुद्ध गणना की जा सकती है।

जबकि पंचांग सिर्फ प्रतिवर्ष ही प्रकाशित होते हैं अतः इसमें आपको ग्रहों की स्थिति प्रतिदिन अर्थात 24 घंटे के समय अंतराल पर ही प्राप्त होती है। परंतु पंचांगों में प्रकाशित ग्रह स्पष्ट की स्थिति स्थानीय समय

पर भी निर्भर करती है। अतः जातक का जन्म जिस स्थान का है उसी स्थान से प्रकाशित पंचांग पर निर्भर रहना पड़ सकता है।

यदि कोई ऐसा पंचांग प्राप्त हो जिसमें ग्रह स्पष्ट की स्थिति स्थानीय समय को आधार मानकर न दी गई हो और एन.सी.लाहिरी द्वारा प्रकाशित एफेमेरिस के ग्रह स्पष्ट से मेल खाती हो तो ऐसा पंचांग ग्रह स्पष्ट की गणना प्रयोग में लाया जा सकता है। ऐसा पंचांग फ्यूचर पॉइंट दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'फ्यूचर पंचांग' है। अतः ग्रह स्पष्ट की गणना के लिए विद्यार्थी फ्यूचर पंचांग को भी प्रयोग में ला सकते हैं।

निकाले गये लग्न स्पष्ट दशम भाव स्पष्ट क्रमशः प्रथम भाव और दशम भाव के मध्य का रेखांश होता है। इसी प्रकार जन्म कुण्डली के सभी बारह भावों के मध्य रेखांश निकाले जायेंगे। इसके साथ–साथ बारहों भावों के (सन्धि) प्रारम्भिक रेखांश भी निकालना आवश्यक है जिससे हर भाव की लम्बाई और भाव मध्य उदित राशि का ज्ञान होगा।

उदाहरण 2– 30 जनवरी 2011 को समय 3:30 सायं पर जन्मे व्यक्ति के लिए नवग्रह स्पष्ट की गणना करें।

हल – दी गई सारणियां संपूर्ण पृथ्वी के लिए समय प्रातः 05:30 के आधार पर दी गई है। वांछित समय पर ग्रह स्पष्ट की गणना निम्न प्रकार करेंगे।

जन्म समय = 3:30 सायं = 15:30 घंटे

सारणी का आधारित समय = 05:30 घंटे

कुल समय अंतराल = 10 घंटे

पृष्ठ संख्या 68 के आधार पर,

31 जनवरी 2011, प्रातः 05:30 घंटे पर सूर्य स्पष्ट	=		9^s	16°	43'	46"
30 जनवरी 2011, प्रातः 05:30 घंटे पर सूर्य स्पष्ट	=	(-)	9^s	15°	42'	49"
24 घंटे में सूर्य स्पष्ट अंतर	=			1°	00'	57"

10 घंटे में सूर्य स्पष्ट अंतर = $\frac{1° 0' 57" \times 10h}{24 h}$

लौग सारणी प्रयोग करने पर = लौग (1° 0' 57") + लौग (10^h) - लौग (24^h)

लौग सारणी की सहायता से इसके मानों को पढ़ेंगे जो फ्यूचर पंचांग में दी गई हैं।

= 1.3730 + 0.3802-0.0 = 1.7532

अब हमको इसका एंटीलौग देखना होगा इसके लिए भी लौग सारणी ही देखेंगे। लेकिन इसको देखने

का तरीका उल्टा होगा अर्थात लौग सारणी में देखेंगे कि 1.7532 के साथ कितने अंश होते हैं। सारणी देखने पर ज्ञात होता है कि 1.7532 का निकटतम मान 0° 25' पर है। अर्थात 10 घंटे में सूर्य की गति 25' होगी।

एंटीलौग (1.7532) = 0° 25'

30 जनवरी 2011, प्रातः 05:30 घंटे पर सूर्य स्पष्ट	=	9^s	15°	42'	49"
10 घंटे में सूर्य की गति	=	(+)	0°	25'	49"
अभीष्ट सूर्य स्पष्ट	=	9^s	16°	07'	49"

इसी प्रकार हम अन्य ग्रहों का भी ग्रह स्पष्ट ज्ञात कर सकते हैं लेकिन यह याद रखना चाहिए कि वक्री ग्रहों के लिए ग्रह की गति को ग्रह स्पष्ट के मान में से जोड़ने की जगह घटाया जाएगा।

विदेश में जन्में जातक के ग्रह स्पष्ट विधि

विदेश में जन्में जातक की कुण्डली के ग्रह स्पष्ट करने से पहले जन्म समय की भारतीय मानक समय में बदलना होगा उसी अनुसार ग्रह स्पष्ट किये जायेंगे क्योंकि सारणी में भारतीय मानक अनुसार प्रातः 5 घं. 30 मि. पर ग्रह की स्थिति दी गई है।

उदाहरण :

जातक की जन्म तारीख 30.01.2011, समय 15 घं. 30 मि. स्थान न्यूयार्क

पहले न्यूयार्क मानक समय की भारतीय मानक समय में बदले

न्यूयार्क का मध्य रेखांश = 75^0 00′ पश्चिम

भारतीय मध्य रेखांश = 82^0 30′ पूर्व

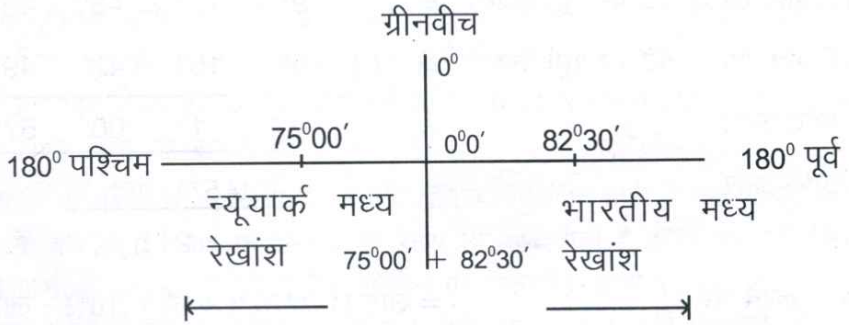

दोनों जोनल रेखांशों में अंतर $157^0$30′

पृथ्वी की अपनी धूरी पर चाल प्रति अंश 4 मि. है

इसलिए अंतर को 4 मि. से गुणा करें तो दो रेखांशों पर समय का अंतर मालूम होगा।

अर्थात् $157^0$30′ × 4 मि. = 628 मि. 120 सै. = 630 मि.

= 10 घंटे 30 मि.

क्योंकि न्यूयार्क भारत से पश्चिम में है इसलिए भारत की घड़ी का समय न्यूयार्क की घड़ी के समय से 10 घं. 30 मि. आगे है इसलिए न्यूयार्क के समय को भारतीय समय में बदलने के लिए 10 घं. 30 मि. जोड़ने होंगे।

		घं.	मि.	
जन्म समय	=	15	30	न्यूयार्क मानक समय
भारतीय समय संस्कार	=	(+) 10	30	
भारतीय समय	=	25	60	
	=	26	00	
	=	02	00	

अर्थात् यदि न्यूयार्क का समय सांय 15 घं. 30 मि. है तो उस वक्त भारत में अगले दिन प्रातः 02 घं. 00 मि. थे

भारतीय समय अनुसार जातक का जन्म 02 घं. 00 मि. 31. 01. 2011 को हुआ

ग्रह स्पष्ट इसी समय के लिए किये जायेंगे क्योंकि जिस सारणी की सहायता हम ले रहे हैं उसमें सारणी भारतीय समय प्रातः 5 घं. 30 मि. की दी है।

भारतीय समय अनुसार जातक का जन्म प्रातः 30 जनवरी के 5 घं. 30 मि. के बाद 26 घं. 00 मि. पर हुआ अर्थात् प्रातः 5 घं. 30 मि. के 20 घं. 30 मि. बाद हुआ।

30. 01. 2011 की प्रातः 5.30 चन्द्र स्पष्ट $= 7^{रा}\ 28^{\circ}\ 27'$

31. 01. 2011 की प्रातः 5.30 चन्द्र स्पष्ट $= 8^{रा}\ 11^{\circ}\ 15'$

24 घं. में चन्द्र की चाल $= 12^{\circ}\ 48'$

1 ,, ,, ,, $= \frac{12^{\circ}48'}{24 \text{ घं.}}$

20 घंटे 30 मि. ,, ,, ,, $\frac{12^{\circ}48' \times 20 \text{ घं. } 30 \text{ मि.}}{24 \text{ घं.}}$

लौग सारणी के अनुसार,

लौग $(12^{\circ}\ 48')$ + लौग (20 घं. 30 मि.) − लौग (24 घं.)

= 0.2730 + 0.0685 − 0 = 0.3415 यह संख्या लौग सारणी में $10^{\circ}\ 56'$ पर है

30. 1. 2011 को प्रातः 5.30 बजे चंद्र स्पष्ट $= 7^{रा}\ 28^{\circ}\ 27'$

1 घं. 38 मि. में चन्द्र का चाल $+ \quad 10^{\circ}\ 56'$

31. 01. 2011 को 2.00 बजे पर चन्द्र स्पष्ट $= 8^{रा}\ 9^{\circ}\ 23'$

इसी तरह से सभी ग्रहों को स्पष्ट करेंगे जैसा की स्वदेशी कुण्डली के लिए किया गया।

30.1.2011, 15.30 घंटे पर नव ग्रह स्पष्ट का गणित

विवरण	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
30. 1. 2011 को (5.30 घंटे के रेखांश)	7रा 28° 27′	9रा 17° 00′	8रा 28° 28′	11रा 07° 20′	8रा 00° 04′	5रा 28° 11′	8रा 08° 19′
31. 1. 2011 को (5.30 घंटे के रेखांश)	8रा 11° 15′	9रा 17° 47′	8रा 29° 58′	11रा 07° 32′	8रा 01° 11′	5रा 23° 11′	8रा 08° 19′
24 घंटे की ग्रह की चाल	14° 48′	0° 47′	1° 30′	0° 12′	1° 07′	0°	0°
24 घंटे की चाल का लौग(A)	0.2730	1.4863	1.2041	2.0792	1.3323	0.00	0.00
10 घंटे का लौग (B)	0.3802	0.3802	0.3802	0.3802	0.3802	0.3802	0.3802
24 घंटे का लौग (C)	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
कुल मान (A + B) - (C)	0.6532	1.8665	1.5843	2.4594	1.7125	0.00	0.00
10 घं. की चाल (कुल मान का एंटी लौग)	5° 20′	0° 19′	0° 37′	0° 5′	0° 28′	0.00	0.00
ग्रह के 30. 1. 2011 को (5.30 घंटे के रेखांश)	7रा 28° 27′	9रा 17° 00′	8रा 28° 28′	11रा 07° 20′	8रा 00° 04′	5रा 23° 11′	8रा 08° 19′
ग्रह के 15.30 घंटे पर स्पष्ट रेखांश	8रा 3° 47′	9रा 17° 19′	8रा 29° 05′	11रा 07° 25′	8रा 00° 32′	5रा 23° 11′	8रा 08° 19′

ग्रह स्पष्ट की तालिका

ग्रह	राशि अंश	राशि	अंश
सूर्य	09रा 16° 07′	मकर	16° 07′
चन्द्र	08रा 03° 47′	धनु	03° 47′
मंगल	09रा 17° 19′	मकर	17° 19′
बुध	08रा 29° 05′	धनु	29° 05′
गुरु	11रा 07° 25′	मीन	07° 25′
शुक्र	08रा 00° 32′	धनु	00° 32′
शनि	05रा 23° 11′	कन्या	23° 11′
राहु	08रा 08° 19′	धनु	08° 19′
केतु	02रा 08° 19′	मिथुन	08° 19′

वक्री ग्रह स्पष्ट की गणना :

वक्री ग्रह की गति में ग्रह के अंश निरंतर घटते हुए क्रम में होते हैं। जबकि मार्गी गति में ग्रह के अंश बढ़ते हुए क्रम में होते हैं। अतः वक्री ग्रह के अंश की गणना करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि पूर्व प्राप्त ग्रह स्पष्ट में, ग्रह द्वारा चली गई चाल को घटाया जाता है जबकि मार्गी गति में ग्रह के प्राप्त पूर्व अंशों में, ग्रह द्वारा चली गई चाल को जोड़ा जाता है।

दिए गए उदाहरण में बुध, गुरु और राहु वक्री ग्रह हैं अतः आप देखेंगे कि इन ग्रहों के प्राप्त पूर्व अंशों में, ग्रह द्वारा चली गई चाल को घटाया गया है। जबकि अन्य मार्गी ग्रहों में ग्रह द्वारा प्राप्त पूर्व अंशों में, ग्रह द्वारा चली गई चाल को जोड़ा गया है।

लग्न कुंडली का निर्माण :

लग्न कुंडली बनाने के लिए प्राप्त लग्न को आधार मानकर तथा ग्रह स्पष्ट के आधार पर ग्रहों को स्थित कर दिया जाता है। इस प्रकार जो कुंडली बनायी जाती है उसे लग्न कुंडली कहते हैं।

चंद्र कुंडली का निर्माण :

चंद्र कुंडली बनाने के लिए चंद्र राशि को लग्न मानकर जो कुंडली बनायी जाती है उसे चंद्र कुंडली कहते हैं।

ग्रह स्पष्ट–जनवरी, 2011

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:00:55 भारतीय समय प्रातः 05:30

ता.	वार	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो
		रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "	रा.: °: ': "
01	शनि	08:16:11:15	07:05:13:30	08:24:21:23	07:25:49:21	11:02:32:10	06:29:32:56	05:22:38:41	08:08:44:57	02:08:44:57	11:02:56:35	10:02:43:08	08:11:18:56
02	रवि	08:17:12:25	07:18:37:59	08:25:07:49	07:26:08:04	11:02:40:16	07:00:30:49	05:22:41:18	08:08:45:35	02:08:45:35	11:02:57:55	10:02:44:50	08:11:21:05
03	सोम	08:18:13:36	08:01:49:42	08:25:54:18	07:26:34:07	11:02:48:32	07:01:29:13	05:22:43:48	08:08:46:02	02:08:46:02	11:02:59:18	10:02:46:34	08:11:23:14
04	मंगल	08:19:14:46	08:14:48:05	08:26:40:50	07:27:06:49	11:02:56:57	07:02:28:06	05:22:46:12	08:08:46:02	02:08:46:02	11:03:00:44	10:02:48:20	08:11:25:23
05	बुध	08:20:15:57	08:27:32:49	08:27:27:23	07:27:45:29	11:03:05:30	07:03:27:27	05:22:48:30	08:08:45:26	02:08:45:26	11:03:02:13	10:02:50:06	08:11:27:32
06	गुरु	08:21:17:07	09:10:04:06	08:28:13:58	07:28:29:30	11:03:14:12	07:04:27:15	05:22:50:42	08:08:44:12	02:08:44:12	11:03:03:44	10:02:51:55	08:11:29:40
07	शुक्र	08:22:18:17	09:22:22:47	08:29:00:36	07:29:18:16	11:03:23:03	07:05:27:29	05:22:52:48	08:08:42:27	02:08:42:27	11:03:05:19	10:02:53:44	08:11:31:48
08	शनि	08:23:19:27	10:04:30:25	08:29:47:15	08:00:11:17	11:03:32:02	07:06:28:08	05:22:54:47	08:08:40:09	02:08:40:09	11:03:06:56	10:02:55:34	08:11:33:56
09	रवि	08:24:20:37	10:16:29:21	09:00:33:57	08:01:08:05	11:03:41:09	07:07:29:11	05:22:56:41	08:08:37:31	02:08:37:31	11:03:08:36	10:02:57:26	08:11:36:03
10	सोम	08:25:21:46	10:28:22:43	09:01:20:40	08:02:08:17	11:03:50:24	07:08:30:38	05:22:58:28	08:08:35:09	02:08:35:09	11:03:10:18	10:02:59:19	08:11:38:10
11	मंगल	08:26:22:55	11:10:14:16	09:02:07:25	08:03:11:30	11:03:59:47	07:09:32:27	05:23:00:09	08:08:33:31	02:08:33:31	11:03:12:03	10:03:01:13	08:11:40:16
12	बुध	08:27:24:03	11:22:08:18	09:02:54:12	08:04:17:25	11:04:09:19	07:10:34:37	05:23:01:43	08:08:32:40	02:08:32:40	11:03:13:51	10:03:03:09	08:11:42:22
13	गुरु	08:28:25:11	00:04:09:31	09:03:41:00	08:05:25:45	11:04:18:57	07:11:37:09	05:23:03:11	08:08:32:37	02:08:32:37	11:03:15:42	10:03:05:05	08:11:44:28
14	शुक्र	08:29:26:18	00:16:22:40	09:04:27:50	08:06:36:16	11:04:28:44	07:12:40:01	05:23:04:33	08:08:33:28	02:08:33:28	11:03:17:35	10:03:07:03	08:11:46:33
15	शनि	09:00:27:25	00:28:52:23	09:05:14:42	08:07:48:45	11:04:38:38	07:13:43:13	05:23:05:48	08:08:35:05	02:08:35:05	11:03:19:31	10:03:09:01	08:11:48:37
16	रवि	09:01:28:30	01:11:42:40	09:06:01:35	08:09:03:01	11:04:48:39	07:14:46:43	05:23:06:57	08:08:36:52	02:08:36:52	11:03:21:30	10:03:11:01	08:11:50:41
17	सोम	09:02:29:36	01:24:56:28	09:06:48:30	08:10:18:54	11:04:58:48	07:15:50:32	05:23:08:00	08:08:38:11	02:08:38:11	11:03:23:30	10:03:13:01	08:11:52:44
18	मंगल	09:03:30:40	02:08:35:10	09:07:35:26	08:11:36:15	11:05:09:03	07:16:54:39	05:23:08:56	08:08:38:41	02:08:38:41	11:03:25:34	10:03:15:03	08:11:54:47
19	बुध	09:04:31:44	02:22:38:05	09:08:22:24	08:12:54:57	11:05:19:26	07:17:59:04	05:23:09:46	08:08:38:03	02:08:38:03	11:03:27:40	10:03:17:06	08:11:56:49
20	गुरु	09:05:32:47	03:07:02:05	09:09:09:23	08:14:14:55	11:05:29:56	07:19:03:45	05:23:10:29	08:08:35:55	02:08:35:55	11:03:29:48	10:03:19:09	08:11:58:50
21	शुक्र	09:06:33:49	03:21:41:44	09:09:56:24	08:15:36:02	11:05:40:32	07:20:08:42	05:23:11:06	08:08:32:27	02:08:32:27	11:03:31:59	10:03:21:13	08:12:00:51
22	शनि	09:07:34:52	04:06:29:47	09:10:43:26	08:16:58:14	11:05:51:15	07:21:13:55	05:23:11:37	08:08:28:19	02:08:28:19	11:03:34:12	10:03:23:18	08:12:02:50
23	रवि	09:08:35:53	04:21:18:17	09:11:30:29	08:18:21:27	11:06:02:05	07:22:19:24	05:23:12:01	08:08:24:10	02:08:24:10	11:03:36:27	10:03:25:24	08:12:04:49
24	सोम	09:09:36:54	05:05:59:45	09:12:17:34	08:19:45:38	11:06:13:01	07:23:25:08	05:23:12:19	08:08:20:16	02:08:20:16	11:03:38:45	10:03:27:31	08:12:06:48
25	मंगल	09:10:37:55	05:20:28:13	09:13:04:41	08:21:10:43	11:06:24:03	07:24:31:05	05:23:12:30	08:08:17:04	02:08:17:04	11:03:41:05	10:03:29:39	08:12:08:45
26	बुध	09:11:38:55	06:04:39:51	09:13:51:48	08:22:36:40	11:06:35:12	07:25:37:17	05:23:12:35	08:08:15:13	02:08:15:13	11:03:43:27	10:03:31:47	08:12:10:42
27	गुरु	09:12:39:54	06:18:32:57	09:14:38:58	08:24:03:27	11:06:46:27	07:26:43:42	05:23:12:33	08:08:15:05	02:08:15:05	11:03:45:51	10:03:33:56	08:12:12:37
28	शुक्र	09:13:40:53	07:02:07:36	09:15:26:08	08:25:31:03	11:06:57:48	07:27:50:20	05:23:12:25	08:08:16:18	02:08:16:18	11:03:48:18	10:03:36:06	08:12:14:32
29	शनि	09:14:41:52	07:15:25:01	09:16:13:19	08:26:59:26	11:07:09:15	07:28:57:10	05:23:12:10	08:08:18:02	02:08:18:02	11:03:50:47	10:03:38:16	08:12:16:26
30	रवि	09:15:42:49	07:28:27:02	09:17:00:32	08:28:28:35	11:07:20:49	08:00:04:12	05:23:11:49	08:08:19:26	02:08:19:26	11:03:53:18	10:03:40:27	08:12:18:19
31	सोम	09:16:43:46	08:11:15:36	09:17:47:46	08:29:58:30	11:07:32:27	08:01:11:25	05:23:11:22	08:08:19:48	02:08:19:48	11:03:55:51	10:03:42:39	08:12:20:11

लॉग सारणी

Minute	Degrees or Hours													Minute
	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
0	-	1.3802	1.0792	9031	7781	6812	6021	5351	4771	4260	3802	3388	3010	0
1	3.1584	1.3730	1.0756	9007	7763	6798	6009	5341	4762	4252	3795	3382	3004	1
2	2.8573	1.3660	1.0720	8983	7745	6784	5997	5330	4753	4244	3788	3375	2998	2
3	2.6812	1.3590	1.0685	8959	7728	6769	5985	5320	4744	4236	3780	3368	2992	3
4	2.5563	1.3522	1.0649	8935	7710	6755.	5973	5310	4735	4228	3773	3362	2986	4
5	2.4594	1.3454	1.0614	8912	7692	6741	5961	5300	4726	4220	3766	3355	2980	5
6	2.3802	1.3388	1.0580	8888	7674	6726	5949	5289	4717	4212	3759	3349	2974	6
7	2.3133	1.3323	1.0546	8865	7657	6712	5937	5279	4708	4204	3752	3342	2968	7
8	2.2553	1.3258	1.0511	8842	7639	6698	5925	5269	4699	4196	3745	3336	2962	8
9	2.2041	1.3195	1.0478	8819	7622	6684	5913	5259	4690	4188	3737	3329	2956	9
10	2.1584	1.3133	1.0444	8796	7604	6670	5902	5249	4682	4180	3730	3323	2950	10
11	2.1170	1.3071	1.0411	8773	7587	6656	5890	5239	4673	4172	3723	3316	2944	11
12	2.0792	1.3010	1.0378	8751	7570	6642	5878	5229	4664	4164	3716	3310	2938	12
13	2.0444	1.2950	1.0345	8728	7552	6628	5866	5219	4655	4156	3709	3303	2933	13
14	2.0122	1.2891	1.0313	8706	7535	6614	5855	5209	4646	4148	3702	3297	2927	14
15	1.9823	1.2833	1.0280	8683	7518	6600	5843	5199	4638	4141	3695	3291	2921	15
16	1,9542	1.2775	1.0248	8661	7501	6587	5832	5189	4629	4133	3688	3284	2915	16
17	1.9279	1.2719	1.0216	8639	7484	6573	5820	5179	4620	4125	3681	3278	2909	17
18	1.9031	1.2663	1.0185	8617	7467	6559	5809	5169	4611	4117	3674	3271	2903	18
19	1.8796	1.2607	1.0153	8595	7451	6546	5797	5159	4603	4109	3667	3265	2897	19
20	1.8573	1.2553	1.0122	8573	7434	6532	5786	5149	4594	4102	3660	3258	2891	20
21	1.8361	1.2499	1.0091	8552	7417	6519	5774	5139	4585	4094	3653	3252	2885	21
22	1.8159	1.2445	1.0061	8530	7401	6505	5763	5129	4577	4086	3646	3246	2880	22
23	1.7966	1.2393	10030	8509	7384	6492	5752	5120	4568	4079	3639	3239	2874	23
24	1.7781	1.2341	1.0000	8487	7368	6478	5740	5110	4559	4071	3632	3233	2868	24
25	1.7604	1.2289	0.9970	8466	7351	6465	5729	5100	4551	4063	3625	3227	2862	25
26	1.7434	1.2239	0.9940	8445	1335	6451	5718	5090	4542	4055	3618	3220	2856	26
27	1.7270	1.2188	0.9910	8424	7318	6438	5706	5081	4534	4048	3611	3214	2850	27
28	1.7112	1.2139	0.9881	8403	7302	6425	5695	5071	4525	4040	3604	3208	2845	28
29	1.6960	1.2090	0.9852	8382	7286	6412	5684	5061	4516	4032	3597	3201	2839	29
30	1.6812	1.2041	0.9823	8361	7270	6398	5673	5051	4508	4025	3590	3195	2833	30
31	1.6670	1.1993	0.9794	8341	7254	6385	5662	5042	4499	4017	3583	3189	2827	31
32	1.6532	1.1946	0.9765	8320	7238	6372	5651	5032	4491	4010	3576	3183	2821	32
33	1.6398	1.1899	0.9737	8300	7222	6359	5640	5023	4482	4002	3570	3176	2816	33
34	1.6269	1.1852	0.9708	8279	7206	6346	5629	5013	4474	3994	3563	3170	2810	34
35	1.6143	1.1806	0.9680	8259	7190	6333	5618	5003	4466	3987	3556	3164	2804	35
36	1.6021	1.1761	0.9652	8239	7174	6320	5607	4994	4457	3979	3549	3157	2798	36
37	1.5902	1.1716	0.9625	8219	7159	6307	5596	4984	4449	3972	3542	3151	2793	37
38	1.5786	1.1671	0.9597	8199	7143	6294	5585	4975	4440	3964	3535	3145	2787	38
39	1.5673	1.1627	0.9570	8179	7128	6282	5574	4965	4432	3957	3529	3139	2781	39
40	1.5563	1.15M	0.9542	8159	7112	6269	5563	4956	4424	3949	3522	3133	2775	40
41	1.5456	1.1540	0.9515	8140	7097	6256	5552	4947	4415	3942	3515	3126	2770	41
42	1.5351	1.1498	0.9488	8120	7081	6243	5541	4937	4407	3934	3508	3120	2764	42
43	1.5249	1.1455	0.9462	8101	7066	6231	5531	4928	4399	3927	3501	3114	2758	43
44	1.5149	1.1413	0.9435	8081	7050	6218	5520	4918	4390	3919	3495	3108	2753	44
45	1.5051	1.1372	0.9409	8062	7035	6205	5509	4909	4382	3912	3488	3102	2747	45
46	1.4956	1.1331	0.9383	8043	7020	6193	5498	4900	4374	3905	3481	3096	2741	46
47	1.4863	1.1290	0.9356	8023	7005	6180	5488	4890	4365	3897	3475	3089	2736	47
48	1.4771	1.1249	0.9330	8004	6990	6168	5477	4881	4357	3890	3468	3083	2730	48
49	1.4682	1.1209	0.9305	7985	6975	6155	5466	4872	4349	3882	3461	3077	2724	49
50	1.4594	1.1170	0.9279	7966	6960	6143	5456	4863	4341	3875	3454	3071	2719	50
51	1.4508	1.1130	0.9254	7947	6945	6131	5445	4853	4333	3868	3448	3065	2713	51
52	1.4424	1.1091'	0.9228	7929	~930	6118	5435	4844	4324	3860	3441	3059	2707	52
53	1.4341	1.1053	0.9203	7910	6915	6106	5424	4835	4316	3853	3434	3053	2702	53
54	1.4260	1.1015	0.9178	7891	6900	6094	5414	4826	4308	3846	3428	3047	2696	54
55	1.4180	1.0977	0.9153	7873	6885	6081	5403	4817	4300	3838	3421	3041	2691	55
56	1.4102	1.0939	0.9128	7854	6871	6069	5393	4808	4292	3831	3415	3034	2685	56
57	1.4025	1.0902	0.9104	7836	6856	6057	5382	4798	4284	3824	3408	3028	2679	57
58	1.3949	1.0865	0.9079	7818	6841	6045	5372	4789	4276	3817	3401	3022	2674	58
59	1.3875	1.0828	0.9055	7800	6827	6033	5361	4780	4268	3809	3395	3016	2668	59
	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	

लॉग सारणी

Minute	Degrees or Hours											Minute
	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	
0	2663	2341	2041	1761	1498	1249	1015	0792	0580	0378	0185	0
1	2657	2336	2036	1756	1493	1245	1011	0788	0577	0375	0182	1
2	2652	2330	2032	1752	1489	1241	1007	0785	0573	0371	0179	2
3	2646	2325	2027	1747	'485	1237	1003	0781	0570	0368	0175	3
4	2640	2320	2022	1743	1481	1233	0999	0777	0566	0365	0172	4
5	2635	2315	2017	1738	1476	1229	0996	0774	0563	0361	0169	5
6	2629	2310	2012	1734	1472	1225	0992	0770	0559	0358	0166	6
7	2624	2305	2008	1729	1468	1221	0988	0767	0556	0355	0163	7
8	2618	2300	2003	1725	1464	1217	0984	0763	0552	0352	0160	8
9	2613	2295	1998	1720	1459	1213	0980	0759	0549	0348	0157	9
10	2607	2289	1993	1716	1455	1209	0977	0756	0546	0345	0154	10
11	2602	2284	1988	1711	1451	1205	0973	0752	0542	0342	0150	11
12	2596	2279	1984	1707	1447	1201	0969	0749	0539	0339	0147	12
13	2591	2274	1979	1702	1443	1197	0965	0745	0535	0335	0144	13
14	2585	2269	1974	1698	1438	1193	0962	0741	0532	0332	0141	14
15	2580	2264	1969	1694	1434	1190	0958	0738	0529	0329	0138	15
16	2574	2259	1965	1689	1430	1186	0954	0734	0525	0326	0135	16
17	2569	2254	1960	1685	1426	1182	0950	0731	0522	0322	0132	17
18	2564	2249	1955	1680	1422	1.178	0947	0727	0518	0319	0129	18
19	2558	2244	1950	1676	1417	1174	0943	0724	0515	0316	0126	19
20	2553	2239	1946	1671	1413	1170	0939	0720	0512	0313	0122	20
21	2547	2234	1941	1667	1409	1166	0935	0716	0508	0309	0119	21
22	2542	2229	1936	1662	1405	1162	0932	0713	0505	0306	0116	22
23	2536	2223	1932	1658	1401	1158	0928	0709	0501	0303	0113	23
24	2531	2218	1927	1654	1397	1154	0924	0706	0498	0300	0110	24
25	2526	2213	1922	1649	1392	1150	0920	0702	0495	0296	0107	25
26	2520	2208	1917	1645	1388	1146	0917	0699	0491	0293	0104	26
27	2515	2203	1913	1640	1384	1142	0913	0695	0488	0290	0101	27
28	2509	2198	1908	1636	1380	1138	0909	0692	0484	0287	0098	28
29	2504	2193	1903	1632	1376	1134	0906	0688	0481	0284	0095	29
30	2499	2188	1899	1627	1372	1130	0902	0685	0478	0280	0091	30
31	2493	2183	1894	1623	1368	1127	0898	0681	0474	0277	0088	31
32	2488	2178	1889	1618	1364	1123	0894	0678	0471	0274	0085	32
33	2483	2173	1885	1614	1359	1119	0891	0674	0468	0271	0082	33
34	2477	2168	1880	1610	1355	1115	0887	0671	0464	0267	0079	34
35	2472	2164	1875	1605	1351	1111	0883	0667	0461	0264	0076	35
36	2467	2159	1871	1601	1347	1107	0880	0663	0458	0261	0073	36
37	2461	2154	1866	1597	1343	1103	0876	0660	0454	0258	0070	37
38	2456	2149	1862	1592	1339	1099	0872	0656	0451	0255	0067	38
39	2451	2144	1857	1588	1335	1095	0869	0653	0448	0251	0064	39
40	2445	2139	1852	1584	1331	1091	0865	0649	0444	0248	0061	40
41	2440	2134	1848	1579	1326	1088	0861	0646	0441	0245	0058	41
42	2435	2129	1843	1575	1322	1084	0858	0642	0438	0242	0055	42
43	2430	2124	1838	1571	1318	1080	0854	0639	0434	0239	0052	43
44	2424	2119	1834	1566	1314	1076	0850	0635	0431	0236	0049	44
45	2419	2114	1829	1562	1310	1072	0847	0632	0428	0232	0046	45
46	2414	2109	1825	1558	1306	1068	0843	0628	0424	0229	0042	46
47	2409	2104	1820	1553	1302	1064	0839	0625	0421	0226	0039	47
48	2403	2099	1816	1549	1298	1061	0835	0622	0418	0-223	0036	48
49	2398	2095	1811	1545	1294	1057	0832	0618	0414	0220	0033	49
50	2393	2090	1806	1540	1290	1053	0828	0615	0411	0216	0030	50
51	2388	2085	1802	1536	1286	1049	0825	0611	0408	0213	0027	51
52	2382	2080	1797	1532	1282	1045	0821	0608	0404	0210	0024	52
53	2377	2075	1793	1528	1278	1041	0817	0604	0401	0207	0021	53
54	2372	2070	1788	1523	1274	1038	0814	0601	0398	0204	0018	54
55	2367	2065	1784	1519	1270	1034	0810	0597	0394	0201	0015	55
56	2362	2061	1779	1515	1266	1030	0806	0594	0391	0197	0012	56
57	2356	2056	1774	1510	1261	1026	0803	0590	0388	0194	0009	57
58	2351	2051	1770	1506	1257	1022	0799	0587	0384	0191	0006	58
59	2346	2046	1765	1502	1253	1018	0795	0583	0381	0188	0003	59
	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	

पाठ–9

लग्न एवं चलित कुण्डली बनाना

जन्मपत्री को चित्रित करने के लिए कई तरीके हैं लेकिन उत्तर भारतीय चित्रित तारीका सबसे अधिक प्रचिलत है इस तरीके में एक वर्ग या आयत के आमने–सामने के कोणों को एक सीधी रेखा से मिलाया जाता है। फिर इस वर्ग या आयत की चारो भुजाओं के मध्य विन्दु को आपस में इस प्रकार मिलाते हैं कि वह वर्ग बना लें जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।

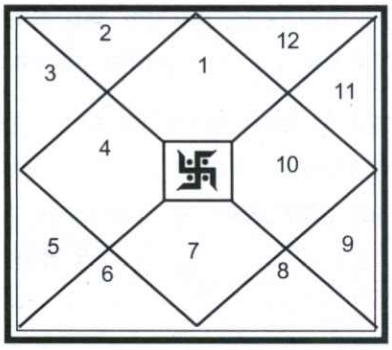

इस प्रकार इस चित्र में 12 खाने बने इन बारह कोष्टकों को बारह भाव कहा जाता है और ऊपरी भाव प्रथम भाव कहलाता है और विपरीत घड़ी की चाल से प्रथम, द्वितीय, तृतीय .....द्वादश भाव होते हैं।

प्रथम भाव को लग्न कहते हैं। जो लग्न स्पष्ट किया जाता है उस राशि की संख्या प्रथम भाव में लगाकर शेष भावों में विपरीत घड़ी चाल से सभी राशियों को रखा जाता है उपरान्त सभी ग्रहों की कुण्डली में ग्रह स्पष्ट की गई राशियों पर लगाकर कुण्डली तैयार हो जाती है।

उदाहरण– कुण्डली से किये गये गणित में लग्न $6^{रा}$ 25^{0} 57′ 26″ स्पष्ट हुआ अर्थात् 6 राशि पूरी हो चुकी थी और सातवीं राशि चल रही थी। सातवीं राशि राशि चक्र की तुला राशि होती है इसलिए लग्न तुला हुआ और क्रमशः राशियों की संख्या कुण्डली भावों में आ जायेगी और ग्रहों के ग्रह स्पष्ट की राशि में लगा देंगे। लग्न स्पष्ट और ग्रह स्पष्ट सारणी से जन्म कुण्डली इस प्रकार बनेगी।

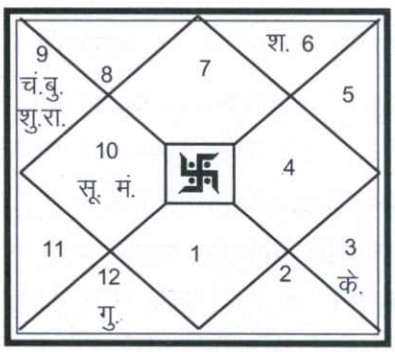

जन्म लग्न कुण्डली

चलित कुंडली का निर्माण :

चलित कुंडली बनाने के लिए ग्रहों के रेखांश को देखना होता है कि वह किस भाव के प्रारंभ और समाप्ति के बीच आते हैं। उसके आधार पर ग्रहों को स्थित किया जाता है। इसमें लग्न वहीं होता है जो लग्न कुंडली में होता है। परंतु ग्रहों को राशि के आधार पर न रखकर भाव के प्रारंभ और समाप्ति के आधार पर रखा जाता है। इस प्रकार चलित कुंडली से यह ज्ञात होता है कि ग्रह किस राशि में स्थित है।

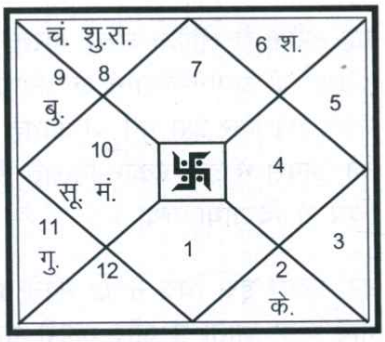

चलित कुंडली

पाठ–10

दशा साधन विधि

भारतीय ज्योतिष में घटनाओं के घटने के समय को बताने के लिए अर्थात् घटना किस समय घटेगी यह जानने के लिए दशा–पद्धति प्रचलित है। सबसे प्रचलित और प्रभावी दशा विंशोत्तरी दशा है।

सभी ग्रहों की महादशाओं का जोड़ 120 वर्ष होता है। हमारे महर्षियों ने (प्राकृति आचार–विचार के अनुसार) जीवन आयु 120 वर्ष मानी है।

महा दशा की गणना करने के लिए जन्म कालीन चन्द्रमा की स्थिति का आधार लिया जाता है। चन्द्र जन्म समय जिस राशि में रहता है वह जातक की जन्म राशि होती है और चन्द्र जिस नक्षत्र में रहता है वह जातक का नक्षत्र होता है। नक्षत्र का जो स्वामी ग्रह होता है उसी की दशा जन्म समय मानी जाती है।

सूर्यादि नवग्रहों की महादशा अवधि इस प्रकार हैः–

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
वर्ष	6	10	7	17	16	20	19	18	7

महादशाओं का क्रम भी इसी नक्षत्र क्रम से रहता है अर्थात् सूर्य के बाद चन्द्र, चन्द्र के बाद मंगल फिर राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र। अन्तर दशा इसी महादशा अवधि क अनुपात में उसी क्रम में ही रहती है जिस क्रम में महादशा चलती है।

जन्म समय महादशा की शेष अवधि निकालने की गणना इस प्रकार करेंगे।

जिस नक्षत्र में जातक का जन्म होता है उस नक्षत्र के भोगांश पर दशा की शेष अवधि निश्चित की जाती है। एक नक्षत्र का मान 13^0 20′ अर्थात 800′ कला होता है।

उदाहरण के लिए चंद्रस्पष्ट 3रा 9^0 00′ है। नक्षत्र तालिका के अनुसार चन्द्र पुष्य नक्षत्र में हुआ, पुष्य नक्षत्र का स्वामी ग्रह शनि है इसलिए जन्म समय जातक की शनि की दशा होगी। पुष्य नक्षत्र 3रा 3^0 20′ से प्रारम्भ होकर 3रा 16^0 40′ तक रहता है अगर देखा जाये तो चन्द्र के पुष्य नक्षत्र से निकलने के लिए 7^0 40′ और भ्रमण करना होगा अर्थात् शेष नक्षत्र भोग 460 कला हुआ।

नक्षत्र समाप्ति अंश– 3रा 16^0 40′

नक्षत्र भोगांश– 3रा 9^0 00′

शेष नक्षत्र अंश = 7^0 40′ = 460′ कला

पुष्य नक्षत्र का स्वामी शनि होता है अर्थात् जन्म समय शनि की दशा रहेगी क्योंकि शनि को 19 वर्ष की अवधि दी गई है जो एक नक्षत्र मान के बराबर है जो 800 कला है और जितना चक्र का नक्षत्र भोग शेष रह गया उसके अनुरूप दशा शेष रहेगी।

800 कला में शनि की अवधि = 19 वर्ष

1 " " = 19 / 800

460′ कला " = $\frac{19 \times 460}{800}$

= 10 वर्ष 11 माह 3 दिन

नोटः– एफेमेरीज की पिछले पृष्ठों में दी गई विंशोत्तरी दशा भोग्य की तालिका दी गई है। उसकी सहायता से भी आप दशा शेष निकाल सकते हैं।

अब जो जन्म तारीख दी गई हो उसमें शेष अवधि जोड़ देने से शेष रही दशा का समाप्ति काल आ जायेगा। उपरान्त क्रम से दशाओं की अवधि को जोड़ते जाएं और दशा की समाप्ति जान लें।

उदाहरण के लिए माना जन्म 1.2.1969 का है और शनि की शेष दशा 10 वर्ष 11 मास 3 दिन शेष रही है इसलिए जन्म तारीख में शनि के शेष वर्ष जोड़ दें।

	वर्ष	मास	दिन
जन्म तारीख =	1969	02	01
शनि दशा शेष वर्ष =	10	11	03
शनि दशा समाप्ति काल =	1980	01	04
बुध दशा अवधि =	17	00	00
क्रम से समाप्ति काल	1997	01	04
केतु दशा अवधि =	07	00	00
समाप्ति काल =	2004	01	04
शुक्र दशा अवधि =	20	00	00
समाप्ति काल =	2024	01	04
सूर्य दशा अवधि =	06	00	00
समाप्ति काल =	2030	01	04
चन्द्र दशा अवधि =	10	00	00
समाप्ति काल =	2040	01	04
मंगल दशा अविध =	07	00	00
समाप्ति काल =	2047	01	04

अन्तर्दशा साधन विधि

महादशा साधन के पश्चात् अन्तर्दशा साधन किया जाता है। महा दशा का समय दीर्घकालिक होने के कारण विभाजित कर लिया जता है। महादशा काल में सभी ग्रह अपनी–अपनी महादशा में फल देने की बजाय दूसरे ग्रह की अन्तर्दशा आने पर देते है।

अन्तर्दशा निकालने का सूत्र है कि जिस ग्रह की महादशा हो उसके दशा वर्ष को जिस ग्रह की अन्तर्दशा निकालनी हो के दशावर्षों से गुणा करके 120 से भाग दे देना चाहिए–

$$\text{सूत्र} = \frac{\text{महादशा वर्ष x जिस ग्रह की अन्तर्दशा निकालनी हो उसके दशा वर्ष}}{120}$$

जैसे सूर्य महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा निकालनी है तो–

$$\frac{\text{सूर्य महादशा वर्ष x चन्द्र महादशा वर्ष}}{120}$$

$$\text{अर्थात्} = \frac{6 \times 10}{120} = 6 \text{ मास चन्द्र अन्तर्दशा}$$

इसी प्रकार सभी ग्रहों की अन्तर्दशा निकाल लेनी चाहिए। आगे सुविधा के लिए अन्तर्दशा सारिणी दी जा रही है।

विंशोत्तरी महादशा में अन्तर्दशा

सूर्य महादशा में अन्तर्दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	3	6	4	10	9	11	10	4	0
दिन	18	0	6	24	18	12	6	6	0

चन्द्र महादशा में अन्तर्दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	0	0	1	1	1	1	0	1	0
मास	10	7	6	4	7	5	7	8	6
दिन	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल महादशा में अन्तर्दशा

ग्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं
वर्ष	0	1	0	1	0	0	1	0	0
मास	4	0	11	1	11	4	2	4	7
दिन	27	18	6	9	27	27	0	6	0

राहु महादशा में अन्तर्दशा

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं	मं
वर्ष	2	2	2	2	1	3	0	1	1
मास	8	4	10	6	0	0	10	6	0
दिन	12	24	6	18	18	0	24	0	18

अन्तर दशा साधन विधि भी उसी अनुपात में है जिस अनुपात में दशा की अवधि दी गई है।

इसके लिए एफेमेरीज में दी गई अन्तर्दशा तालिका की सहायता लेंगे।

शनि की महादशा भोग्यकाल 10 वर्ष 11 माह 3 दिन शेष रह गये थे अर्थात् शनि की 19 वर्ष की महा दशा के 8 वर्ष 0 माह 27 दिन जन्म समय बीत चुके थे।

अगर हम एफेमेरीज में विंशोत्तरी अन्तर्दशा तालिका में शनि महादशा में देखें तो 9 वर्ष 11 माह 21 दिन में शनि में शुक्र का अन्तर समाप्त हो जाता है। जन्म समय शनि महादशा 8 वर्ष 0 माह 27 दिन बीतेगी अर्थात् जन्म समय शनि की महादशा में शुक्र का अन्तर चल रहा था अगर 9 वर्ष 11 माह 21 दिन में से बीती शनि की दशा अर्थात 8 वर्ष 0 माह 21 दिन घटा दें तो शेष 1 वर्ष 10 माह 24 दिन रह जायेंगे जो शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर दशा का शेष भोग्य काल है।

इस भोग्य काल की जन्म तारीख में जोड़ देने से शनि में शुक्र के अन्तर का समाप्ति काल आ जायेगा।

❑

पाठ–11

षोडश वर्ग सिद्धांत

जन्म पत्रिका में षोडश वर्ग का बहुत महत्व होने से यहाँ प्रत्येक वर्ग को स्पष्ट करने की विधि बताई जा रही है। हमारे उदाहरण कुंडली की जन्म दिनांक 12–09–1987 समय सांय 04.22 स्थान ग्वालियर 26/14 उत्तर 78/10 पूर्व है। जिसकी लग्न एवं ग्रह स्पष्ट पुनः दिए जा रहे हैं।

लग्न	9ˢ–16°–58'–18"
सूर्य	4ˢ–25°–27'–43"
चन्द्र	0ˢ–26°–05'–52"
मंगल	4ˢ–19°–27'–00"
बुध	5ˢ–14°–00'–43"
गुरू	0ˢ–5°–7'–54"
शुक्र	5ˢ–0°–57'–47"
शनि	7ˢ–21°–18'–54"
राहु	11ˢ–09°–20'–12"
केतु	5ˢ–9°–20'–12"

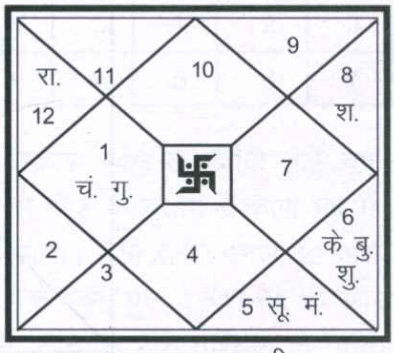

उदाहरण कुण्डली

होरा कुंडली

जब एक राशि या लग्न के 30 अंशों के दो भाग कर दिए जाते हैं तब होरा कुंडली बन जाती है। होरा कुंडली के दोनों भाग 15–15 अंश के होते हैं। लग्न के आधे भाग को होरा कहा जाता है। होरा बोधक चक्र से यह देखा जाता है कि किस राशि के किस भाग में किस ग्रह की होरा होती है। होरा कुंडली सूर्य एवं चन्द्र के स्वामित्व में रहती है। अतः होरा लग्न या तो सिंह होगी अथवा कर्क। होरा चक्र में सर्व प्रथम लग्न को देखें।

होरा चक्र

अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
0° से 15° तक	सू.	चं	सू.	चं	सू.	चं	सू.	चं	सू.	चं	सू.	चं
15° से 30°तक	चं	सू.	चं	सू.	चं	सू.	चं	सू.	चं	सू.	चं	सू.

उदाहरण कुंडली की लग्न मकर 16 अंश की होने से 15 अंश के ऊपर 30 अंश तक मकर के खाने में सूर्य की होरा सिंह आई। अतः होरा लग्न सिंह हुई। ग्रह स्थापन हेतु प्रत्येक ग्रह के अंशों को उनकी राशि में देखते हुए सूर्य या चन्द्र की होरा में स्थापित करें। जैसे सूर्य सिंह का 25 अंक का होने से चन्द्र की होरा में गया। चन्द्र मेष का 26 अंश का होने से चन्द्र की होरा में, मंगल सिंह का 19 अंश का चन्द्र की होरा में, बुध कन्या का 14 अंश का चन्द्र की होरा में, गुरू मेष का 5 अंश का सूर्य की होरा में, शुक्र कन्या का 0 अंश 57 कला का चन्द्र की होरा में, शनि वृश्चिक का 21 अंश का सूर्य की होरा में, राहु मीन का 9 अंश का चन्द्र की होरा में, केतु कन्या का 9 अंश का चन्द्र की होरा में स्थापित किया जाएगा। नीचे होरा कुंडली दी है।

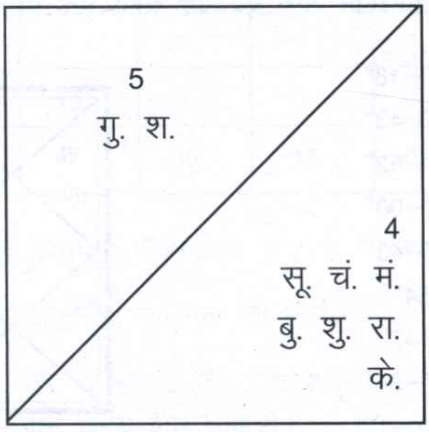

होरा कुंडली

होरा कुंडली से सुख सम्पत्ति एवं वैभव का विचार किया जाता है। चन्द्रमा के होरा के स्वामी पितर एवं सूर्य के होरा के स्वामी देवियाँ होती हैं।

होरा कुंडली पढ़ने के नियम

1. सूर्य की होरा होने पर बृहस्पति, सूर्य और मंगल शक्तिशाली होते हैं। चंद्र होरा वाले जातक के लिए चंद्रमा, शुक्र और शनि प्रभावी रहते हैं। बुध दोनों होराओं के लिए सशक्त होता है।
2. सम राशि वाले जातक के लिए चंद्रमा की होरा शक्तिशाली होती है जबकि विषम राशि के लिए सूर्य होरा प्रभावी रहती है।
3. ग्रह अगर होरा के आरंभिक एक तिहाई भाग में स्थित हो तो प्रभाव सर्वाधिक होता है। द्वितीय और तृतीय तिहाई भाग में ग्रह स्थित होने पर प्रभाव मध्यम से शून्य तक होता है।
4. सूर्य होरा में स्थित ग्रह को दशा, अंतर्दशा आदि में जातक का धनार्जन के प्रयास द्वारा होता है, जबकि चंद्र होरा वाले ग्रह की दशा में धनागम स्वतः बिना अधिक प्रयास के ही हो जाता है।

द्रेष्काण कुंडली

जब लग्न के तीन भाग समान अंशो के कर दिए जाते हैं तो तीसरे भाग को ही द्रेष्काण कहते हैं। एक द्रेष्काण दस अंश का होता है एवं एक राशि में 10–10 अंश के तीन द्रेष्काण बनते हैं। एक से दस तक प्रथम द्रेष्काण, दस से बीस तक द्वितीय एवं 20 से 30 अंश तक तृतीय द्रेष्काण होता है। प्रत्येक राशि में प्रथम द्रेष्काण उसी राशि का, दूसरा उस राशि से पाँचवी राशि का तथा तीसरा प्रथम राशि से नवम् राशि का होता है। द्रेष्काण बोधक चक्र नीचे दिया जा रहा है।

द्रेष्काण चक्र

अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं	क.	तु.	वृ	ध.	म.	कुं	मी.
0° से 10°	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
10° से 20°	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4
20° से 30°	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8

उदाहरण कुंडली की लग्न मकर 16 अंश की होने से द्वितीय द्रेष्काण मकर से पाँचवी राशि वृष की हुई। अतः द्रेष्काण लग्न वृष होगी। सूर्य सिंह के 25 अंश पर होने से सिंह के तृतीय द्रेष्काण मेष में जाएगा। चन्द्र मेष का 26 अंश अर्थात मेष के तृतीय द्रेष्काण धनु का होगा। इसी तरह मंगल 19 अंश सिंह के द्वितीय द्रेष्काण धनु का, बुध 14 अंश कन्या के द्वितीय द्रेष्काण मकर का, गुरू 5 अंश मेष के प्रथम द्रेष्काण मेष में, शुक्र 0 अंश 57 कला कन्या के प्रथम द्रेष्काण कन्या में, शनि 21 अंश वृश्चिक के तृतीय द्रेष्काण कर्क में, राहु 9 अंश मीन के प्रथम द्रेष्काण मीन एवं केतु 9 अंश कन्या के प्रथम द्रेष्काण कन्या में स्थापित किया जाएगा। नीचे द्रेष्काण कुंडली दी है।

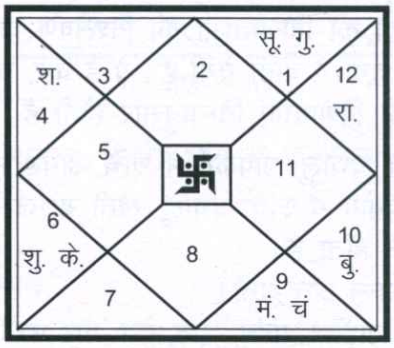

द्रेष्काण कुंडली

द्रेष्काण चक्र के प्रथम भाग के स्वामी नारद द्वितीय के अगस्त तथा तृतीय के दुर्वासा ऋषि होते हैं। द्रेष्काण कुंडली से जातक के भाई भावज का सुख अच्छे बुरे संबंधो का विचार तथा अच्छे बुरे कर्म फलों का विचार किया जाता है।

द्रेष्काण कुंडली पढ़ने के नियम

1. द्रेष्काण कुंडली द्वारा जातक के जीवन में सफलता और जीवनपथ का आकलन बहुत अच्छा होता है। जीवनयात्रा के प्रारंभ के समय उदित द्रेष्काण के परिणाम उनकी आकृति, कार्यप्रणाली और प्रकृति के अनुसार आंके जाते हैं।

   - अगर द्रेष्काण सुखकरी है और उसमें फूल, फल, रत्न, खजाना आदि हैं, शुभग्रहों की दृष्टि है तो यात्री धन कमाएगा।
   - अगर सशस्त्र है तो जीत होगी।
   - अशुभ ग्रह की दृष्टि होने पर यात्री की हार होगी।
   - अगर द्रेष्काण सर्प या बंधक है तो यात्री के लिए अपमान अथवा कैद या मृत्यु का संकेत है।

अगर दशा आरंभ के समय दफा 302 में मुकदमा चल रहा है या फैसले के समय पाश द्रेष्काण है तो फांसी होती है।

अगर चतुष्पाद द्रेष्काण हो और उस पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक के घर पर पशु की मृत्यु होती है। इस द्रेष्काण में पशु की खरीद नहीं करनी चाहिए।

2. प्रश्न ज्योतिष में द्रेष्काण का उपयोग चोर के चेहरे मोहरे, स्वभाव और अन्य बातें जानने के लिए किया जाता है। चोरी के प्रश्न के लिए निम्न तथ्य महत्वपूर्ण हैं:

लग्न : चोरी या सामान खोने का समय, किस दिशा में ले जाया गया है, स्थान जहां से सामान खोया है, बस्ती जहां पर सामान रखा गया है या छुपाया गया है।

लग्नेश : चोर की आयु और जाति
नवमांश : खोयी वस्तु की विशेषता
द्रेष्काण : चोर का स्वभाव और आकृति

3. द्रेष्काण द्वारा विभिन्न व्यक्तियों की विशेषताओं का विश्लेषण करने में सहायता मिलती है। इसके लिए प्रत्येक द्रेष्काण को चार वर्गों में बांटा गया है। ये हैं क्रूर, जलीय, सौम्य और मिश्रित। विभिन्न द्रेष्काणों में जन्में व्यक्तियों की विशेषताएं निम्नानुसार होती हैं :

   - क्रूर : दुष्ट प्रकृति, अवारा, दयालु, पापकर्म में रुचि, झगड़ालू
   - जलीय : दानी, आमोद–प्रमोद में रुचि, दयालु, खेती या जलीय पदार्थ (मछली आदि) से आय, विशाल शरीर और भावुक होता है।
   - सौम्य : दयालु, सुंदर, प्रसन्न और धनी।
   - मिश्रित : बुरा व्यवहार, विवाहेतर संबंध, दुष्ट नेत्र और उत्तेजित व्यवहार होता है।

4. अष्टम भाव के उदित द्रेष्काण के अनुसार मृत्यु के कारण का भविष्यकथन किया जाता है। अष्टम भाव के द्रेष्काण को मृत्युकारी द्रेष्काण समझा जाता है।

चतुर्थांश कुंडली

एक राशि के चतुर्थ भाग को चतुर्थांश कहते हैं। 30 अंश में चार का भाग देने पर 1 भाग 7 अंश 30 कला का होता है। दूसरा 15 अंश का, तीसरा 22 अंश 30 कला तथा चौथा 30 अंश तक रहता है।

उदाहरण कुंडली की लग्न मकर 16 अंश 58 कला की होने से चतुर्थांश के तृतीय भाग में मकर राशि के अन्तर्गत कर्क राशि का आया। यह कर्क राशि ही चतुर्थांश की लग्न होगी। सूर्य 25 अंश सिंह के चतुर्थ भाग में वृष का, चन्द्र मेष 26 अंश चतुर्थ भाग में मकर का, मंगल सिंह 19 अंश तृतीय भाग में कुम्भ राशि का, बुध कन्या में 14 अंश द्वितीय भाग में धनु का, गुरू मेष 5 अंश प्रथम भाग में मेष का, शुक्र कन्या 0 अंश 57 कला प्रथम भाग में कन्या का, शनि वृश्चिक 21 अंश तृतीय भाग में वृष का, राहु मीन 9 अंश द्वितीय भाग में मिथुन का एवं केतु कन्या के द्वितीय भाग में धनु का रहेगा। तदनुसार चतुर्थांश कुंडली निम्नानुसार बनेगी।

चतुर्थांश चक्र

अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
0 – 7°30'	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
7°30' – 15°	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3
15° –22°30'	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6
22°30'– 30°	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9

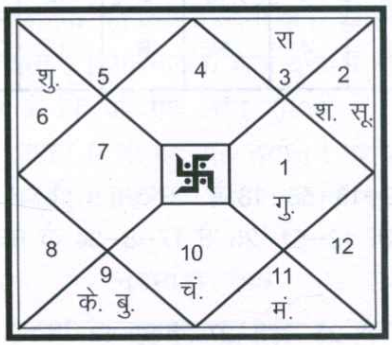

चतुर्थांश कुंडली

चतुर्थांश के प्रथम भाग के स्वामी सनकः, द्वितीय भाग के सनन्दनः तृतीय भाग के सनत्कुमार एवं चतुर्थ भाग के सनातनः स्वामी होते हैं।

चतुर्थांश कुंडली पढ़ने के नियम

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश, चतुर्थ भाव के कारक, चतुर्थांश लग्न, चतुर्थांश लग्न से चतुर्थ भाव का विचार जातक के सुख–साधन और भोग विलास के आकलन के लिए किया जाता है।

सप्तमांश चक्र

लग्न के यदि हम सात भाग करते हैं तो सातवें भाग को सप्तमांश कहते हैं। लग्न के 30 अंशों में 7 का भाग देने पर एक भाग 4 अंश 17 कला 8 विकला का होता है। द्वितीय भाग 4–17–8 से 8 अंश 34 कला 17 विकला तक, तृतीय भाग 8–34–17 से 12–51–25 तक, चतुर्थ भाग 12–51–25 से 17–8–34 तक, पंचम भाग 17–8–34 से 21–25–42 तक, षष्ठ भाग 21–25–42 से 25–42–51 तक एवं अंतिम सप्तम भाग 25–42–51 से 30–00–00 तक होता है।

सप्तमांश चक्र

अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
04^0 17' 08"	1	8	3	10	5	12	7	2	9	4	11	6
08^0 34' 17"	2	9	4	11	6	1	8	3	10	5	12	7
12^0 51' 25"	3	10	5	12	7	2	9	4	11	6	1	8
17^0 08' 34"	4	11	6	1	8	3	10	5	12	7	2	9
21^0 25' 42"	5	12	7	2	9	4	11	6	1	8	3	10
25^0 42' 51"	6	1	8	3	10	5	12	7	2	9	4	11
30^0 00' 00"	7	2	9	4	11	6	1	8	3	10	5	12

उदाहरण कुंडली की लग्न स्पष्ट 9–16–58–18 है। सप्तमाशं बोधक चक्र में मकर राशि के अन्तर्गत 16 अंश 58 कला 18 विकला चतुर्थ भाग 12–51–25 से 17–8–34 के मध्य मिले। मकर के नीचे चतुर्थ राशि तुला सप्तमांश चक्र की लग्न हुई।

सूर्य 4–25–27–43 अर्थात सिंह के 25 अंश 27 कला 43 विकला है जो सप्तमांश के पंचम भाग 21–25–42 से अधिक और षष्ठ भाग 25–42–51 से कम होने से सप्तमांश के छठे भाग में गया। सिंह का छठा भाग मकर का होने से सूर्य मकर राशि में स्थापित कर दिया। चन्द्र मेष का 26 अंश 5 कला 52 विकला का सप्तम भाग में होने से मेष के सातवें भाग की राशि तुला में गया। मंगल सिंह का 19 अंश 27 कला पंचम भाग में सिंह के धनु राशि में जाएगा। बुध कन्या का 14 अंश 0 कला 43 विकला का कन्या के चतुर्थ भाग की राशि मिथुन में, गुरू मेष का 5 अंश 7 कला 54 विकला का मेष के द्वितीय भाग वृष में जाएगा। शुक्र कन्या का 0 अंश 57 कला 47 विकला का कन्या के प्रथम भाग की राशि मीन का होगा। शनि वृश्चिक का 21 अंश 18 कला 54 विकला का वृश्चिक के पंचम भाग की राशि कन्या का रहेगा। राहु मीन का 9 अंश 20 कला 12 विकला का होने से मीन के तृतीय भाग की राशि वृश्चिक का और केतु कन्या के तृतीय भाग की राशि वृष में स्थापित होगा।

नीचे देखे उदाहरण कुंडली का सप्तमांश चक्र–

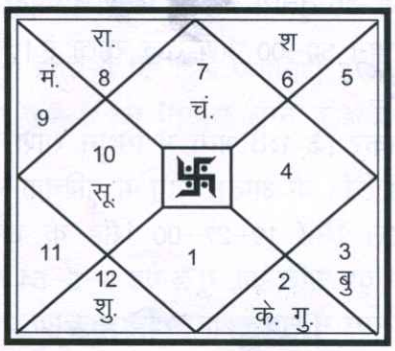

सप्तमांश चक्र

सप्तमांश के प्रथम भाग के अधिकारी क्षार, द्वितीय के क्षीर, तृतीय के दधि, चतुर्थ के आज्य, पंचम के इक्षुरस, षष्ठ के मद्य एवं सप्तम के शुद्ध जल विषम राशि में विशेष अधिकारी होते हैं। सम राशि में शुद्ध जल, मद्य, इक्षुरस आज्य, दधि, क्षीर एवं क्षार अधिकारी होते हैं। सप्तमांश कुंडली से पुत्र पौत्र पौत्री संतान का विचार किया जाता है।

नवमांश चक्र

फलित ज्योतिष में नवमांश चक्र का बहुत अधिक महत्व है। लग्न कुंडली जातक का शरीर है तो चन्द्र कुंडली मन है एवं नवमांश कुंडली जातक की आत्मा होती है। नवमांश कुंडली से जातक की पत्नि या जातिका के पति का विचार किया जाता है। पारिवारिक सुख दुख में भी नवमांश कुंडली से बहुत सहायता ली जाती है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि जो ग्रह लग्न कुंडली में जिस राशि का होता है, यदि उसी राशि का नवमांश कुंडली में भी आ जाता है तो वह ग्रह वर्गोत्तम हो जाता है और उस ग्रह के फल देने की क्षमता द्विगुणित हो जाती है। वर्गोत्तम ग्रह को फलित ज्योतिष में अच्छा माना गया है।

नवमांश चक्र

अशं	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
03^0 20'	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4
06^0 40'	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5
10^0 00'	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6
13^0 20'	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7
16^0 40'	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8
20^0 00'	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9
23^0 20'	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10
26^0 40'	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11
30^0 00'	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12

यदि हम लग्न अर्थात 30 अंश के 9 भाग करते हैं तो एक भाग 3 अंश 20 कला का आता है। यही एक नवमांश कहलाता है। द्वितीय भाग 6–40 तृतीय 10–00 चतुर्थ 13–20 पंचम 16–40 षष्ठम 20–00 सप्तम 23–20 अष्टम 26–40 एवं नवम भाग 30–00 अंश तक रहता है। पिछले उदाहरणों की तरह नवमांश चक्र इस प्रकार बनेगा।

लग्न मकर 16–58–18 जो कि मकर कि छठे भाग में मिथुन राशि के अन्तर्गत आने से नवमांश लग्न मिथुन हुई। सूर्य सिंह 25–27–43 सिंह के अष्टम भाग में वृश्चिक राशि का, चन्द्र मेष 26–5–52 मेष के अष्टम भाग वृश्चिक का, मंगल सिंह 19–27–00 सिंह के छठे भाग में कन्या का, बुध कन्या 14–00–43 कन्या के पंचम भाग में वृष राशि का, गुरू मेष 5–5–54 मेष के द्वितीय भाग में वृष का, शुक्र कन्या 0–57–47 कन्या के प्रथम भाग में मकर का, शनि वृश्चिक 21–18–54 वृश्चिक के सप्तम भाग में मकर का, राहु मीन 9–20–12 मीन के तृतीय भाग कन्या का एवं केतु कन्या के तृतीय भाग मीन राशि में स्थापित होगा। नीचे नवमांश चक्र दिया जा रहा है।

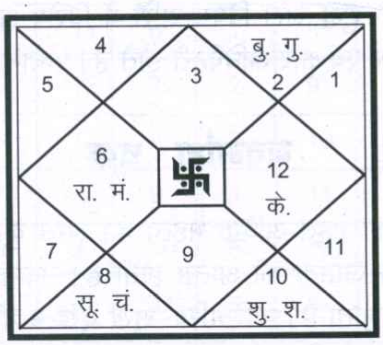

नवमांश चक्र

नवमांश में प्रत्येक नवमांश के स्वामी क्रम से देवता, नर, राक्षस, एवं देवता, नर, राक्षस, तथा देवता, नर, राक्षस होते हैं।

नवमांश कुंडली पढ़ने के नियम

किसी भी व्यक्ति के जीवन में सफलता का मूलाधार विवाहित जीवन होता है। इसी कारण कालचक्र में लग्न के सम्मुख भाव को विवाह के लिए निर्धारित किया गया है। जातक के अपने जीवन साथी से मानसिक तारतम्य का अनुमान कुंडली के लग्न/चंद्र और नवमांश कुंडली के लग्न/चंद्र के बीच संबंध के आधार पर किया जाता है। विवाह वरदान होता है तो कभी–कभी अभिशाप भी बन जाता है।

1. सप्तम भाव, सप्तमेश और सप्तम के कारक, चंद्र और संबंधित भाव लग्न (स्वयं का स्वास्थ्य), द्वितीय भाव (परिवार), चतुर्थ भाव (घरेलू शांति और जीवन में प्रसन्नता), पंचम भाव (संतान), अष्टम भाव (यौन सुख), द्वादश भाव (शैया सुख), नवमांश में संबंधित ग्रहों के बली होने पर, उन पर शुभ प्रभाव होने पर जातक का विवाह उचित समय पर होता है और विवाहित जीवन सुखी होता है।

2. अगर उपरोक्त सब गुण निर्बल है, ग्रह नीच का, अस्त, दुःस्थान में स्थित, नवमांश में नीच का या दूषित है तो विवाहित जीवन असफल रहता है।

3. नवमांश कुंडली इतनी महत्वपूर्ण होती है कि कुछ ज्योतिषी इसका अध्ययन लग्न कुंडली के समान करते हैं। इसी कारण नवमांश कुंडली का निर्माण लग्न कुंडली के साथ ही किया जाता हैं

दशमांश कुंडली

लग्न के दस भाग करने पर एक भाग तीन अंश का होता है। इसी को दशमांश अर्थात दसम अंश कहते हैं। दशमांश चक्र में विषम राशियों में उसी राशि के दशमांश से आरंभ होता है। जैसे मेष मिथुन सिंह तुला धनु एवं कुम्भ विषम राशियाँ हैं और इनमें पहला दशमांश इन्ही राशियों का रहता है। सम राशियों में उस राशि से नवम राशि से प्रारंभ होकर क्रम से आगे चलता है।

दशमांश चक्र

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
3°	1	10	3	12	5	2	7	4	9	6	11	8
6°	2	11	4	1	6	3	8	5	10	7	12	9
9°	3	12	5	2	7	4	9	6	11	8	1	10
12°	4	1	6	3	8	5	10	7	12	9	2	11
15°	5	2	7	4	9	6	11	8	1	10	3	12
18°	6	3	8	5	10	7	12	9	2	11	4	1
21°	7	4	9	6	11	8	1	10	3	12	5	2
24°	8	5	10	7	12	9	2	11	4	1	6	3
27°	9	6	11	8	1	10	3	12	5	2	7	4
30°	10	7	12	9	2	11	4	1	6	3	8	5

उदाहरण लग्न मकर 16 अंश 58 कला 18 विकला की है। जो कि दशमांश बोधक चक्र में मकर के खाने में देखने पर षष्ठ भाग में कुम्भ राशि आती है, यह कुम्भ राशि ही दशमांश लग्न होगी। सूर्य सिंह के 25 अंश पर है। सिंह का नवम भाग 1 होने से सूर्य मेष राशि में गया। चन्द्र मेष का 26 अंश का मेष के नवम भाग धनु में गया। मंगल सिंह का 19 अंश का सिंह के सप्तम भाग कुम्भ का होगा, बुध कन्या में 14 अंश का कन्या के पंचम भाग कन्या राशि का ही रहेगा। गुरू मेष का 5 अंश पर मेष के द्वितीय भाग में वृष राशि का होगा। शुक्र कन्या राशि में 0 अंश 57 कला का होने से कन्या के प्रथम भाग की राशि वृष का रहेगा। शनि वृश्चिक में 21 अंश 18 कला का होने से वृश्चिक के अष्टम भाग की राशि कुम्भ में, राहु मीन का 9 अंश 20 कला का होने से मीन के चतुर्थ भाग की राशि कुम्भ का एवं केतु कन्या के चतुर्थ भाव की राशि सिंह का होगा। नीचे उदाहरण कुंडली का दशमांश चक्र दे रहे हैं।

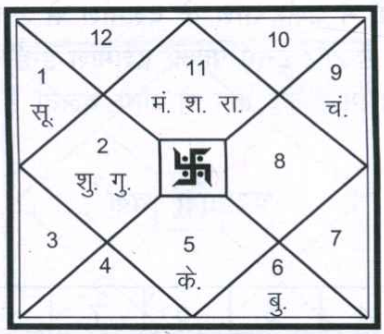

दशमांश चक्र

दशमांश चक्र के प्रत्येक भाग के स्वामी विषम राशि में क्रम से इन्द्रः अग्निः यमः राक्षसः वरूणः मरूतः कुबेरः इशानः ब्रह्मा एवं अनंतः होते हैं। सम राशि में प्रथम दशमांश से अन्त तक क्रमानुसार अनन्त, ब्रह्मा, ईशान, कुबेर, मारूत, वरूण, राक्षस, यम, अग्नि एवं इन्द्र होते हैं।

दशमांश चक्र से जातक की आजीविका, पदोन्नति, कर्म एवं अधिकार प्राप्ति का विचार किया जाता है।

दशमांश कुंडली पढ़ने के नियम

1. दशमांश कुंडली का लग्न बहुत महत्वपूर्ण होता है। लग्न पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तो वह बली होता है। अगर लग्न कुंडली भी बली है तो जातक की कार्यक्षेत्र में नींव मजबूत होती है।
2. बली सूर्य उपचय भावों (3,6,10,11) में स्थित हो, बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक कार्यक्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करता है।
3. दशा स्वामी लग्न कुंडली मेंबली हो तो कार्यक्षेत्र में सफलता मिलती है।, परंतु अगर वह दशमांश में निर्बल हो तो अशुभ अंतर्दशा अवधि में अनिश्चितता बनी रहती है। अंतर्दशा स्वामी यदि दशमांश

कुंडली में दशा स्वामी से प्रतिकूल स्थिति में हो और अशुभ ग्रहों द्वारा दूषित हो तो वांछित परिणाम में बाधाएं आ जाती है।

4. दशमांश में दशम भाव में स्थित ग्रह अपनी दशा/अंतर्दशा की अवधि में जातक को कार्यक्षेत्र में सफलता दिलाते हैं।
5. दशमांश में दशम भाव में कोई ग्रह स्थित नहीं हो तो उसके स्वामी की दशा में जातक सम्मानित होता है।
6. दशमांश में दशम भाव के स्वामी पर दृष्टि डालने वाले ग्रह का भी कार्य क्षेत्र के लिए विचार करना चाहिए।
7. दशमांश कुंडली में केंद्रस्थ ग्रहों की दशा/अंतर्दशा आदि जातक के कार्यक्षेत्र के लिए मील का पत्थर साबित होती हैं।

द्वादशांश कुंडली

एक लग्न अर्थात 30 अंश के बारह भाग किए जाएं तो एक भाग 2 अंश 30 कला का होगा। इसमें पहला द्वादशांश उसी राशि का होगा, जैसे मेष में पहला द्वादशांश मेष का द्वितीय वृष का आदि। इसी तरह वृष में वृष का द्वितीय मिथुन का इत्यादि।

द्वादशांश चक्र

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
2°30'	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
5°00'	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1
7°30'	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2
10°00'	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3
12°30'	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4
15°00'	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5
17°30'	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6
20°00'	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7
22°30'	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8
25°00'	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9
27°30'	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
30°00'	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11

उदाहरण कुंडली की लग्न मकर के 16 अंश 58 कला 18 विकला की है। द्वादशांश बोधक चक्र में मकर राशि के अन्तर्गत देखा तो यह मकर के सप्तम भाग में कर्क राशि के अन्तर्गत प्राप्त हुई। अतः कर्क राशि द्वादशांश की लग्न होगी। सूर्य सिंह 25–27–43 होने से सिंह राशि के ग्यारहवे भाग में मिथुन में, चन्द्र मेष के 26–5–52 होने से मेष के ग्यारवे भाग कुम्भ के, मंगल सिंह में 19–27–0 अंश के होने से सिंह के आठवे भाग मीन राशि में, बुध कन्या राशि में 14–00–43 अंश पर कन्या के छठे भाग कुम्भ राशि में, गुरू मेष राशि में 5–7–54 अंश होने से मेष के तृतीय भाग मिथुन राशि में, शुक्र कन्या राशि में 0–57–47 अंश में कन्या के प्रथम भाग कन्या राशि में, शनि वृश्चिक राशि के 21–18–54 के अनुसार वृश्चिक के छठे भाग कर्क राशि में, राहु मीन में 9–20–12 अंश पर मीन के चतुर्थ भाग मिथुन राशि में एवं केतु कन्या के चतुर्थ भाग धनु राशि में रहेंगे। उदाहरण कुंडली नीचे दी गई है।

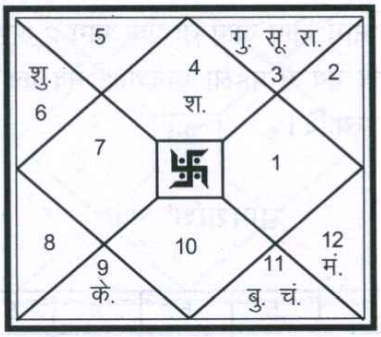

द्वादशांश चक्र

द्वादशांक चक्र के प्रथम भाग से अन्तिम भाग तक के स्वामी क्रमानुसार गणेश, अश्विनी कुमार, यम, अहिः पुनः गणेश, अश्विनीकुमार, यम, अहिः एवं गणेश अश्विनीकुमार, यम, अहिः होते हैं।

षोडशांश चक्र

यदि एक राशि के 30 अंशो को बराबर 16 भागों में विभाजित करेंगे तो प्रत्येक भाग 1 अंश 52 कला 30 विकला का होगा। षोडशांश चक्र राशियों के स्वभाव के अनुसार तीन भागों में विभक्त है। चर, स्थिर एवं द्विस्वभाव, जो कि राशियों के नैसर्गिक गुण है। चर राशियां मेष, कर्क, तुला, एवं मकर हैं, स्थिर राशिया वृष, सिंह, वृश्चिक एवं कुम्भ हैं तथा मिथुन, कन्या, धनु, एवं मीन द्विस्वभाव राशियाँ हैं। चर राशियों में षोडशांश मेष से प्रारंभ होता है। स्थिर राशि में सिंह से तथा द्विस्वभाव राशियों में धनु से प्रारंभ होकर क्रमानुसार चलता है।

षोडशांश चक्र

अंश क. विक.	चर राशि में मेष कर्क तुला मकर	स्थिर राशि में वृष सिंह वृश्चिक कुंभ	द्विस्वभाव राशि में मिथुन कन्या धनु मीन
01° 52' 30"	1	5	9
03° 45' 00"	2	6	10
05° 37' 30"	3	7	11
07° 30' 00"	4	8	12
09° 22' 30"	5	9	1
11° 15' 00"	6	10	2
13° 07' 30"	7	11	3
15° 00' 00"	8	12	4
16° 52' 30"	9	1	5
18° 45' 00"	10	2	6
20° 37' 30"	11	3	7
22° 30' 00"	12	4	8
24° 22' 30"	1	5	9
26° 15' 00"	2	6	10
28° 07' 30"	3	7	11
30° 00' 00"	4	8	12

उदाहरण कुंडली मकर लग्न की है जो कि 16 अंश 58 कला 18 विकला पर है। षोडशांश बोधक चक्र में देखने पर ज्ञात हुआ है कि मकर लग्न के खाने में चर राशि के अन्तर्गत यह अंशादि दशम भाग में मकर राशि के प्राप्त हुए। अतः षोडशांश कुंडली मकर लग्न की बनेगी। सूर्य सिंह राशि में 25–27–43 अंश होने से स्थिर राशि के अन्तर्गत 14वें भाग में कन्या राशि का, चन्द्र मेष में 26–5–52 पर चर राशि में 14वें भाग में वृष राशि में, मंगल सिंह का 19–27–0 होने पर स्थिर राशि के 11 वें भाग मिथुन का, बुध कन्या राशि में 14–00–43 पर द्विस्वभाव राशि के 8 वें भाग में कर्क का, गुरू मेष में 5–7–54 अंश पर चर राशि के तृतीय भाग में मिथुन राशि का, शुक्र कन्या राशि में 0–57–47 होने से द्विस्वभाव कन्या के प्रथम भाग में धनु का, शनि वृश्चिक स्थिर राशि में 21–18–54 अंश का होने से स्थिर राशि के बारहवें भाग में कर्क का तथा राहु द्विस्वभाव राशि मीन का 9–20–12 है जोकि द्विस्वभाव राशि के 5 वें भाव मेष में रहेगा तथा केतु भी द्विस्वभाव राशि के पांचवे भाग में होने से मेष में ही होगा। नीचे उपरोक्त उदाहरण की षोडशांश कुंडली दी जा रही है।

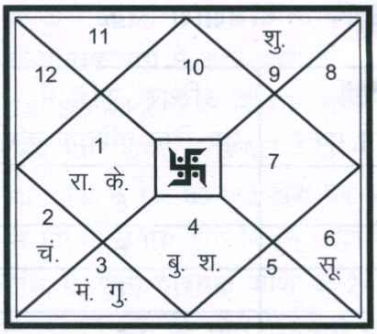

षोडशांश कुंडली

त्रिशांश कुंडली

लग्न के 30 वें भाग को त्रिशांश कहते हैं। विषम राशियाँ मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु एवं कुम्भ तथा सम राशियाँ वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर एवं मीन हैं। विषम राशि में त्रिशांश बोधक चक्र अलग रहता है तथा सम राशियों में अलग होता है। अतः विषम सम के हिसाब से इसका निर्णय करना होगा।

त्रिशांश चक्र

विषम राशि का त्रिशांश चक्र						
अंश	मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कु.
5^0	1	1	1	1	1	1
10^0	11	11	11	11	11	11
18^0	9	9	9	9	9	9
25^0	3	3	3	3	3	3
30^0	7	7	7	7	7	7

सम राशि का त्रिशांश चक्र						
अंश	वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मी.
5^0	2	2	2	2	2	2
12^0	6	6	6	6	6	6
20^0	12	12	12	12	12	12
25^0	10	10	10	10	10	10
30^0	8	8	8	8	8	8

उदाहरण लग्न मकर सम राशि की है। जिसके 17–58–18 अंश व्यतीत हो चुके थे। सम त्रिशांश बोधक चक्र में देखा तो यह अंशादि मकर के तृतीय भाग में मीन राशि के अन्तर्गत प्राप्त हुए। मीन राशि ही त्रिशांश लग्न बनी। सूर्य स्थिर राशि का 25–27–43 अंश का होने से विषम त्रिशांश में सिंह के अन्तिम भाग में तुला राशि का रहेगा, चन्द्र विषम राशि मेष में 26 अंश का होने से तुला राशि में, मंगल विषम

राशि सिंह में 19 अंश पर होने से मिथुन में, बुध सम राशि कन्या में 14 अंश पर मीन का, गुरू विषम राशि मेष के 5 अंश 7 विकला पर मेष के द्वितीय भाग कुम्भ में, शुक्र सम राशि कन्या के 0 अंश पर कन्या के प्रथम भाग वृष का, शनि सम राशि वृश्चिक के 21 अंश पर होने से वृश्चिक के चतुर्थ भाग मकर में तथा राहु सम राशि मीन में 9 अंश पर होने से मीन के द्वितीय भाग कन्या राशि में गया तथा केतु कन्या सम राशि के 9 अंश पर होने से कन्या के द्वितीय भाग कन्या में ही गया। नीचे देखे त्रिशांश कुंडली।

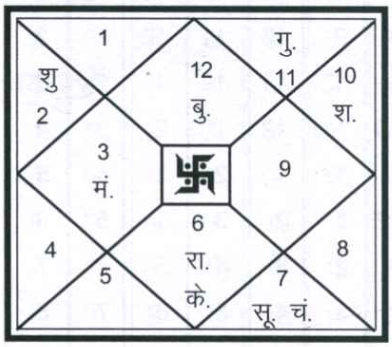

त्रिशांश कुंडली

विषम राशि में त्रिशांश चक्र के प्रथम भाग से अंतिम भाग तक क्रम से वह्नि, वायु, इन्द्र, धनद, और जलद तथा सम राशि में जलद, धनद, इन्द्र, वायु और अग्नि अधिपति होते हैं।

त्रिशांश कुंडली पढ़ने के नियम

विषम राशियों में त्रिशांश स्वामी मंगल, शनि, बृहस्पति, बुध और शुक्र होते हैं। ये क्रमशः 5, 5, 8, 7 और 5 अंशों के स्वामी होते हैं। सम राशियों में त्रिशांश और ग्रह आधिपत्य का क्रम विपरीत रहता है।

षष्ठ्यांश कुंडली

लग्न के 60 वें भाग अर्थात लग्न की 30 कला को षष्ठयांश कहते हैं। यह बहुत ही सूक्ष्म होने से लग्न एवं ग्रह स्पष्ट सूक्ष्म पद्धति से करने पर ही सही फलादेश हो सकता है। षष्ठयांश के स्वामी देव, दानव एवं मानव सभी होने से इसका सूक्ष्म विवेचन आवश्यक है। घोर, राक्षस, यक्ष, भ्रष्ट, कुलघ्न, मृत्यु, काल, दावाग्नि, घोरा, भय, कण्टक, गरल, यम, काल, प्रेतपुरी, कुलिनाश, मान्दी, विषदग्ध, कलिनाश, वंशक्षय, पातक, दंष्ट्राकराल, कालाग्नि, दण्डायुध, क्रूर, भ्रमण ये सभी अशुभ तथा क्रूर षष्ठयांश हैं। इनके फल अशुभ होते हैं। जब कि बाकी के षष्ठयांश शुभ होने से शुभ फल प्रदान करते हैं।

षष्ठयांश चक्र – 1

सं.	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	विषम–देवतांश	सम–देवतांश
1	0°30'	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	घोर	इन्दुरेखा
2	1°00'	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	राक्षस	भ्रमण
3	1°30'	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	देव	पयोधि
4	2°00'	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	कुबेर	सुधा
5	2°30'	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	यक्ष	शीत
6	3°00'	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	किन्नर	क्रूर
7	3°30'	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	भ्रष्ट	सौम्य
8	4°00'	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	कुलघ्न	निर्मल
9	4°30'	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	गरल	दण्डायुध
10	5°00'	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	अग्नि	कालाग्नि
11	5°30'	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	माया	प्रवीण
12	6°00'	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	प्रेतपुरीष	इन्दुमुख
13	6°30'	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	अपांपति	दंष्ट्राकराल
14	7°00'	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	देवगणेश	शीतल
15	7°30'	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	काल	मृदु
16	8°00'	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	अहिभाग	सौम्य
17	8°30'	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	अमृत	कालरूप
18	9°00'	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	चन्द्र	पातक
19	9°30'	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	मृद्वंश	वंशक्षय
20	10°00'	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	कोमल	कुलनाश
21	10°30'	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	हेरम्ब	विषप्रदग्ध
22	11°00'	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	ब्रह्मा	पूर्णचन्द्र
23	11°30'	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	विष्णु	अमृत
24	12°00'	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	महेश्वर	सुधा
25	12°30'	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	देव	कपटक
26	13°00'	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	आर्द्र	यम
27	13°30'	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	कलिनाश	घोर
28	14°00'	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	क्षितीश्वर	दावाग्नि
29	14°30'	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	कमलाकर	काल
30	15°00'	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	मान्दी	मृत्यु

षष्ठयांश चक्र – 2

सं.	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	विषम देवतांश	सम– देवतांश
31	15°30'	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	मृत्युकर	मान्दी
32	16°00'	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	काल	कमलाकर
33	16°30'	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	दावाग्नि	क्षितिज
34	17°00'	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	घोर	कलिनाश
35	17°30'	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	यम	आर्द्र
36	18°00'	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	कपटक	देव
37	18°30'	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	सुधा	महेश्वर
38	19°00'	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	अमृत	विष्णु
39	19°30'	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	पूर्णचन्द्र	ब्रह्मा
40	20°00'	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	विषप्रदग्ध	हेरम्ब
41	20°30'	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	कुलनाश	कोमल
42	21°00'	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	वंशक्षय	मृद्वंश
43	21°30'	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	पातक	चन्द्र
44	22°00'	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	काल	अमृत
45	22°30'	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	सौम्य	अहिभाग
46	23°00'	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	मृदु	काल
47	23°30'	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	शीतल	देवगणेश
48	24°00'	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	दंष्ट्राकराल	अपांपति
49	24°30'	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	इन्दुमुख	प्रेतपुरीष
50	25°00'	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	प्रवीण	माया
51	25°30'	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	कालाग्नि	अग्नि
52	26°00'	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	दण्डायुध	गरल
53	26°30'	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	निर्मल	कुलघ्न
54	27°00'	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	शुभाकर	भ्रष्ट
55	27°30'	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	क्रूर	किन्नर
56	28°00'	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	अतिशीतल	यक्ष
57	28°30'	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	सुधा	कुबेर
58	29°00'	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	पयोधि	देव
59	29°30'	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	भ्रमण	राक्षस
60	30°00'	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	इन्दुरेखा	घोर

उदाहरण लग्न मकर की 16 अंश 58 कला 18 विकला है। षष्ठयांश बोधक चक्र में देखने पर यह तुला राशि की प्राप्ति हुई। अतः षष्ठयांश लग्न तुला रहेगी। इसके विषम देवता घोर हैं। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि षष्ठयांश सम एवं विषम के हिसाब से देवता निर्धारित किए गए हैं।

सूर्य सिंह में 25–27–43 है जो कि विषम में तुला का है और इसका स्वामी कालाग्नि है, जो अशुभ है। सूर्य नीच राशि का होने से भी अशुभ है। चन्द्र मेष विषम राशि में 26–05–52 होने से सिंह में गया जिसका स्वामी निर्मल होने से यह शुभ है। मंगल विषम सिंह राशि के 19–27–0 अंश का है, जो तुला में पूर्ण चन्द्र के स्वामित्व में शुभ है। बुध सम राशि कन्या में 14–00–43 होने से मकर में गया है, इसका स्वामी काल होने से अशुभ फल कारक है। गुरू विषम राशि मेष का 5–7–54 अंश पर कुम्भ राशि में गया, इसका स्वामी माया होने से शुभ फल देने वाली रहेगी। शुक्र सम राशि कन्या 0–57–47 होने से तुला में चला गया इसका स्वामी भ्रमण होने से जातक भ्रमण शील अधिक रहेगा। शनि सम राशि वृश्चिक 21–18–54 के अनुसार वृष राशि में होगा इसका स्वामी चन्द्र होने से एवं वृष चन्द्र की उच्च राशि होने से जातक को बहुत अच्छे फल, भूमि वाहन सम्पत्ति का लाभ देगी। राहु सम राशि मीन में 9–20–12 होने से कन्या राशि का होगा तथा केतु सम राशि कन्या का होने से राहु के अंशों के अनुसार मीन का रहेगा। नीचे षष्ट्यांश कुंडली दी जा रही है।

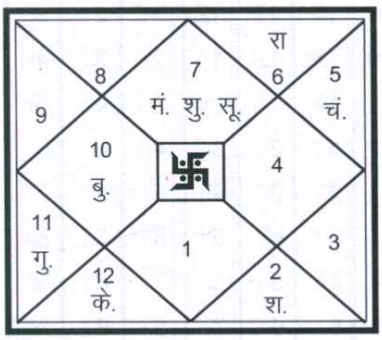

षष्ठयांश कुंडली

षष्ठयंश चक्र के विषम राशि में प्रथम भाग से अन्तिम भाग तक क्रम से 1.घोर 2.राक्षस 3. देव 4. कुबेर 5. यक्ष 6. किन्नर 7. भ्रष्ट 8. कुलघ्न 9. गरल 10. अग्नि 11. माया 12. पुरीष 13. अपांपति 14. मरुत्वदंश 15. काल 16. अहिभाग 17. अमृत 18. चन्द्र 19. मृदु 20. कोमल 21. हेरम्ब 22. ब्रह्मा 23. विष्णु 24. महेश्वर 25. देव 26. आर्द्र 27 कलिनाश 28. क्षितीश्वर 29. कमलाकर 30. गुलिक 31. मृत्यु 32. काल 33. दावाग्नि 34. घोर 35. यम 36. कण्टक 37. सुधा 38. अमृत 39. पूर्णचन्द्र 40 विषप्रदग्ध 41. कुलनाश 42. वंशक्षय 43. उत्पाद 44. काल 45. सौम्य 46. कोमल 47. शीतल 48. द्रंष्ट्राकरा 49. इन्दुमुख 50. प्रवीण 51. कालाग्नि 52. दण्डायुध 53. निर्मल 54. सौम्य 55. क्रूर 56. अतिशोभ. 57. सुधा 58. पयोधीश 59. भ्रमण 60. इन्दुरेखा स्वामी होते हैं।

सम राशि में 1.इन्दुरेखा 2. भ्रमण 3. पयोधीश 4. सुधा 5. अतिशीतल 6.क्रूर 7. सौम्य 8. निर्मल 9. दण्डायुध 10. कालाग्नि 11. प्रवीण 12. इन्दुमुख 13. दंष्ट्रांक 14. शीतल 15. कोमल 16. सौम्य 17. कालरूप 18.

अत्पात 19. वंशक्षय 20. कुलनाश 21. विषदग्ध 22. पूर्णचन्द्र 23. अमृत 24. सुधा 25. कण्टक 26. यम 27. घोर 28. दावाग्नि 29 काल 30. मृत्यु 31.कुलिक 32. कमलाकर 33. क्षितीश्वर 34. कलिनाश 35. आर्द्र 36. देव 37. महेश्वर 38.विष्णु 39. ब्रह्मा 40. हेरम्ब 41. कोमल 42. मृदु 43. चन्द्र 44. अमृत 45. अहिभाग 46. काल 47. मरूत्वदंश 48. अपाम्पति 49. पुरीष 50. माया 51. अग्नि 52. गरल 53. कुलघ्न 54. भ्रष्ट 55. किन्नर 56. यक्ष 57. कुबेर 58. देव 59. राक्षस 60. घोर स्वामी होते हैं।

विशांश कुंडली

एक राशि अर्थात 30 अंश में 20 का भाग देने पर 1 भाग 1 अशं 30 कला का होता है। जो एक विशांश कहलाता है। यह चर राशि में मेष से प्रारंभ होता है। स्थिर राशि में धनु से तथा द्विस्वभाव राशि में सिंह से प्रारंभ होकर क्रमानुसार 20 भाग तकं होता है।

विशांश चक्र

सं.	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	विषम–स्वामी	सम–स्वामी
1	1°30'	1	9	5	1	9	5	1	9	5	1	9	5	काली	दया
2	3°00'	2	10	6	2	10	6	2	10	6	2	10	6	गौरी	मेधा
3	4°30'	3	11	7	3	11	7	3	11	7	3	11	7	जया	छिन्नशी
4	6°00'	4	12	8	4	12	8	4	12	8	4	12	8	लक्ष्मी	पिशाचि
5	7°30'	5	1	9	5	1	9	5	1	9	5	1	9	विजया	धूमावती
6	9°00'	6	2	10	6	2	10	6	2	10	6	2	10	विमला	मातंगी
7	10°30'	7	3	11	7	3	11	7	3	11	7	3	11	सती	बाला
8	12°00'	8	4	12	8	4	12	8	4	12	8	4	12	तारा	भद्रा
9	13°30'	9	5	1	9	5	1	9	5	1	9	5	1	ज्वाला	अरुणा
10	15°00'	10	6	2	10	6	2	10	6	2	10	6	2	श्वेता	अनला
11	16°30'	11	7	3	11	7	3	11	7	3	11	7	3	ललिता	पिंगला
12	18°00'	12	8	4	12	8	4	12	8	4	12	8	4	बगला	छुच्छुका
13	19°30'	1	9	5	1	9	5	1	9	5	1	9	5	प्रत्यंगिरा	घोरा
14	21°00'	2	10	6	2	10	6	2	10	6	2	10	6	शची	वाराही
15	22°30'	3	11	7	3	11	7	3	11	7	3	11	7	रौद्री	वैष्णवी
16	24°00'	4	12	8	4	12	8	4	12	8	4	12	8	भवानी	सिता
17	25°30'	5	1	9	5	1	9	5	1	9	5	1	9	वरदा	भुवनेश्वरी
18	27°00'	6	2	10	6	2	10	6	2	10	6	2	10	जया	भैरवी
19	28°30'	7	3	11	7	3	11	7	3	11	7	3	11	त्रिपुरा	मंगला
20	30°00'	8	4	12	8	4	12	8	4	12	8	4	12	सुमुखी	अपराजिता

उदाहरण कुंडली की लग्न स्पष्ट मकर के 16 अंश 58 कला 18 विकला है विशांश बोधक चक्र में यह 16 अंश 30 कला से 18 अंश के मध्य होने से मकर राशि के कोष्ठ में देखने पर मीन लग्न आयी।सूर्य सिंह 25 अंश 27 कला का मेष में, चन्द्र मेष 26 अंश 5 कला का कन्या में, मंगल सिंह 19 अंश 27 कला का धनु में, बुध कन्या 14 अंश वृष का, गुरू मेष 5 अंश का कर्क में, शुक्र कन्या 0 अंश 57 कला का सिंह में, शनि वृश्चिक का 21 अंश 18 कला का कुम्भ में राहु मीन में 9 अंश 20 कला का कुम्भ में तथा केतु कन्या का 9 अंश 20 कला का कुम्भ राशि का विशांश कुंडली में होगा। उपरोक्त की विशांश कुंडली निम्नानुसार बनेगी।

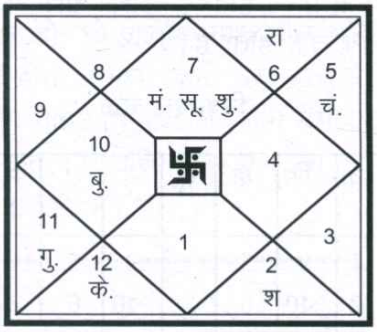

विशांश कुंडली

विशांश चक्र के प्रथम भाग से 20 वें भाग तक विषम राशि में स्वामी क्रम से काली, गौरी, जया, लक्ष्मी, विजया, विमला, सती, तारा, ज्वालामुखी, श्वेता, ललिता, बगला प्रत्यंगिरा, शची, रौद्री, भवानी, वरदा, जया, त्रिपुरा, एवं सुमुखी होते हैं। जबकि सम राशि में दया, मेधा, धिन्नमस्ता, पिशाचिनी, धूमावती, मातंगी, बाला, भद्रा, अरुणा, अनला, पिंगला, छुच्छुका, घोरा, वाराही, वैष्णवी, सिता, भुवनेशी, भैरवी, मंगला और अपराजिता ये स्वामी होते हैं।

चतुर्विशांश कुंडली

एक राशि के 30 अंशों में 24 का भाग देने पर 1 अंश 15 कला का होता है। अतः एक राशि में 24 चतुर्विशांश होते हैं। विषम राशि में सिंह से एवं सम राशि में कर्क से गणना करने पर 24 राशियों का चतुर्विशांश होता है।

चतुर्विंशांश चक्र

सं.	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	विषम–स्वामी	सम–स्वामी
1	1°15'	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	स्कन्दः	भीमः
2	2°30'	6	5	6	5	6	5	6	5	6	5	6	5	पशुधरः	मदनः
3	3°45'	7	6	7	6	7	6	7	6	7	6	7	6	अनलः	गोविन्दः
4	5°00'	8	7	8	7	8	7	8	7	8	7	8	7	विश्वकः	वृषध्वज
5	6°15'	9	8	9	8	9	8	9	8	9	8	9	8	भगः	अन्तकः
6	7°30'	10	9	10	9	10	9	10	9	10	9	10	9	मित्रः	यमः
7	8°45'	11	10	11	10	11	10	11	10	11	10	11	10	यमः	मित्रः
8	10°00'	12	11	12	11	12	11	12	11	12	11	12	11	अन्तकः	भगः
9	11°15'	1	12	1	12	1	12	1	12	1	12	1	12	वृषध्वजः	विश्वकः
10	12°30'	2	1	2	1	2	1	2	1	2	1	2	1	गोविन्द	अनलः
11	13°45'	3	2	3	2	3	2	3	2	3	2	3	2	मदनः	पशुधरः
12	15°00'	4	3	4	3	4	3	4	3	4	3	4	3	भीमः	स्कन्दः
13	16°15'	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	स्कन्दः	भीमः
14	17°30'	6	5	6	5	6	5	6	5	6	5	6	5	पशुधरः	मदनः
15	18°45'	7	6	7	6	7	6	7	6	7	6	7	6	अनलः	गोविन्दः
16	20°00'	8	7	8	7	8	7	8	7	8	7	8	7	विश्वकः	वृषध्वजः
17	21°15'	9	8	9	8	9	8	9	8	9	8	9	8	भगः	अन्तकः
18	22°30'	10	9	10	9	10	9	10	9	10	9	10	9	मित्रः	यमः
19	23°45'	11	10	11	10	11	10	11	10	11	10	11	10	यमः	मित्रः
20	25°00'	12	11	12	11	12	11	12	11	12	11	12	11	अन्तकः	भगः
21	26°15'	1	12	1	12	1	12	1	12	1	12	1	12	वृषध्वजः	विश्वकर्मा
22	27°30'	2	1	2	1	2	1	2	1	2	1	2	1	गोविन्दः	अनलः
23	28°45'	3	2	3	2	3	2	3	2	3	2	3	2	मदनः	पशुधरः
24	30°00'	4	3	4	3	4	3	4	3	4	3	4	3	भीमः	स्कन्दः

उदाहरण कुंडली की लग्न मकर 16 अंश 58 कला की है जो चतुर्विंशांश बोधक चक्र में 16 अंश 15 कला के बाद एवं 17 अंश 30 कला के भीतर मकर राशि के खाने में 5 की संख्या प्राप्त हुई। अर्थात सिंह राशि चतुर्विंशांश की लग्न होगी। सूर्य सिंह राशि में 25 अंश 27 कला का है जो चतुर्विंशांश में मेष राशि में जाएगा, चन्द्र मेष 26 अंश 5 कला का मेष ही में, मंगल सिंह 19 अंश 27 कला वृश्चिक में, बुध कन्या 14 अंश मिथुन में, गुरू मेष 5 अंश 7 कला का धनु में, शुक्र कन्या का 0 अंश 57 कला पर कर्क में, शनि वृश्चिक 21 अंश 18 कला का धनु में, राहु मीन में 9 अंश 20 कला का कुम्भ में तथा केतु कन्या 9 अंश 20 कला का कुम्भ राशि में जाएगा। उपरोक्त का चतुर्विंशांश चक्र नीचें दे रहे हैं।

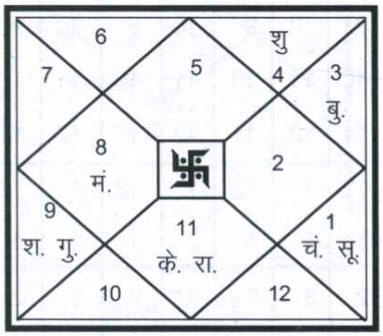

चतुर्विंशांश कुंडली

चतुर्विंशांश चक्र के विषम राशि में स्वामी क्रम से स्कन्द, पशुधर, अनल, विश्वकर्मा, भग, मित्र, यम, अन्तक, वृषध्वज, गोविन्द, मदन एवं भीम होते हैं। सम राशि में भीम मदन गोविन्द वृषध्वज अन्तक यम मित्र भग विश्वकर्मा अनल पशुधर और स्कन्द होते हैं।

सप्तविशांश कुंडली

एक राशि के 27 भाग करने पर एक भाग 1 अंश 6 कला और 40 विकला का होता है, जिसे सप्तविशांश या भाशेंश कहते हैं।

सप्तविशांश चक्र

स.	स्वामिनः	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	बृ.	ध.	म.	कु.	मी	अं. क. वि.
1	अश्वि.कु.	1	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7	10	1°6'40"
2	यमः	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8	11	2°13'20"
3	अग्निः	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6	9	12	3°20'00"
4	ब्रह्माः	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7	10	1	4°26'40"
5	चन्द्रमाः	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5°33'20"
6	शंकरः	6	9	12	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6°40'00"
7	अदितिः	7	10	1	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7°46'40"
8	जीवः	8	11	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8°53'20"
9	अहिः	9	12	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6	10°00'00"
10	पितरः	10	1	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7	11°06'40"
11	भगः	11	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8	12°13'20"
12	अर्यमाः	12	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6	9	13°20'00"
13	अर्कः	1	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7	10	14°26'40"
14	त्वष्टाः	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8	11	15°33'20"
15	वायुः	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6	9	12	16°40'00"
16	शक्राग्नि	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7	10	1	17°46'20"
17	मित्रः	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8	11	2	18°53'20"
18	वासवः	6	9	12	3	6	9	12	3	6	9	12	3	20°00'00"
19	निर्ऋतिः	7	10	1	4	7	10	1	4	7	10	1	4	21°06'40"
20	उदकः	8	11	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5	22°13'20"
21	विश्वेदेवः	9	12	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6	23°20'00"
22	गोविन्दः	10	1	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7	24°26'40"
23	वसुः	11	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8	25°33'20"
24	वरूणः	12	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6	9	26°40'00"
25	अजपात्ः	1	4	7	10	1	4	7	1	1	4	7	10	27°46'40"
26	अहिर्बुध्न्य	2	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8	11	28°53'20"
27	पूषाः	3	6	9	12	3	6	9	12	3	6	9	12	30°00'00"

खवेदांश चक्र

सं.	स्वामिनः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं. क
1	विष्णुः	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	0°45'
2	चन्द्रः	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	1°30'
3	मरीचिः	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	2°15'
4	त्वष्टाः	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	3°00'
3	धाताः	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	3°45'
4	शिवः	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	4°30'
7	रविः	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	5°15'
8	यमः	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	6°00'
9	यक्षेशः	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	6°45'
10	गन्धर्वः	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	7°30'
11	कालः	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	8°15'
12	वरुणः	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	9°00'
13	विष्णुः	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	9°45'
14	चन्द्रः	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	10°30'
15	मरीचिः	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	11°15'
16	त्वष्टाः	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	12°00'
17	धाताः	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	12°45'
18	शिवः	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	13°30'
19	रविः	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	14°15'
20	यमः	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	15°00'
21	यक्षेशः	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	15°45'
22	गन्धर्वः	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	16°30'
23	कालः	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	17°15'
24	वरुणः	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	18°00'
25	विष्णुः	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	18°45'
26	चन्द्रः	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	19°30'
27	मरीचिः	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	20°15'
28	त्वष्टाः	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	21°00'
29	धाताः	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	21°45'
30	शिवः	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	22°30'
31	रविः	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	23°15'
32	यमः	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	24°00'
33	यक्षेशः	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	24°45'
34	गन्धर्वः	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	25°30'
35	कालः	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	26°15'
36	वरुणः	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	27°00'
37	विष्णुः	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	27°45'
38	चन्द्रः	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	28°30'
39	मरीचिः	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	29°15'
40	त्वष्टाः	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	30°00'

उदाहरण लग्न मकर के 16 अंश 58 कला और 18 विकला होने से खवेदांश के 23 वें भाग में गई। मकर के खाने में 5 की संख्या प्राप्त हुई। यह 5 अर्थात सिंह राशि खवेदांश कुंडली की लग्न होगी। सूर्य सिंह में 25–27–43 अंश पर खवेदांश में मकर का, चन्द्र मेष के 26–5–52 अंश पर कुम्भ का, मंगल सिंह के 19–27–00 अंश पर वृष का, बुध कन्या के 14–00–43 अंश पर मेष का, गुरू मेष के 5–7–54 अंश पर तुला का, शुक्र कन्या के 0–57–47 अंश पर वृश्चिक का, शनि वृश्चिक के 21–18–54 अंश पर कुम्भ का, राहु मीन का 9–20–12 अंश पर तुला का, केतु कन्या का 9–20–12 अंश पर तुला राशि का रहेगा। उक्तानुसार खवेदांश कुंडली निम्न बनेगी।

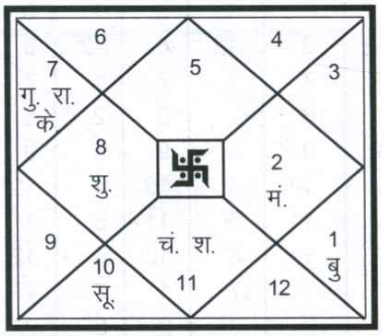

खवेदांश कुंडली

खवेदांश चक्र के प्रथम भाग से अंतिम चालीसवें भाग तक के क्रमानुसार विष्णु, चन्द्र मरीचि, त्वष्टा, धाता, शिव, रवि, यम, यक्षेश, गन्धर्व, काल, एवं वरूण स्वामी होते हैं।

अक्षवेदांश कुंडली

एक राशि के 30 अंशो में 45 का भाग देने पर 40 कला आएंगी, जो एक अक्षवेदांश कहलाएगा। एक राशि में 40 कला के हिसाब से 45 अक्षवेदांश होते हैं। यह चर राशि में मेष से, स्थिर राशि में सिंह से और द्विस्वभाव राशि में धनु राशि से गणना प्रारंभ की जाती है।

अक्षवेदांश चक्र– 1

स्वामी	ब्रह्मा शंकर विष्णु	शं. वि. ब्र.	वि. ब्र. शं.	ब्र. शं. वि.	शं. वि. ब्र.	वि. ब्र. शं.	ब्र. शं. वि.	शं. वि. ब्र.	वि. ब्र. शं.	ब्र. शं वि.	शं वि. ब्र.	विष्णु ब्रह्मा शंकर	स्वामी
सं.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं. कला
1	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	0° 40'
2	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	1° 20'
3	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	2° 00'
4	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	2° 40'
5	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	3° 20'
6	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	4 °00'
7	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	4° 40'
8	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	5° 20'
9	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	6° 00'
10	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	6° 40'
11	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	7° 20'
12	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	8° 00'
13	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	8° 40'
14	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	9° 20'
15	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	10° 00'
16	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	10° 40'
17	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	11° 20'
18	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	12° 00'
19	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	12° 40'
20	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	13° 20'
21	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	14° 00'
22	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	14° 40'
23	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	15° 20'
24	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	16° 00'
25	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	16° 40'
26	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	17° 20'
27	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	18° 00'
28	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	18° 40'
29	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	19° 20'
30	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	20° 00'
31	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	20° 40'
32	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	21° 20'
33	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	22° 00'
34	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	22° 40'
35	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	23° 20'
36	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	24° 00'
37	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	24° 40'
38	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	25° 20'
39	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	26° 00'
40	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	26° 40'
41	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	27° 20'
42	6	10	2	6	10	2	6	10	2	6	10	2	28° 00'
43	7	11	3	7	11	3	7	11	3	7	11	3	28° 40'
44	8	12	4	8	12	4	8	12	4	8	12	4	29° 20'
45	9	1	5	9	1	5	9	1	5	9	1	5	30° 00'

पाठ–12

पंचाग

पंचांग ज्ञान

व्यक्ति अपने कर्मों के अनुसार जन्म लेता है। उसके माता–पिता बंधु–बांधव उसके अधीन नहीं होते। उस समय की कुण्डली का जातक के सम्पूर्ण जीवन पर प्रभाव पड़ता है तथा उसके अनुसार कार्य करने पर वह सफलता प्राप्त करता है। यदि कोई अन्य कार्य शुभ समय में किया जाए तो क्या उस समय का प्रभाव उस कार्य पर नहीं होगा ? अवश्य होगा। इसलिए कार्यारंभ के मुहूर्त का महत्व बढ़ जाता है। मुहूर्त्त निकाल कर कार्य आरम्भ करने को बुद्धिमानी से किया कार्य भी कह सकते हैं। इसमें हम अपनी मनमानी नहीं करते अपितु प्रकृत्ति के प्रबन्धकों का, ग्रहों का ध्यान रख कर कार्य आरम्भ करते रहे हैं। इसलिए मुहूर्त का महत्त्व सभी ज्योतिष ग्रन्थों तथा भारतीय संस्कृति के प्रतीक ग्रन्थों जैसे महाभारत तथा रामायण आदि में स्पष्ट शब्दों में मिलता है। महाभारत का युद्ध मुहूर्त निकाल कर लड़ा गया। इसलिए मुहूर्त का बहुत महत्त्व है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति को मानने वाले प्रत्येक कार्य को आरम्भ करने से पहले किसी योग्य तथा अनुभवी ज्योतिषी से मुहूर्त निकलवाते हैं।

मुहूर्त

मुहूर्त निकालने के लिये योग्य ज्योतिषी को वार, तिथि, नक्षत्र, योग तथा करण आदि की आवश्यकता होती है। प्रत्येक ज्योतिषी के लिए इनको निकालना सम्भव नहीं होता। इसके लिए बाजार में पंचांग मिलते हैं। बाजार में कई प्रकार के पंचाग मिलते हैं। प्रत्येक पंचांग अलग अलग जगह से प्रकाशित होता है। इसलिए उनके गणित का आधार भी अलग–अलग होता है। अतः जातक को पंचांग उस स्थान का या उस पास के स्थान का खरीदना चाहिये जहां वह रहता हो।

पंचांग

पंचांग में प्रत्येक दिन के 5–30 प्रातः के ग्रह स्पष्ट के अंश दिये होते हैं जिनसे उस दिन के किसी भी समय के ग्रह स्पष्ट निकाले जा सकते हैं तथा कुण्डली बनाई जा सकती है।

पंचांग में स्थान विशेष से लग्न भी दिये होते हैं जिनसे उस दिन के किसी भी समय का लग्न निकाला जा सकता है।

पंचांग का अर्थ होता है पंच+अंग अर्थात् मुहूर्त निकालने के लिए जिन पांच अंगों की आवश्यकता पड़ती है वे पांचों अंग पंचांग में स्पष्ट किये होते है। ये अंग हैं : 1. वार 2. तिथि 3. नक्षत्र 4. योग 5. करण।

हम यह जानते हैं कि वार के नाम का आधार, सूर्योदय के समय उदित होरा होती है। वह उस दिन का स्वामी होती है। शुभ कार्य ग्रहों के दिनों में करना पसन्द नहीं करते। इसलिये शुभ वारों का चयन किया जाता है।

हमारे मनीषियों ने हजारों वर्षों के अध्ययन तथा अनुभव के आधार पर पाया कि कुछ वार कुछ विशेष तिथि पर शुभ फल नहीं देते। इसलिये विशेष दिन, विशेष तिथि पर शुभ कार्य करना मना कर दिया। जैसे रविवार को पंचम तिथि तथा द्वादशी, सोमवार को षष्ठी तिथि तथा एकादशी, मंगलवार को सप्तमी तथा दशमी आदि को शुभ कार्य के लिये माना गया है। ये कुयोग के नाम से जानी जाती हैं। कुछ विशेष वारों को विशेष नक्षत्र होने पर शुभ कार्य नहीं किया जाता। जैसे यदि सोमवार को मृगशिरा नक्षत्र हो तो शुभ कार्यों में विघ्न पड़ता है। इसी प्रकार वार, तिथि तथा नक्षत्र से बनने वाले कुयोगों का भी हमारे मनीषियों ने वर्णन किया है। यह सारा विवरण हमें पंचांग में किया–कराया मिल जाता है। ज्योतिषी का समय व परिश्रम बच जाते हैं। इसलिये प्रत्येक ज्योतिषी के पास उस वर्ष तथा वार का पंचांग होता है जिस वर्ष तथा वार का वह शुभ मुहूर्त निकालना चाहता है। शुभ मुहूर्त में किये गये काम में सफलता व समृद्धि प्राप्त होती है।

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि ज्योतिष को तीन स्कंधों में बांटा गया है। प्रस्तुत पुस्तक को अधिक लोकोपयोगी बनाने के लिए इसमें फलित को विशेष महत्त्व न देकर गणित के प्रत्येक अंग का दिग्दर्शन कराने की चेष्टा की गई है। यह सत्य है कि फलित का पूर्ववर्ती गणित है, किन्तु साधारण पाठकों के लिए गणित ज्योतिष इतना अनिवार्य नहीं है। साधारण जन प्रामाणिक ज्योतिर्विदों द्वारा बनाये गये पंचांगों से फलित सम्बन्धी गणित के सिद्धान्तों द्वारा अपने शुभाशुभ को जान सकते हैं।

जन साधारण, जो ज्योतिष के गूढ़ गणित के ज्ञाता नहीं हैं, के लिए पंचांग एक अनिवार्य वस्तु है। वस्तुतः पंचांग भारतीय शैली का कैलेण्डर है।

एक विद्वान् ने पंचांग के बारे में कहा––

चतुरंगबलो राजा जगतीं वशमानयेत्,
अहं पंचांगबलवानाकाशं वशमानये।

अर्थात्– पंचांग ने एक बार अपना महत्त्व बतलाते हुए उद्घोषणा की कि राजा तो बेचारा चतुरंग (चार अंग– हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल सेना) के द्वारा धरती के लोगों को ही जीत सकता है, वश में कर सकता है, लेकिन मैं, पंचांग, इतना बलवान् (शक्तिशाली) हूँ कि आकाश में स्थित नक्षत्रों को भी वश में कर लेता हूं। अर्थात् उनकी जानकारी दे कर लोगों को उनके अनिष्ट प्रभाव से बचा सकता हूँ।

तिथि

सर्वप्रथम पंचांग में तिथि दी हुई रहती है। चन्द्रमा की एक कला को तिथि कहते हैं। सूर्य और चन्द्रमा के अन्तरांशों पर तिथि का मान (तिथि के प्रारम्भ होने से उसकी समाप्ति पर्यन्त) निकाला जाता है। सूर्य और चन्द्रमा के परिभ्रमण में प्रतिदिन 12 अंशों का अन्तर रहता है, यह अन्तरांशों का मध्यम मान है। एक मास में 30 तिथियाँ होती हैं और दो पक्ष होते हैं। पूर्णिमा के बाद प्रतिपदा से अमावस्या तक की पन्द्रह तिथियाँ कृष्ण पक्ष और अमावस्या के बाद प्रतिपदा से पूर्णिमा तक की पन्द्रह तिथियाँ शुक्ल पक्ष कहलाती हैं।

$$\text{तिथि} = \frac{\text{चंद्र स्पष्ट} - \text{सूर्य स्पष्ट}}{12}$$

वार

वार का मान चौबीस घंटे या साठ घटी का होता है। सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक के समय को वार कहते हैं। सूर्योदय के समय जिस ग्रह की होरा होती है उस दिन उसी ग्रह के नाम का वार रहता है। पृथ्वी से ग्रहों की दूरी अनुसार लिखा जाए तो इस प्रकार लिखेंगे शनि, गुरु, मङ्गल, रवि, शुक्र, बुध और चंद्रमा। ये ग्रह पृथ्वी से क्रमशः दूर–शनि सबसे दूर, बृहस्पति उससे निकट मंगल उससे भी निकट है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों को समझें। एक दिन में 24 होराएं होती हैं। एक–एक घंटे की एक–एक होरा होती है। अर्थात् घंटे का दूसरा नाम होरा है। प्रत्येक होरा का स्वामी अधः कक्षाक्रम से एक–एक ग्रह होता है।

हमारे ऋषि–मुनियों की दृष्टि सृष्ट्यारंभ में सबसे पहले सूर्य पर पड़ी, इसलिए पहली (1) होरा का स्वामी सूर्य को माना जाता है। अतएव पहले वार का नाम आदित्यवार या रविवार है। तत्पश्चात् उस दिन की दूसरी होरा का नाम स्वामी उसके पासवाला शुक्र, 3री का बुध, 4थी का चंद्रमा, 5वीं का शनि, 6ठी का गुरु, 7वीं का मंगल, 8वीं का रवि, 9वीं का शुक्र, 10वीं का बुध, 11वीं का चंद्रमा, 12वीं का शनि, 13वीं का गुरु, 14वीं का मंगल, 15वीं का रवि, 16वीं का शुक्र, 17वीं का बुध, 18वीं का चंद्रमा, 19वीं का शनि, 20वीं का बृहस्पति, 21वीं का मंगल, 22वीं का रवि, 23वीं का शुक्र और 24वीं का बुध स्वामी होता है। पश्चात् दूसरे दिन की पहली होरा का स्वामी चंद्रमा पड़ता है, अतः दूसरा वार सोमवार या चंद्रवार माना जाता है। इसी तरह तीसरे दिन की पहली होरा का स्वामी मंगल, चौथे दिन की पहली होरा का स्वामी बुध, पांचवें दिन की पहली होरा का स्वामी गुरु, छठे दिन की पहली होरा का स्वामी शुक्र एवं सातवें दिन की पहली होरा का स्वामी शनि होता है। इसलिए क्रमशः रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ये वार माने जाते हैं।

नक्षत्र

अनेक ताराओं के विशिष्ट आकृतिवाले पुंज को 'नक्षत्र' कहते हैं। आकाश में जो असंख्य तारक मण्डल विभिन्न रूपों और आकारों में दिखलाई पड़ते हैं, वे ही नक्षत्र कहे जाते हैं। ज्योतिष में ये नक्षत्र विशिष्ट स्थान रखते हैं। आकाश मण्डल में इन समस्त तारक–पुजों को ज्योतिष शास्त्र ने 27 भागों में बांट दिया है और प्रत्येक भाग का अलग से नामकरण कर दिया है। इन नक्षत्रों को और सूक्ष्मता से समझाने के लिए इनके चार–चार भाग और कर दिए गये हैं जो 'चरण' के नाम से जाने जाते हैं। कुछ ज्योतिर्विद 27 की बजाय 28 नक्षत्र मानते हैं, किन्तु नक्षत्र तो 27 ही हैं, 28वां नक्षत्र अभिजित् तो उत्तराषाढ़ा की अन्तिम 15 घटियों तथा श्रवण की प्रथम चार घटियों को मिलाकर 19 घटी मान का होता है। इसलिए इसे अलग से नहीं माना जाता।

$$\text{नक्षत्र} = \frac{\text{चंद्र स्पष्ट (मिनटों में)}}{800'}$$

= जो पूर्ण संख्या भाग करके आये उससे अगला नक्षत्र जातक का जन्म नक्षत्र कहलायेगा।

नक्षत्र के नाम

1. अश्विनी,	10. मघा,	19. मूल,
2. भरणी,	11. पूर्वाफाल्गुनी,	20. पूर्वाषाढ़ा,
3. कृत्तिका,	12. उत्तराफाल्गुनी,	21. उत्तराषाढ़ा,
4. रोहिणी,	13. हस्त,	22. श्रवण,
5. मृगशिरा,	14. चित्रा,	23. धनिष्ठा,
6. आर्द्रा,	15. स्वाति,	24. शतभिषा,
7. पुनर्वसु,	16. विशाखा,	25. पूर्वभाद्रपद,
8. पुष्य,	17. अनुराधा,	26. उत्तरभाद्रपद,
9. आश्लेषा,	18. ज्येष्ठा,	27. रेवती।

नक्षत्रों के स्वामी, देवता तथा ग्रह

क्र.	नक्षत्र	देवता	न.स्वामी
1.	अश्विनी	अ.कुमार	केतु
2.	भरणी	काल	शुक्र
3.	कृत्तिका	अग्नि	सूर्य
4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चंद्रमा
5.	मृगशिरा	चंद्रमा	मंगल
6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु
7.	पुनर्वसु	अदिति	बृहस्पति
8.	पुष्य	बृहस्पति	शनि
9.	आश्लेषा	सर्प	बुध
10.	मघा	पितर	केतु
11.	पू.फा.	भग	शुक्र
12.	उ.फा.	अर्यमा	सूर्य
13.	हस्त	सूर्य	चंद्रमा
14.	चित्रा	विश्वकर्मा	मंगल

क्र.	नक्षत्र	देवता	न.स्वामी
15.	स्वाती	पवन	राहु
16.	विशाखा	शुक्राग्नि	बृहस्पति
17.	अनुराधा	मित्र	शनि
18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध
19.	मूल	निर्ऋति	केतु
20.	पू.आषाढ़ा	जल	शुक्र
21.	उ.आषाढ़ा	विश्वेदेव	सूर्य
22.	श्रवण	विष्णु	चंद्रमा
23.	धनिष्ठा	वसु	मंगल
24.	शतभिषा	वरुण	राहु
25.	पू.भा.	अजैकपाद	बृहस्पति
26.	उ.भा.	अहिर्बुध्न्य	शनि
27.	रेवती	पूषा	बुध
28.	अभिजित	ब्रह्मा	केतु

नक्षत्रों की संज्ञा

ज्योतिष में नक्षत्रों को मूल, पंचक, ध्रुव, चर, मिश्र, अधोमुख, ऊर्ध्वमुख, दग्ध व तिर्यङमुख आदि के नामों से जाना जाता है।

मूल संज्ञक	: ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती, मूल, मघा, अश्विनी
पंचक संज्ञक	: धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र और रेवती
ध्रुव संज्ञक	: उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद व रोहिणी
चर या चल संज्ञक	: स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा
मिश्र संज्ञक	: विशाखा और कृतिका
अधोमुख संज्ञक	: मूल, आश्लेषा, विशाखा, कृतिका, पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वाभाद्रपद, भरणी और मघा
ऊर्ध्व संज्ञक	: आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा
दग्ध संज्ञक	: रविवार को भरणी, सोमवार को चित्रा, मंगलवार को उत्तराषाढ़, बुधवार को धनिष्ठा, बृहस्पति वार को उत्तराफाल्गुनी, शुक्रवार को ज्येष्ठा एवं शनिवार को रेवती।
तिर्यङमुख संज्ञक	: अनुराधा, हस्त, स्वाति, पुनर्वसु, ज्येष्ठा और अश्विनी
उग्र संज्ञक	: पूर्वाषाढ़, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वफाल्गुनी, मघा व भरणी
लघु संज्ञक	: हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित
मृदु या मैत्र संज्ञक	: मृगशिरा, रेवती, चित्रा और अनुराधा
तीक्ष्ण या दारुण संज्ञक	: मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा और आश्लेषा

नक्षत्रों के चरण

प्रत्येक नक्षत्र को चार भागों में विभाजित किया गया है। नक्षत्र के एक भाग को चरण कहते हैं। हर चरण का एक अक्षर नियत कर दिया गया है। इस प्रकार एक नक्षत्र में चार चरण होते हैं। नामकरण करते समय ज्योतिषी देखता है कि बच्चे का जन्म अमुक नक्षत्र के अमुक चरण में हुआ है, उस चरण का अक्षर अमुक है, अतः बच्चे के नाम का प्रथम अक्षर भी वही रहेगा।

क.सं.	नक्षत्र का नाम	चरणाक्षर
1.	अश्विनी	चू , चे , चो , ला
2.	भरणी	ली , लू , ले , लो
3.	कृत्तिका	आ , ई , उ , ए
4.	रोहिणी	ओ , वा ,वी , वू
5.	मृगशिरा	वे , वो , का , की
6.	आर्द्रा	कू , घ , ङ , छ
7.	पुनर्वसु	के , को , हा , ही
8.	पुष्य	हू , हे , हो , डा
9.	आश्लेषा	डी , डू , डे , डो
10.	मघा	मा , मी , मू , मे
11.	पूर्वाफाल्गुनी	मो , टा , टी , टू
12.	उत्तराफाल्गुनी	टे , टो , पा , पी
13.	हस्त	पू , ष , ण ,ठ
14.	चित्रा	पे , पो , रा , री
15.	स्वाति	रू , रे , रो , ता
16.	विशाखा	ती , तू , ते , तो
17	अनुराधा	ना , नी, नू , ने
18.	ज्येष्ठा	नो , या , यी , यू
19.	मूल	ये , यो , भा , भी
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू , धा , फा , ढ़ा
21.	उत्तराषाढ़ा	भे , भो , जा , जी
22.	श्रवण	खी, खू , खे , खो
23.	धनिष्ठा	गा , गी , गू , गे
24.	शतभिषा	गो , सा , सी , सू
25.	पूर्व भाद्रपद	से , सो , दा , दी
26.	उत्तर भाद्र पद	दू , थ , झ , ण
27.	रेवती	दे , दो , चा , ची

राशि	नक्षत्र	न.सं.	चरण	न.प्रा.अंश	समाप्तअंश	विंशोत्तरीस्वामी
मेष	अश्विनी	1	4	00°00	13°20′	केतु
	भरणी	2	4	13°20′	26°40′	शुक्र
	कृत्तिका	3	1	26°40′	30°00′	सूर्य
वृष	कृतिका	3	3	00°00′	10°00′	सूर्य
	रोहिणी	4	4	10°00′	23°20′	चन्द्र
	मृगशिरा	5	2	23°20′	30°00′	मंगल
मिथुन	मृगशिरा	5	2	00°00′	06°40′	मंगल
	आर्द्रा	6	4	06°40′	20°00′	राहु
	पुनर्वसु	7	3	20°00′	30°00′	बृहस्पति
कर्क	पुनर्वसु	7	1	00°00′	03°20′	बृहस्पति
	पुष्य	8	4	03°20′	16°40′	शनि
	आश्लेषा	9	4	16°40′	30°00′	बुध
सिंह	मघा	10	4	00°00′	13°20′	केतु
	पूर्व फाल्गुनी	11	4	13°20′	26°40′	शुक्र
	उ.फाल्गुनी	12	1	26°40′	30°00′	सूर्य
कन्या	उ.फाल्गुनी	12	3	00°00′	10°00′	सूर्य
	हस्त	13	4	10°00′	23°20′	चन्द्र
	चित्रा	14	2	23°20′	30°00′	मंगल
तुला	चित्रा	14	2	00°00′	06°40′	मंगल
	स्वाती	15	4	06°40′	20°00′	राहु
	विशाखा	16	3	20°00′	30°00′	बृहस्पति
वृश्चिक	विशाखा	16	1	00°00′	3°20′	बृहस्पति
	अनुराधा	17	4	3°20′	16°40′	शनि
	ज्येष्ठा	18	4	16°40′	30°00′	बुध
धनु	मूल	19	4	00°00′	13°20′	केतु
	पूर्वाषाढ़ा	20	4	13°20′	26°40′	शुक्र
	उत्तराषाढ़ा	21	1	26°40′	30°00′	सूर्य
मकर	उत्तराषाढ़ा	21	3	00°00′	10°00′	सूर्य
	श्रवण	22	4	10°00′	23°20′	चन्द्र
	धनिष्ठा	23	2	23°20′	30°00′	मंगल
कुम्भ	धनिष्ठा	23	2	00°00′	06°40′	मंगल
	शतभिषा	24	4	06°40′	20°00′	राहु
	पूर्वभाद्र	25	3	20°00′	30°00′	बृहस्पति
मीन	पूर्वभाद्र पद	25	1	00°00′	03°20′	बृहस्पति
	उत्तरभाद्र पद	26	4	03°20′	16°40′	शनि
	रेवती	27	4	16°40′	30°00′	बुध

योग

योग दो प्रकार के होते हैं – नैसर्गिक तथा तात्कालिक।

नैसर्गिक योगों का एक ही क्रम रहता है, परन्तु तात्कालिक योग तिथि, वार एवं नक्षत्र के विशेष संगम से बनते हैं। पंचांग में योग नैसर्गिक होते हैं, उसे विषकम्भ आदि योग कहते हैं।

चन्द्रमा और सूर्य दोनों मिलकर जब आठ सौ कलाएं चल चुकते हैं तो एक 'योग' बीतता है। दूसरी प्रकार से इसे हम यों कह सकते हैं कि योग वास्तव में चन्द्रमा और सूर्य की यात्रा की सम्मिलित दूरी पार करने का एक नाप है। योग शब्द का अर्थ होता है जोड़। यहां भी यह शब्द चन्द्रमा और सूर्य की यात्रा की दूरी के जोड़ का द्योतक है।

योग कुल सत्ताईस हैं। अश्विनी नक्षत्र से जब चन्द्रमा और सूर्य दोनों मिलकर आठ सौ कलाएं चल चुकते हैं तो एक योग बीतता है। इस प्रकार 21,600 कलाएं अश्विनी से चल चुकने पर 27 योग बीतते हैं। चन्द्रमा और सूर्य की 360 अंशों (12 राशियों) की कलात्मक यात्रा को 27 भागों में विभाजित कर लिया गया है तथा उन भागों का नामकरण कर लिया गया है। 'योग' नक्षत्र की भांति कोई तारा समूह नहीं होता बल्कि निश्चित दूरी का एक विभाजित माप है।

$$\text{योग} = \frac{\text{सूर्य स्पष्ट + चंद्र स्पष्ट}}{800'}$$

= जो संख्या भाग करके आये उससे अगला योग उस समय का होगा, जिस समय के सूर्य स्पष्ट और चंद्र स्पष्ट लिये गये होंगे।

योगों के नाम

1. विष्कुम्भ,
2. प्रीति,
3. आयुष्मान,
4. सौभाग्य,
5. शोभन,
6. अतिगण्ड,
7. सुकर्मा,
8. धृति,
9. शूल,
10. गण्ड,
11. वृद्धि,
12. ध्रुव,
13. व्याघात,
14. हर्षण,
15. वज्र,
16. सिद्धि,
17. व्यतिपात,
18. वरीयान,
19. परिघ,
20. शिव,
21. सिद्ध,
22. साध्य,
23. शुभ,
24. शुक्ल,
25. ब्रह्मा,
26. इन्द्र,
27. वैधृति।

योगों के स्वामी

यम, विष्णु, चन्द्रमा, ब्रह्मा, बृहस्पति, इन्द्र, जल, सर्प, अग्नि, सूर्य, भूमि, वायु, भग, वरुण, गणेश, रुद्र, कुबेर, मित्र, कार्तिकेय, सावित्री, लक्ष्मी, पार्वती, अश्विनीकुमार, पितर और दिति क्रमशः योगों के स्वामी हैं।

करण

तिथि के आधे भाग को करण कहा जाता है, अर्थात् एक तिथि में दो करण होते हैं। इस प्रकार,

$$\text{करण} = \frac{\text{चंद्र स्पष्ट} - \text{सूर्य स्पष्ट}}{6}$$

= भाग करके जो संख्या आए उस संख्या का करण उस समय का करण होगा जिस समय का सूर्य स्पष्ट और चंद्र स्पष्ट लिये गये होंगे।

करणों के नाम

1.बव, 2.बालव, 3. कौलव, 4. तैत्तिल, 5.गर, 6.वणिज, 7.विष्टि, 8.शकुनि, 9.चतुष्पद, 10.नाग, 11.किंस्तुघ्न। बव, शकुनि, कौलव, तैत्तिल, गर, वणिज एवं विष्टि करणों की संज्ञा चर है जबकि चतुष्पद, नाग एवं किंस्तुघ्न करणों की संज्ञा 'स्थिर' होती है।

करणों के स्वामी

बव का इन्द्र, बालव का ब्रह्मा, कौलव का सूर्य, तैत्तिल का सूर्य, गर का पृथ्वी, वणिज का लक्ष्मी, विष्टि का यम, शकुनि का कलयुग, चतुष्पद का रुद्र, नाग का सर्प एवं किंस्तुघ्न करण का स्वामी वायु है।

करण चक्र

तिथि	शुक्लपक्ष		तिथि	कृष्णपक्ष	
	पूर्वार्द्ध	उत्तरार्द्ध		पूर्वार्द्ध	उत्तरार्द्ध
1	किंस्तुघ्न	बव	1	बालव	कौलव
2	बालव	कौलव	2	तैत्तिल	गर
3	तैत्तिल	गर	3	वणिज	विष्टि
4	वणिज	विष्टि	4	बव	बालव
5	बव	बालव	5	कौलव	तैत्तिल
6	कौलव	तैत्तिल	6	गर	वणिज
7	गर	वणिज	7	विष्टि	बव
8	विष्टि	बव	8	बालव	कौलव
9	बालव	कौलव	9	तैत्तिल	गर
10	तैत्तिल	गर	10	वणिज	विष्टि
11	वणिज	विष्टि	11	बव	बालव
12	बव	बालव	12	कौलव	तैत्तिल
13	कौलव	तैत्तिल	13	गर	वणिज
14	गर	वणिज	14	विष्टि	शकुनि
15	विष्टि	बव	30	चतुष्पाद	नाग

❑

पाठ–13

सूर्योदय, सूर्यास्त, संक्रान्ति, अमावस्या एवं पूर्णिमा विचार

सूर्य उदय

किसी निश्चित जगह के पूर्वी क्षितिज (Eastern Horizon) पर जिस समय सूर्य सर्वप्रथम उदित होता दिखता है वह सूर्योदय का समय होता है। सूर्य बिम्ब के ऊपरी हिस्से से निचले हिस्से तक उदय होने में लगभग 6 मिनट का अन्तर होता है। जब सूर्य के बिम्ब का मध्य भाग निश्चित जगह के पूर्वी क्षितिज में होता है वह क्षण उस जगह के लिए सूर्योदय का समय माना जाता है।

सूर्य अस्त

इसी तरह किसी निश्चत जगह के लिए पश्चिमी क्षितिज पर जब सूर्य के बिम्ब का मध्य भाग रहता है वह समय उस जगह के लिए सूर्यास्त का समय माना जाता है।

सूर्योदय और सूर्यास्त साधन विधि

एफिमेरीज में दिए गए समानुपात आँकड़ों से विधि के द्वारा सूर्योदय–सूर्यास्त के समय की संगणना इस प्रकार करें।

1. सूर्योदय–सूर्यास्त विभिन्न स्थानों पर उनके अंक्षाश के अनुसार भिन्न–भिन्न होते हैं। जिस स्थान का सूर्योदय या सूर्यास्त जानना हो उस स्थान का अक्षांश नोट करें।
2. (Indain Ephemeris) के पृष्ट नं. 94, 95 पर दी गई सूर्योदय–सूर्यास्त तालिका के अनुसार उन दो तारीखों को चुनिए जिनमें वह तारीख आती हो जिसका सूर्योदय या सूर्यास्त निकालना है इससे दो ऐसे अक्षांशों को चुनिए जिनमें उस स्थान के अक्षांश आता हो जिस निश्चित स्थान के सूर्यास्त–सूर्योदय निकालने हैं।
3. समानुपात विधि द्वारा सूर्योदय और सूर्यास्त का समय ज्ञात करें। यह समय सूर्य के बिम्ब के ऊपरी भाग के दिखाई देने का औसत समय होगा। सूर्योदय के समय में 3 मिनट जोड़ देने से सूर्य बिम्ब के मध्य भाग सूर्योदय का स्थानीय समय ज्ञात होगा। इसी से सूर्यास्त में 3 मिनट घटा दें जो उपलब्धि होगा वह सूर्य बिम्ब के मध्य भाग सूर्यास्त का स्थानीय समय होगा।
4. सूर्योदय–सूर्यास्त का भारतीय मानक समय निकालने के लिए निश्चित स्थान का समय संस्कार करें।

उदाहरण

21 जून 2001 को दिल्ली का सूर्यादय ज्ञात करें।

दिल्ली का अक्षांश = $28^0\ 39'$ उत्तर = $20^0+8^0\ 39'$ = $20^0+8.65°$

भारतीय समय संस्कार = + 21 मि. 08 से.

दिल्ली का अक्षांश $28^0\ 39'$ तालिका में जिन दो अक्षांशों में आता है वह है 20^0 से 30^0 उत्तर

सूर्योदय-सूर्यास्त

21 जून 2001 का सूर्योदय–सूर्यास्त अक्षांश $28^0\ 39'$ पर इस तरह निकालेंगे।

सूर्योदय

	अक्षांश $+20^0$	अक्षांश $+30^0$	अन्तर
21 जून	5^h21^m	$4^h.59^m$	-22^m

सूर्योदय का स्थानीय समय = $5^h\,21(-)\ (8^0 39'/10\,X22^m) = 5^h\,21(-)\ (.865^0X22^m)$

= $5^h\,21^m-19^m\,03^s$

= $5^h\,02^m$

मानक समय संस्कार + $21^m 8^s$

सूर्योदय (ऊपरी हिस्सा) = $5^h\,23^m\,08^s$

(भारतीय मानक समय) सूर्य बिम्ब के मध्य भाव उदय के लिए

3 मिनट जोड़ें अर्थात $5^n\ 23^m\ 08^s\ (+)3^m = (5^h\ 26^m\ 08^s)$

सूर्यास्त

	अक्षांश $+20^0$	अक्षांश $+30^0$	अन्तर
21 जून	$18^h.42^m$	$19^n\ 04^m$	$+22^m$

सूर्यास्त का स्थानीय समय = $18^h42^m\ (+)\ (8^0 39'/10X22^m) = 18^h42^m\ (+)\ (.865^0X22^m)$

$18^h\,42^m+19^m\,03^s$

= $19^h\,01^m\,03^s$

मानक समय संस्कार (+) $21^m\,08^s$

सूर्यास्त (ऊपरी हिस्सा) = $19^h\,22^m 08^s$

(भारतीय मानक समय)

सूर्य बिम्ब के मध्य भाव अस्त के लिए 3 मिनट घटाएँ

अर्थात् $19^h\ 22^m\ 08^s\ (-)3^m = (19^h\ 19^m\ 08^s)$

भारतीय ज्योतिष में सूर्य संक्रान्ति, अमावस्या तथा पूर्णिमा का विशेष महत्त्व है। सूर्य संक्रान्ति के आधार पर मास का फल देखा जाता है। अंग्रेजी तारीखों के आधार पर सूर्य संक्रान्ति (सूर्य का दूसरी राशि में प्रवेश) लगभग इसी दिन होती है।

सूर्य का राशि में प्रवेश	तिथि
मेष	13 या 14 अप्रैल
वृष	14 या 15 मई
मिथुन	15 जून
कर्क	16 या 17 जुलाई
सिंह	16 या 17 अगस्त
कन्या	17 अक्तूबर
तुला	17 सितम्बर
वृश्चिक	15 या 16 नवम्बर
धनु	16 दिसम्बर
मकर	13 या 14 जनवरी
कुम्भ	12 फरवरी
मीन	14 मार्च

अंग्रेजी मास 30 या 31 दिन के होते हैं, केवल फरवरी का महीना 28 या 29 दिन का होता है। इसलिये एक दिन आगे या पीछे हो सकता है।

हमारे पंचांगों में संक्रांति का दिन और समय उल्लिखित होते है। उनके द्वारा हम मानक समय का ज्ञान निश्चित रूप से प्राप्त कर सकते हैं।

जब सूर्य चन्द्रमा के ऊपर से गोचर करता है तो उसे प्रथम भाव मानते हैं।

इस प्रकार मोटे–मोटे प्रकार से निम्न फल हो सकते हैं।

सूर्य का प्रथम भाव में गोचर जातक को परिश्रम करवाता है, यात्रा करवाता है और जातक क्रोधित रहता है।

सूर्य का गोचर	परिणाम
द्वितीय	धन नाश, सुख का नाश, जिद्दी होना तथा लोगों के द्वारा धोखा।
तृतीय	स्थान प्राप्ति और धन, संग्रह से हर्ष, शुभ समाचार प्राप्त हो, शत्रु का नाश हो।
चतुर्थ	रोग, सुख नाश
पंचम	क्रोध, मन दुःखी, रोग
षष्ठ	रोगों का नाश, शत्रु का नाश
सप्तम	यात्रा, पेट या गुदा में पीड़ा सम्मान हानि, मन दुःखी

अष्टम	रोग, मन दुःखी, कलह, राजा या अधिकारी से भय, उनकी नाराजगी का भय
नवम	अपने प्रिय लोगों से बिछोह, उद्योग में असफलता, मन दुःखी, कष्ट
दशम	कार्य सिद्धि, मन में हर्ष, उत्साह
एकादश	स्थान प्राप्ति, मान–सम्मान प्राप्ति, धनलाभ, रोग से छुटकारा, मन प्रसन्न
द्वादश	क्लेश, व्यय, रोग, दोस्त दुश्मनी करें।

यह स्थूल फल दिया गया है। पूर्णफल जन्मकुण्डली में सूर्य की स्थिति तथा दशान्तर दशा पर निर्भर करता है। यह फल भाव के कारक के आधार पर तथा सूर्य के शुभाशुभ स्थानों को ध्यान में रखकर दिया गया है। यह सूर्य संक्रान्ति के आधार पर है।

सूर्य संक्रान्ति का नक्षत्र से गोचर विचार

जिस दिन संक्रान्ति हो उस दिन चन्द्रमा का नक्षत्र लिख लें तथा जन्म के समय जिस नक्षत्र पर चन्द्रमा है उसको भी लिख लें। उसे जन्म नक्षत्र कहते हैं।

संक्रान्ति के दिन जिस नक्षत्र पर चन्द्रमा था उससे लेकर जन्म नक्षत्र तक गिनें तथा संख्या में एक जोड़ें। यदि संख्या

1, 2, 3	में से कोई हो तो	यात्रा, रास्ता चलना पड़े।
4, 5, 6, 7, 8, 9	"	भोग, सुख
10, 11, 12	"	कष्ट
13, 14, 15, 16, 17, 18	"	नवीन वस्त्र या वस्तु की प्राप्ति
19, 20, 21	"	हानि
22, 23, 24, 25, 26, 27	"	धन की प्राप्ति

मान लें कि किसी का जन्म नक्षत्र भरणी है तथा संक्रान्ति के दिन चन्द्रमा ज्येष्ठा नक्षत्र पर है। ज्येष्ठा से भरणी तक गिनने पर 12 नक्षत्र आये। 12 में एक जोड़ा तो 13 नक्षत्र हुए। इसका फल नवीन वस्त्र या वस्तु की प्राप्ति है। अर्थात् जातक को उस मास में नवीन वस्त्र या अन्य कोई वस्तु प्राप्त होगी। हम इसमें एक की संख्या इस कारण जोड़ते हैं कि कुछ विद्वान् इसमें अभिजित् नक्षत्र को भी गिनते हैं।

नक्षत्रों का परिचय

जन्म के समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र पर होता है उसे	(1) जन्म नक्षत्र कहते हैं।
जन्म नक्षत्र से दसवां नक्षत्र	(2) कर्म नक्षत्र कहलाता है।
उन्नीसवां नक्षत्र	(3) आधान नक्षत्र,
तीसरा नक्षत्र	(6) वध
बाईसवां नक्षत्र	(7) वेनाशिक नक्षत्र कहलाता है।

यदि इन सात नक्षत्रों का वेध हो तो कष्ट या मृत्यु का भय रहता है। यदि साथ में कोई अन्य शुभ ग्रह हो तो केवल हानि होती है। इस वेध को हम सप्त शलाका के द्वारा देखते है जो निम्न प्रकार से बनाई जाती है।

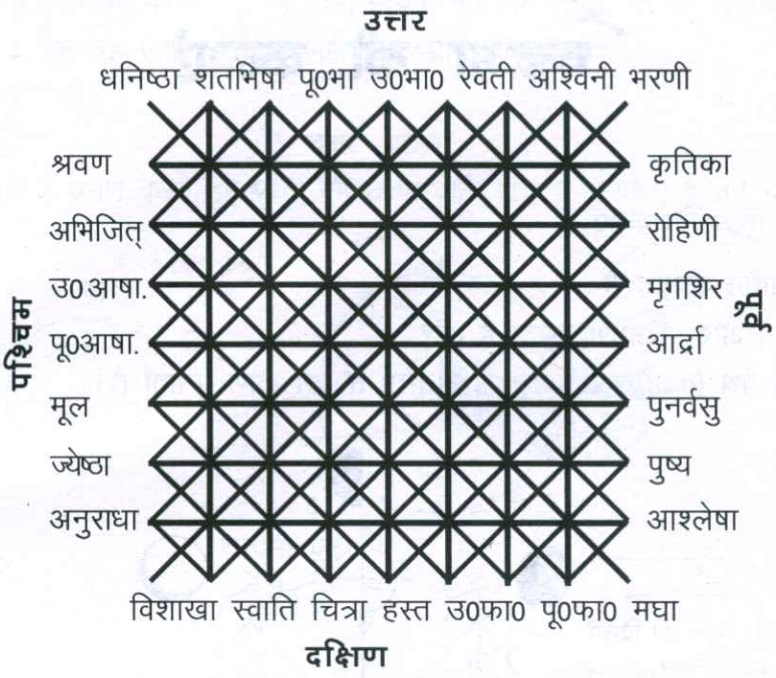

सात रेखाएं आड़ी तथा सात रेखाएं इनको काटती हुई खड़ी खींचिये, जैसे चित्र में दिखाया गया है। पूर्वोत्तर दिशा से आरम्भ कर कृतिका आदि अट्ठाइस (अभिजित् सहित) नक्षत्रों के नाम लिखें तो ऊपर वाला चित्र तैयार हो जाएगा।

अब जन्म नक्षत्र पर से आरम्भ करे और जन्म नक्षत्र पर 1 अंक लिखे और क्रम से सत्ताईस तक की गिनती लिखें तथा अभिजित् पर 21 (अ) लिखे। फिर गोचर में जो ग्रह जिस नक्षत्र पर हो उसको लिख डालें।

यदि जन्म नक्षत्र का सूर्य से वेध हो तो कष्ट हो, या मृत्यु भय हो, दसवें नक्षत्र का वेध हो तो धन नाश, उन्नीसवें नक्षत्र का वेध हो तो चिन्ता तथा कष्ट आदि। इसी प्रकार यदि ऊपर बताए गए 7 नक्षत्रों में से किसी अन्य का वेध हो तो जातक को कष्ट होता है और धन नाश होता है।

इस प्रकार सूर्य से मास का फल चन्द्र से दिन का फल, शनि से वर्ष का फल आदि जान सकते हैं। समय को जान कर उसका उपाय कर सकते हैं।

❑

पाठ–14

चन्द्रमा की कलाएं

चन्द्रमा की तीन मुख्य विशेषताएं हैं –

(1)चन्द्रमा प्रकाशहीन उपग्रह है

(2) पृथ्वी के चारों ओर परिभ्रमण करता है और

(3) इसका भ्रमण पथ (कक्षा) क्रांति वृत्त से लगभग 5^0 का कोण बनाता है।

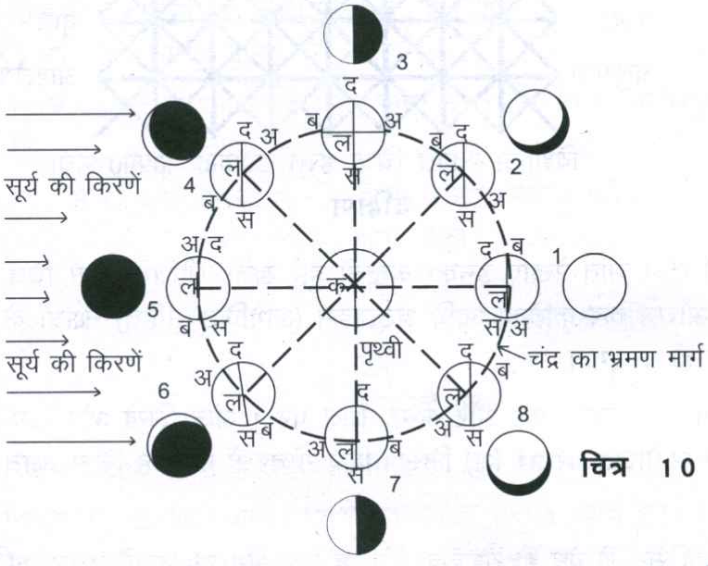

चित्र 10

यदि हम यह मान कर चलें कि सूर्य की किरणें चन्द्रमा पर लम्बवत् पड़ती हैं तो जिस भाग पर किरणें पड़ेंगी वह भाग प्रकाशित होगा। जिस भाग पर किरणें नहीं पड़ेंगी वह भाग अप्रकाशित होगा, जैसे चित्र 10 में काला भाग दिखाया गया है। अब पृथ्वी पर खड़े होकर जब चन्द्रमा को देखेंगे तो चन्द्रमा हमें चित्र में सादा भाग में दिखने की तरह दिखेगा। पूर्णिमा के दिन पूरा चन्द्रमा प्रकाशवान दिखाई पड़ता है। जैसे चित्र में नम्बर 1 अमावस्या के दिन चन्द्रमा न. 5 की तरह दिखाई देगा। इसलिये चन्द्रमा के परिभ्रमण को कृष्ण पक्ष, जब चन्द्रमा की कलाएं कम होती जाती है तथा शुक्ल पक्ष, जब चन्द्रमा की कलाएं बढ़ती जाती हैं के रूप में दिखाया गया है।

ग्रहण

सूर्य एक तारा है तथा सौर मंडल में एक मात्र प्रकाशित आकाशीय पिण्ड है। सौर मंडल में अन्य ग्रह सूर्य से पड़ने वाले प्रकाश को परावर्तित करते हैं। प्रत्येक माह का अपना–अपना गुरुत्वाकर्षण बल होता है जिसके प्रभाव से सब ग्रह एक–दूसरे से आकर्षित/प्रतिकर्षित हुए हैं।

चन्द्र ग्रहण

चन्द्रमा जब आकाश में भ्रमण करते हुए पृथ्वी की छाया वाले मार्ग से गुजरता है तब चन्द्र ग्रहण लगता है देखें चित्र 11

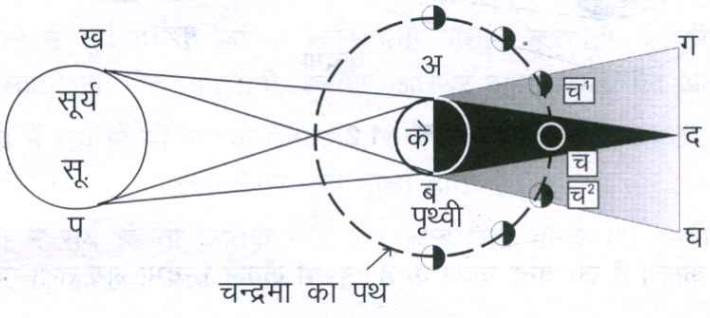

चित्र 11

ऐसा तभी होगा जब सूर्य, पृथ्वी तथा चन्द्रमा तीनों लगभग एक सीधी रेखा में आएंगे।

चन्द्रमा की कक्षा (वृत्त) क्रांति वृत्त पर लगभग 5^0 का कोण बनाती है। इसलिए जब–जब तीनों एक सीध में आते हैं तो चन्द्रमा क्रांति तल के पास हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता। अतः चन्द्रमा एक सीध में हो भी सकता है और नहीं भी। जब पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा पृथ्वी तथा सूर्य की सीध में होता है तो चन्द्र ग्रहण लगता है। चन्द्र ग्रहण तभी लगता है जब पूर्णिमा वाले दिन सूर्य, पृथ्वी तथा चन्द्रमा एक सीध में हों तथा चन्द्रमा ठीक या लगभग राहु या केतु बिन्दु पर भी हो।

जब चन्द्रमा का पूरा बिम्ब पृथ्वी की छाया में आता है तो पूर्ण चन्द्र ग्रहण होता है। जब बिम्ब का कुछ भाग छाया में आता है तो आंशिक चन्द्र ग्रहण होता है।

ऊपर चित्र 11 में सूर्य, पृथ्वी तथा चन्द्र एक सीध में पूर्णिमा के दिन दिखाएं गए है। शंकु, अ ब द को काला दिखाया गया है क्योंकि इसमें सूर्य की किरणें बिल्कुल नहीं आ रहीं।

शंकु अ द ग तथा ब, घ, द हल्के काले रंग में दिखाये गये हैं क्योंकि यहां सूर्य की किरणें आंशिक रूप में पड़ रही हैं। जब चन्द्रमा पूर्ण काली छाया वाले भाग में से गुजरता है तो पूर्ण चन्द्र ग्रहण लगता है।

चन्द्र ग्रहण की पूरी अवधि कभी भी 1 घण्टा 45 मिनट से अधिक नहीं होती। इस पूरी अवधि में चन्द्रमा गहरी छाया के क्षेत्र से गुजर रहा होता है।

सूर्य ग्रहण

जब सूर्य तथा पृथ्वी के मध्य चन्द्रमा सीधी रेखा में आता है तब सूर्य ग्रहण लगता है। यह अमावस्या को होता है उस समय चन्द्रमा राहु या केतु बिन्दु के पास होता है।

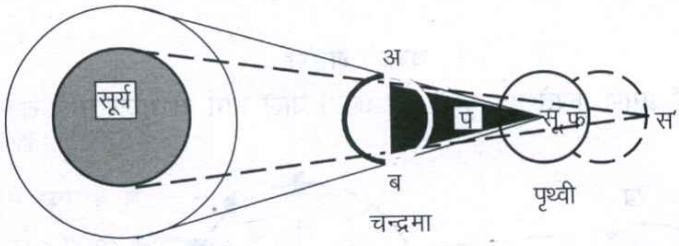

चित्र 12

सूर्य ग्रहण के भी वही कारण हैं जो चन्द्र ग्रहण के हैं। इसमें केवल चन्द्रमा सूर्य तथा पृथ्वी के मध्य स्थित होता है।

पूर्ण सूर्य ग्रहण में सूर्य का पूरा बिम्ब दिखाई नहीं पड़ता। आंशिक सूर्य ग्रहण में सूर्य का कुछ भाग दिखाई पड़ता है। एक तीसरी प्रकार का भी सूर्य ग्रहण होता है जिसको वलयाकार सूर्य ग्रहण (Angular Solar Eclipse) कहते हैं। यह सूर्य ग्रहण उस समय होता है जब चन्द्रमा पृथ्वी से अधिक दूरी पर होता है तथा सूर्य पृथ्वी से निकटतम दूरी (Perihelion) पर होता है। अन्य शर्तें वही रहती हैं। वलयाकार सूर्य ग्रहण इसलिये होता है क्योंकि चन्द्रमा का आमासीय कोणी व्यास सूर्य के कोणीय व्यास से कम है जिसके कारण चन्द्रमा सूर्य को पूर्णरूपेण ढक पाने में असमर्थ होता है। चन्द्रमा केवल सूर्य के केन्द्र को ही ढक पाता है जिससे सूर्य के किनारे दिखाई पड़ते हैं और सूर्य एक हीरे की अंगूठी की तरह दिखाई पड़ता है। देखें चित्र 12

❑

पाठ–15

12 भावों में ग्रहों का फल

सूर्य

1. लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी, उन्नत नासिका और विशाल ललाटवाला, पित्त–वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।
2. द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्र–कर्ण–दन्तरोगी, एवं स्त्री के लिए कुटुम्बीजनों से झगड़ने वाला होता है।
3. तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराक्रमी, प्रतापशाली लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।
4. चतुर्थ भाव में सूर्य हो तो जातक व्यग्रता, कठोर, पितृधननाशक, चिन्ताग्रस्त, बन्धुओं से वैर करने वाला, दार्शनिक होता है।
5. पंचम भाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्ततिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुःखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।
6. षष्ठ भाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, निरोग एवं न्यायप्रिय होता है।
7. सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त, अधार्मिक एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।
8. अष्टम भाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, क्रोधी, निर्धन, नैत्र रोग से पीड़ित, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।
9. नवम भाव में सूर्य हो तो जातक दानी, दार्शनिक, कृषक महत्वाकांक्षी, बुद्धिमान ज्योतिषी, नेता, सदाचारी, तपस्वी, योगी, वाहनसुख और भृत्यसुख प्राप्त किन्तु पिता के लिए अशुभ होता है।
10. दशम भाव में सूर्य हो तो जातक प्रतापी, व्यवसाय कुशल, नेता, साहसी, चतुर, राजमान्य, लब्ध–प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।
11. ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, चिष्टाचारी, सफल, सदाचारी, योगी होता है।
12. बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम, नेत्र तथा मस्तक का रोगी, अल्प सन्तान, निर्धन, असफल आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र–द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

चन्द्रमा

1. लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक अभिमानी, संकोची, आकर्षित व्यक्तिव स्थूल शरीर वाला, गान–वाद्यप्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान् होता है।
2. द्वितीय भाव में चन्द्रमा हो तो जातक, सोम्य, बुद्धिमान, भोगी, सुन्दर, मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।
3. तृतीय भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, प्रेमी, भाइयों और बहिनों का रक्षक, प्रतिष्ठित, यात्राओं में रूचि, विद्वान्, एवं कंजूस होता है।
4. चतुर्थ भाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, मातृसुख, शिष्ट, उच्च शिक्षा, बुद्धिमान होता है।
5. पंचम भाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, शिक्षा में विघ्न, स्त्री सुख, तीक्ष्ण।
6. षष्ठ भाव में चन्द्रमा हो तो जातक क्रोधी, आलसी, बुद्धमान, उदररोगी, आसक्त, खर्चीले स्वभाववाला, एवं भृत्यप्रिय होता है।
7. सप्तम भाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान्, नेता, विचारक, प्रवासी, सुन्दर पत्नी, कामुक सफल, व्यापारी, अभिमानी, कीर्तिमान, स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।
8. आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकारग्रस्त प्रमेहरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, वकील, अल्प सन्नति, गुरदे की बीमारी होता है।
9. नवम भाव में चन्द्रमा हो तो जातक, विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास–प्रिय, कार्यशील,धर्मात्मा, प्रतिष्णवान, संस्थान के प्रमुख सन्तति–सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।
10. दसव भाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, महत्वाकांक्षी सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल–दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।
11. एकादश भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दानी, सफल, लोकहितैषी, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।
12. द्वादश भाव में चन्द्रमा हो तो जातक चिन्ताशील, एकान्तप्रिय, क्रोधी, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

मंगल

1. लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक चपल, क्रूर, विचार रहित, उतावला एवं व्रणजन्य कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, स्फूर्तिवान, उद्यमशील दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है। पिता के लिए अशुभ है।

2. द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्र कर्ण रोगी, कटु तिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर, कुटुम्बों को क्लेश देनेवाला, निर्बुद्धि एवं अपण्ययी, होता है।

3. तृतीय भाव में मंगल हो तो जातक भ्रातृकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

4. चतुर्थ भाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुखहीन, कलहप्रिय, प्रवासी, अग्निभययुक्त, बन्धुविरोधी एवं लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

5. पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, अल्पसन्नति, महत्त्वाकांक्षी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उग्रबुद्धि एवं सन्तति–क्लेश युक्त होता है। ऐसे जातक की आयु क्षीण होती है या वह अपमृत्यु को प्राप्त होता है।

6. छठे भाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यवान्, प्रबल जठराग्निवाला, प्रचण्ड शक्तिवाला, शत्रुहन्ता, बन्धु के कारण बाधा, दादरोगी, क्रोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

7. सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रक्रोधी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, बुद्धिमान, निर्धन, घातक, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

8. आठवें भाव में मंगल हो तो जातक व्याधिग्रस्त, व्यसनी, विवाह के लिये अशुभ, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

9. नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, सफल, जिद्दी, यशस्वी, असन्तुष्ट, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है। पिता के लिये अशुभ।

10. दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, चतुर, सफल, धनवान्, सुखी, उत्तम वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

11. ग्यारहवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ प्राप्त करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, सम्पत्ति युक्त दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

12. बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, निर्धन, उग्र ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

बुध

1. लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, साहित्य तथा कविता में रूचि एवं बुद्धिमान, हास्यकार होता है।

2. द्वितीय भाव में बुध हो तो जातक सुखी, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संग्रही, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, गुणी धनी, मिष्टभाषी होता है।

3. तृतीय भाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, कवि, सम्पादक, चतुर, लेखक होता है।

4. चतुर्थ भाव में बुध हो तो जातक पण्डित, लेखक, विद्वान्, उदार, गतिप्रिय, वाहनसुखी एवं दानी होता है।

5. पंचम भाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न, शासक गण्य–मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

6. षष्ठ भाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, अभिमानी, दुर्बल झगड़ालू होता है।

7. सातवें भाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

8. अष्टम भाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुःखी, कवि, वक्ता, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

9. नवम भाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, प्रसिद्ध, धर्मभीरु, व्यवसायप्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

10. दशम भाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान्, लेखक, कवि जमींदार, मातृ–पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

11. ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, ज्योतिषी, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

12. बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी, धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

बृहस्पति

1. लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान्, दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान्य, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

2. द्वितीय भाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीरी, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी एवं भाग्यवान् होता है।

3. तृतीय भाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, प्रवासी, ऐश्वर्यवान, स्फर्तिवान, बहुत भाई बहनोंवाला, आस्तिक एवं योगी होता है।

4. चतुर्थ भाव में गुरु हो तो जातक शौकीनमिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षाप्राप्त, कम सन्तानवाला, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, वाहन युक्त होता है।

5. पंचम भाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

6. षष्ठ भाव में गुरु हो तो जातक सन्तानहीन, अभागा, विद्वान्, दुर्बल, उदार, प्रतापी, असफल, निराशा बहुत कमशत्रुवाला एवं मधुरभाषी होता है।

7. सप्तम भाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, नम्र, विद्वान्, तीर्थयात्रा करने वाला एवं प्रधान होता है।

8. अष्टम भाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, दुष्ट व्यवहार, दुःखी है।

9. नवम भाव में गुरु हो तो जातक, धर्मात्मा, पुत्रवान, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान्, संन्यास की ओर प्रवृत्तिवाला एवं प्रचुर सन्तानवाला होता है।

10. दशम भाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित, प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृ पितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

11. ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, सद्व्ययी, विद्वान् राजपूज्य, दानी होता है।

12. द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, निर्धन, अल्प सन्नति, अभागा, परपीड़नशील है।

शुक्र

1. लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध, सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

2. द्वितीय भाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

3. तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, ललित कला में निपुण, धनी, सुखी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

4. चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, सुन्दर, व्यवहारकुशल, विलासी, बुद्धिमान, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

5. पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, लाभयुक्त, व्यवसायी, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायप्रिय एवं आस्तिक होता है।

6. षष्ठ भाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुःखी एवं गुप्तरोगी होता है।

7. सप्तम भाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, साधुप्रेमी, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, चंचल एवं उदार होता है, ऐसे जातक का विवाह के बाद भाग्योदय होता है और उसे स्त्री से सुख प्राप्त होता है।

8. अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुःखी, गुप्तरोगी, परस्त्रीरत, विदेशवासी, प्रेम सम्बन्धों में बाधाएं, अल्पायु, गुप्तविद्याओं में रुचि रखनेवाला एवं रोगी होता है।
9. नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, ललित कलाओं में रूचि, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।
10. दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायप्रिय, विजयी, प्रसिद्ध एवं लोभी होता है।
11. ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, बहुमित्रवान् कामी एवं पुत्रवान् होता है।
12. बारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, मितव्ययी, आलसी, पतित, नैत्र रोगी, स्थूल एवं न्यायप्रिय होता है।

शनि

1. लग्न (प्रथम) में शनि उग्र–विचार हो तो धनाढ्य, सुखी एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।
2. द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, नैत्र रोग, बहु विवाह, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।
3. तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोग, विद्वान् योगी, भातृहीन, कृषक, बुद्धिमान, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता एवं विवेकी होता है।
4. चतुर्थ भाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, दुःखी विदेश सफल में शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।
5. पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानहीन, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं वातरोगी होता है।
6. षष्ठ भाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, जीवन में असफल, झगड़ालू ऋणी, बहरा, अल्प सन्तान एवं कवि होता है।
7. सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है। ऐसा जातक या तो अविवाहित रहता है या उसका विवाहित जीवन दुःखमय रहता है।
8. अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीरी, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।
9. नवम भाव में शनि हो तो जातक अधार्मिक, साहसी, अल्प सन्तान, नैत्र रोग वकील, भीरु, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

10. दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान्, ज्योतिषी, राजयोगी ,न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, तीर्थ यात्राओं में रूचि होती है।
11. ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान्, विद्वान, सम्पत्तिवान, शिक्षा मं बांधा क्रोधी, नीतिवान्, व्यवसायी, राजनैतिज्ञ होता है।
12. बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, निर्धन, नैत्र रोगी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, योगाभ्यासी, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

राहु

1. लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति वाला, राजद्वेषी, नीचकर्मरत, दुष्ट, साहसी, दयालु एवं बात–बात पर सन्देह करने वाला होता है।
2. द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संग्रहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।
3. तृतीय भाव में राहु हो तो जातक अल्प सन्तान, धनी, साहसी विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।
4. चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, बहुभाषी, मिथ्याचारी, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं क्रूर होता है।
5. पंचम भाव में राहु हो तो जातक मधुर भाषी, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल– धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।
6. षष्ठ भाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द से पीड़ित, अरिष्टनिवारक, गुप्तरोगी, बड़े–बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।
7. सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोग से पीड़ित, भ्रमणशील, मधुमेह, वैवाहिक जीवन में दुःखी स्त्रीनाशक होता है।
8. अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, कामी एवं होता है।
9. नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।
10. दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, विद्वान, वाचाल, सन्ततिक्लेशी, चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक कार्यकर्त्ता एवं पर्यटक, कविता और साहित्य में रूचि होती है।
11. ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक विदेशियों से धनलाभप्राप्त करनेवाला, कृषक, धनी, लाभहीन, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।
12. बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

केतु

1. लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल, मूर्ख, दुराचारी, भीरु मोक्ष प्राप्ति कूटनीतिक होता है।
2. द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्थ, कटुवचन बोलने वाला, मुंह का रोगी, राजभीरु होता है।
3. तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, झगड़ालू, विष का भय, कलात्मक, भाई–बहन–विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूत प्रेतभक्त होता है।
4. चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।
5. पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है। ऐसा जातक सन्तान का नाश करनेवाला होता है।
6. षष्ठ भाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, विद्वान्, गुप्तरोगी,, दीर्घायु एवं धनी होता है। ऐसे जातक के जीवन में दुर्घटनाएं होती हैं।
7. सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख एवं सुखहीन होता है। ऐसे जातक का वैवाहिक जीवन दुःखमय होता है और पति या पत्नी से सम्बन्ध विच्छेद होता है।
8. अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।
9. नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी सन्तान, पत्नी सुख।
10. दशम भाव में केतु हो तो जातक सुखी, धार्मिक तीर्थ यात्राओं में रूचि।
11. ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिमान, धनी, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।
12. बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचलबुद्धि, धूर्त, ठग तांत्रिक, मोक्ष प्राप्ति, धार्मिक ज्ञान, अविश्वासी एवं जनता को भूत–प्रेतों की जानकारी द्वारा ठगने वाला होता है।

12 राशियों में ग्रहों का फल

सूर्य

1. **मेष राशि** में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली, स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, साहसी एवं महत्त्वाकांक्षी होता है।
2. **वृष राशि** में रवि हो तो जातक चतुर, शान्त, व्यवहारकुशल, पाप, भीरु, स्वाभिमानी, बुद्धिमान स्त्रीद्वेषी होता है।
3. **मिथुन राशि** में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहासप्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र होता है।
4. **कर्क राशि** में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है धनवान, स्वतन्त्र, ज्योतिषी, दुःखी।
5. **सिंह राशि** में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, प्रसिद्ध, बलवान, स्वतन्त्र, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यवान् होता है।
6. **कन्या राशि** में रवि हो तो जातक लेखनकुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, विद्वान्, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचिरखनेवाला भाषाविद् बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।
7. **तुला राशि** में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलिन, डॉक्टर, व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमीवाला एवं दूसरों से दबने वाला होता है।
8. **वृश्चिक राशि** में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, धनी, लोकमान्य, क्रोधी उद्योगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।
9. **धनु राशि** में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहारकुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।
10. **मकर राशि** में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।
11. **कुम्भ राशि** में रवि हो तो जातक स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अभागा।
12. **मीन राशि** में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी, ज्ञानी, योगी, प्रेमी, धार्मिक होता है।

चन्द्रमा

1. **मेष राशि** में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, महत्त्वांकाक्षी, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।
2. **वृष राशि** में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, बुद्धिमान, प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, उग्र प्रवृति, सुखी, कुशाग्रबुद्धि, बुद्धिमान, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, विपरीत योनि के प्रति आकर्षण रखनेवाला खाने–पीने का

शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

3. **मिथुन राशि** में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, दीर्घायु, संगीत में रूचि वक्ता एवं अच्छे अन्तर्ज्ञान वाला होता है।
4. **कर्क राशि** में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सम्पत्तिवान्, वैज्ञानिक, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छे स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।
5. **सिंह राशि** में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्त्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।
6. **कन्या राशि** में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान्, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कलाप्रेमी होता है।
7. **तुला राशि** में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाग्रबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।
8. **वृश्चिक राशि** में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता–पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।
9. **धनु राशि** में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक, उच्च बौद्धिक स्तर वाला, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है। ऐसे जातक का विवाहित जीवन सुखी होता है।
10. **मकर राशि** में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।
11. **कुम्भ राशि** में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत्त, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि रखनेवाला।
12. **मीन राशि** में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है। धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता हैं।

मंगल

1. **मेष राशि** में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।
2. **वृष राशि** में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरणवाला, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।
3. **मिथुन राशि** में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, महत्त्वाकांक्षी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान, बलवान् शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाग्रबुद्धि एवं चतुर होता है।

4. **कर्क राशि** में मंगल हो तो जातक कुशाग्रबुद्धिवाला, धनवान्, अभिमानी, साहसी, कुशलचिकित्सक या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।
5. **सिंह राशि** में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता–पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।
6. **कन्या राशि** में मंगल हो तो जातक सुखी, प्रतिशोधी, वैवाहिक जीवन में दुःख, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहारकुशल होता है।
7. **तुला राशि** में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, परिवार के प्रति स्नेह, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव रखनेवाला होता है।
8. **वृश्चिक राशि** में मंगल हो तो जातक नीतिदक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति और ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुत हठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।
9. **धनु राशि** में मंगल हो तो जातक चतुर, राजनैतिक नेता, कम सन्तानों, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, क्रूर, एवं पराधीन होता है।
10. **मकर राशि** में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, धनी, सन्तान के प्रति स्नेह, नेता, ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्च पुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तानोंवाला, उदार।
11. **कुम्भ राशि** में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, दुखी, निर्धन, उग्र प्रवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।
12. **मीन राशि** में मंगल हो तो जातक गौरवर्ण, कामुक, अस्थिर जीवनवाला, रोगी, प्रवासी, हठी, अल्प सन्तान और वाचाल होता है।

बुध

1. **मेष राशि** में बुध हो तो जातक चतुर, नट, रतिप्रिय, कृशदेही, लोभी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।
2. **वृष राशि** में बुध हो तो जातक कुशाग्रबुद्धि, उच्चपद पर आसीन, सुगठित शरीरवाला दिखावा पसन्द करने वाला, शास्त्रज्ञ, व्यायामप्रिय, धनवान्, गम्भीर, मधुरभाषी, विलासी होता है।
3. **मिथुन राशि** में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, संगीतप्रेमी एवं विनोदपूर्ण है।
4. **कर्क राशि** में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्मग्राही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, संगीत में रूचि, असन्तुष्ठ होता है।
5. **सिंह राशि** में बुध हो तो जातक कुकर्मी, ठग, अल्प सन्तान, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह करनेवाला आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।
6. **कन्या राशि** में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यप्रेमी, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छे चरित्र वाला होता है।
7. **तुला राशि** में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार में दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छे अन्तर्ज्ञानवाला वफादार, विनीत, संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

8. **वृश्चिक राशि** में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुर्ख, अनैतिक चरित्रवाला, अतिकामुक, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

9. **धनु राशि** में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीरवाला, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्त्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, राजमान्य होता है।

10. **मकर राशि** में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतशार, चतुर, असन्तुष्ठ होता है।

11. **कुम्भ राशि** में बुध हो तो जातक, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध, अभिमानी, निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

12. **मीन राशि** में बुध हो तो जातक आश्रित आलसी, धार्मिक एवं छोटे दिल का होता है।

बृहस्पति

1. **मेष राशि** में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उग्रस्वभाव, धनी, विद्वान्, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, एवं उच्चपद पर आसीन होता है। ऐसे जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होता है।

2. **वृष राशि** में गुरु हो तो जातक पुष्ट शरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, दृढ़ विचारवाला होता है। ऐसे जातक के जीवन में स्थिरता होती है।

3. **मिथुन राशि** में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर व लम्बे कदवाला, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहारकुशल होता है।

4. **कर्क राशि** में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता, महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, गणिताज्ञ, बुद्धिमान एवं वफादार होता है।

5. **सिंह राशि** में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर, आकर्षक व्यक्तित्ववाला उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाग्रबुद्धि, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

6. **कन्या राशि** में गुरु हो तो जातक सुखी, सुन्दर पत्नी, भोगी, विलासी, चित्रकला में निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान् एवं सन्तोषी होता है।

7. **तुला राशि** में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य, धार्मिकप्रवृत्तिवाला निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापारकुशल एवं सुखी होता है।

8. **वृश्चिक राशि** में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बल स्वास्थ्यवाला दुःखी एवं कामुक होता है।

9. **धनु राशि** में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, कवि, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील, संगठनकर्त्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी , रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

10. **मकर राशि** में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, प्रसिद्ध, उदार, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य

आचरणकरनेवाला दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

11. **कुम्भ राशि** में गुरु हो तो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचरण करने वाला, प्रसिद्ध, कपटी एवं रोगी होता है।

12. **मीन राशि** में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहारकुशल, दयालु, साहित्यप्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्च पद पर आसीन होता है।

शुक्र

1. **मेष राशि** में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचरने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव का, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, दुराचारी, परस्त्रीरत होता है।

2. **वृष राशि** में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्र कामुक, संगीत–नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि रखनेवाला एवं आलसी होता है।

3. **मिथुन राशि** में शुक्र हो तो जातक चित्रकला में निपुण, सज्जन, दो विवाह, लोकहितैषी, धनी, उदार, सम्मानित, कुशाग्रबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

4. **कर्क राशि** में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान वाला होता है।

5. **सिंह राशि** में शुक्र हो तो जातक अल्पसुखी, उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

6. **कन्या राशि** में शुक्र हो तो जातक सुखी, भोगी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, विद्वान्, धनी, दुःखी अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

7. **तुला राशि** में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाग्रबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, अभिमानी, बौद्धिक कामों में तथा कविता और उपन्यास लिखने में रुचि रखनेवाला एवं संतुलित स्वभाव का होता है। ऐसे जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होता है।

8. **वृश्चिक राशि** में शुक्र हो तो जातक नास्तिक, कुकर्मी, दरिद्र, गुप्त रोगी, ऋणी, झगड़ालू स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

9. **धनु राशि** में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान्, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, एवं प्रभावशाली होता है। ऐसे जातक का घरेलू जीवन सुखी होता है और उसे उच्च पद की प्राप्ति होती है।

10. **मकर राशि** में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, दार्शनिक, महत्त्वाकांक्षी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि रखने वाला सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र का होता है।

11. **कुम्भ राशि** में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों की सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील होता है।

12. **मीन राशि** में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छे और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, शिष्ट और सभ्य, सम्मानित एवं आरामतलब होता है।

शनि

1. **मेष राशि** में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर, जाल–फरेब करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।
2. **वृष राशि** में शनि हो तो जातक असत्यभाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी–छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।
3. **मिथुन राशि** में शनि हो तो जातक दुराचारी, कपटी, अल्प सन्तान, कामी, पाखण्डी, निर्धन, अल्पसन्तान, दुःखी एवं संकीर्ण मन वाला होता है।
4. **कर्क राशि** में शनि हो तो जातक कम सन्तानवाला बाल्यावस्था में दुखी, मातृहीन, प्राज्ञ, उन्नतिशील, विद्वान्, निर्धन, हठी एवं स्वार्थी होता है।
5. **सिंह राशि** में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कम सन्तानहीन अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।
6. **कन्या राशि** में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, बलवान्, निर्धन, निश्चित कार्य कर्त्ता, ईर्ष्यायलु स्वभा वाला असभ्य, निर्बल स्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।
7. **तुला राशि** में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्ध नेता, स्वतन्त्र, धनी, सम्मानित, शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि रखने वाला सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।
8. **वृश्चिक राशि** में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरहृदय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य और बुरी आदतोंवाला, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है और उसे विष से खतरा होता है।
9. **धनु राशि** में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध, सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर, शान्तिप्रिय, एवं धनी होता है। ऐसे जातक का वैवाहिक जीवन दुःखी होता है।
10. **मकर राशि** में शनि हो तो जातक कुशाग्रबुद्धि, भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला पारिवारिक जीवन में सुख, होता है।
11. **कुम्भ राशि** में शनि हो तो जातक नीतिनिपुण, कुशाग्रबुद्धि, शत्रुओं पर विजय, दार्शनिक, योग्य, सुखी, व्यसनी होता है। ऐसे जातक के अनेक शत्रु होते हैं।
12. **मीन राशि** में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार, हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

1. **मेष राशि** में राहु हो तो जातक पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं दुश्चरित्र होता है।
2. **वृष राशि** में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।
3. **मिथुन राशि** में राहु हो तो जातक साहसी, दीर्घायु, साधु, संगीत में रूचि, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।
4. **कर्क राशि** में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजित होता है।
5. **सिंह राशि** में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीतिनिपुण दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।
6. **कन्या राशि** में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कवि, लेखक, गवैया एवं धनी होता है।
7. **तुला राशि** में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों का रोगी, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्यकुशल होता है।
8. **वृश्चिक राशि** में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, दुश्चरित्र एवं धोखेबाज होता है।
9. **धनु राशि** में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्रद्रोही होता है।
10. **मकर राशि** में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एव दाँतों का रोगी होता है।
11. **कुम्भ राशि** में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक, मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।
12. **मीन राशि** में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

1. **मेष राशि में** केतु हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।
2. **वृष राशि में** केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।
3. **मिथुन राशि में** केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी–छोटी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।
4. **कर्क राशि में** केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीड़ित एवं दुःखी होता है।
5. **सिंह राशि में** केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, एवं असन्तोषी होता है। ऐसे जातक को सर्पदश का भय होता है।
6. **कन्या राशि में** केतु हो तो जातक सदा रोगी, मूर्ख, मन्दाग्नि रोग एवं व्यर्थवादी होता है।
7. **तुला राशि में** केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

8. **वृश्चिक राशि में** केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी, निर्धन एवं व्यसनी होता है।

9. **धनु राशि में** केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

10. **मकर राशि में** केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी, जन्मस्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

11. **कुम्भ राशि में** केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

12. **मीन राशि में** केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

❑

पाठ–16

योग परिचय

योग का अर्थ है ग्रहों का आपस में सम्बन्ध। ग्रहों को दो प्रकार से जाना जाता है। जैसे सूर्य, चन्द्रमा, मंगल आदि। दूसरे कुण्डली में भाव का स्वामी होने के कारण जैसे लग्नेश, द्वितीयेश, पंचमेश आदि। इसलिए योग भी दो प्रकार के होते हैं।

1. ग्रहों के आपसी सम्बन्ध के कारण जैसे युति, एक–दूसरे से 2/12 होना, केन्द्र या त्रिकोण में होना। इससे ग्रहों के फल में अन्तर पड़ता है।
2. भावाधिपति होना, जैसे केन्द्रेश तथा त्रिकोणेश का सम्बन्ध आदि। हम इस अध्याय में ग्रहों की स्थिति के कारण होने वाले योगों का अध्ययन करेंगे।

सूर्य से बनने वाले योग

सूर्य से केन्द्र में चन्द्रमा स्थित हो तो जातक का धन, बुद्धि, चातुर्य आदि कम होते है। यदि चन्द्रमा पणफर में स्थित हो तो धन बुद्धि मध्यम होते हैं। यदि चन्द्रमा अपोक्लिम भाव में स्थित हो तो धन और बुद्धि और चातुर्य श्रेष्ठ होते हैं।

1. वेसि योग

चन्द्रमा को छोड़कर यदि सूर्य से दूसरे भाव में कोई अन्य ग्रह स्थित हो तो वेसि योग होता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति, खुश, साहसी, वक्ता, समृद्ध, उदार तथा शासक वर्ग का प्रिय होगा। स्नेही वचन बोलने वाला, समदर्शी और लम्बे शरीर वाला होगा।

2. वासि योग

चन्द्रमा को छोड़कर कोई अन्य ग्रह जब सूर्य से 12वें भाव में स्थित हो तो वासि योग बनता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति धनवान, प्रभावशाली होता है। (यह फल शुभ ग्रहों की स्थिति से बनते हैं)

3. उभयचारी योग

चन्द्रमा को छोड़कर कोई अन्य शुभ ग्रह सूर्य के दूसरे तथा 12वें भाव में स्थित हो तो उभयचारी योग बनता है। जातक राजा के समान अधिकार प्राप्त, सम्मानित, धनी और सुखी होता है। यह फल शुभ ग्रहों के कारण बनते हैं। यदि दोनों ओर अशुभ ग्रह स्थित हों तो अपमान के कारण मानसिक पीड़ा होती है और जातक धन तथा सौभाग्य से हीन होता है।

4. बुध आदित्य योग

जब सूर्य और बुध एक ही भाव में स्थित हो तो बुध आदित्य योग बनता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति बुद्धिमान, सम्मान पाने वाला, कार्य करने में निपुण, धनी तथा सुखी होता है। इस योग में यह आवश्यक है कि बुध अस्त नहीं होना चाहिये।

चन्द्रमा से बनने वाले योग

1. सुनफा योग

सूर्य को छोड़कर यदि कोई अन्य ग्रह चन्द्रमा से दूसरे भाव में स्थित हो तो सुनफा योग बनता है।

जातक को राजा के समान सम्मान प्राप्त होता है। अपनी बौद्धिक क्षमता के कारण सम्मानित धनी तथा प्रतिष्ठित होगा। वह स्थार्जित धन का स्वामी होता है।

2. अनफा योग

सूर्य को छोड़कर यदि कोई अन्य ग्रह चन्द्रमा से द्वादश भाव में स्थित हो तो यह योग बनता है।

जातक राजा के समान सम्मान प्राप्त करेगा, रोग मुक्त, सदाचारी, सुखी होगा।

3. दुरधरा योग

सूर्य को छोड़कर यदि कोई अन्य ग्रह चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश भावों में स्थित हो तो यह योग बनता है।

इस योग वाला जातक सब सुखों से सम्पन्न, सुखों को भोगने वाला और आज्ञाकारी होता है। वह धनी होता है और उसे सेवक, वाहन आदि का सुख प्राप्त होता है।

4. केमद्रुम योग

कोई अन्य ग्रह चन्द्रमा से प्रथम, द्वितीय या बारहवें भाव में या लग्न से केन्द्र में कोई ग्रह न होतो केमद्रुम योग होता है। यह अशुभ योग होता है।

इसमें जातक दरिद्र, बुद्धिहीन, विपत्तियों व दुःखों से पीड़ित होता है। यदि यह योग जन्म कुण्डली में हो तो अन्य शुभ योग नष्ट हो जाते हैं।

केमद्रुम भंग योग

1. यदि कोई ग्रह लग्न से केन्द्र में हो,
2. यदि कोई ग्रह चन्द्रमा से केन्द्र में हो या चन्द्रमा युक्त हो,
3. यदि चन्द्रमा लग्न से केन्द्र में स्थित हो,
4. चन्द्रमा को सभी ग्रह देखें तो केमुद्रुम योग नष्ट हो जाता है,

5. गजकेसरी योग

1. यदि बृहस्पति चन्द्रमा से केन्द्र में (1,4,7,10) स्थित हो
2. यदि बुध या शुक्र की चन्द्रमा के साथ युति या दृष्टि हो। (पाराशर)

तो गजकेसरी योग बनता है। इसमें उत्पन्न जातक महान् कार्य करने वाला सभा में कुशलपूर्वक बोलने वाला होता है।

इसमें चन्द्रमा में बल होना आवश्यक है। अन्य ग्रह भी बलवान होने चाहिये। कुछ विद्वान ज्योतिषी बृहस्पति को लग्न से भी केन्द्र में स्थित होने पर गजकेसरी योग मानते हैं।

6. चन्द्राधियोग

यदि चन्द्रमा से छठे, सातवें या आठवें भावों में शुभ ग्रह हों तो चन्द्राधियोग बनता है। जो जातक इस योग में उत्पन्न होता है, और सेना का अध्यक्ष, दीघार्य, रोगों से मुक्त, राजा या मन्त्री बनता है। यह ग्रहों के बल पर निर्भर करता है।

अमला योग

यदि लग्न या चन्दमा से दशम् भाव में बलवान् शुभ ग्रह हों तो अमला योग "कीर्तियोग बनता है।

इसमें उत्पन्न जातक राज्य, बन्धु व जनता का प्रिय, महा भोगी, दानी, परोपकारी, धर्मात्मा और गुणी होता है।

विभिन्न शुभाशुभ योग

यदि लग्न में शुभ ग्रह हो या लग्न से द्वितीय तथा द्वादश भाव में शुभ ग्रह हों तो शुभ योग होता है।

यदि पाप ग्रह हों तो अशुभ योग होता है।

अशुभ योग में जातक पाप कर्म, कामुक तथा ईर्ष्यालु होता है।

पर्वत योग

1. यदि सभी शुभ ग्रह केन्द्र में किसी भी प्रकार से स्थित हों तथा छठे व आठवें भावों में कोई भी ग्रह स्थित न हो यदि हो तो शुभ ग्रह हो।
2. लग्नेश तथा द्वादशेश परस्पर केन्द्र में स्थित हो तथा मित्र ग्रह की दृष्टि हों तो पर्वत योग होता है। ऐसा व्यक्ति वाककुशल, भागवत् वेत्ता विद्वान एवं यशस्वी होता है।

चामर योग

लग्नेश उच्चगत होकर केन्द्र में स्थित हो तथा गुरु से दृष्ट हो तो या दो शुभ ग्रह लग्न में, या सप्तम में या दशम भाव में हो तो चामर योग बनता है। राज्य पूज्य, विद्वान्, वाक्कुशल होता है।

मालिका योग

लग्न से लगातार सात भावों में सब सात ग्रह स्थित हों (राहु–केतु ग्रह नहीं हैं) तो मालिका योग होता है। इस योग में उत्पन्न जातक धनी अनेक वाहनों का स्वामी होता है।

लक्ष्मी योग

यदि भाग्येश केन्द्र में मूलत्रिकोण, या उच्च का हो या लग्नेश और नवमेश की युति हो तो लक्ष्मी योग होता है। इस योग में जातक सुन्दर, गुणी, धार्मिक, बहुपुत्र व धन वाला होता है।

लग्नाधियोग

यदि लग्न से छठे, सातवें और आठवें भाव में शुभ ग्रह हो और अशुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट न हो तो लग्नाधियोग बनता है।

इसमें उत्पन्न जातक वैज्ञानिक शोध करता है। सेना में उच्च पद पर होता है और उदार, धनी तथा सौभाग्यशाली होता है।

पंचमहापुरुष योग

यदि मंगल मेष या वृश्चिक राशि (स्वराशि) में या मकर (उच्चराशि) में केन्द्र में स्थित हो तथा लग्न बलवान हो तो रूचक योग बनता है।

इसमें उत्पन्न जातक साहसी, पराक्रमी, सेना नायक तथा अच्छे गुणों के लिए प्रसिद्ध होता है। जातक दीर्घजीवी, आकर्षक और सुगठित शरीर वाला होता है।

भद्र योग

यदि बुध स्वराशि (मिथुन या कन्या) या उच्चराशि (कन्या) में स्थित लग्न से केन्द्र में हो तथा लग्न बलवान् हो तो भद्र योग होता है।

इसमें उत्पन्न जातक की मुखाकृति सिंह के समान, घुटने से पाँव तक हाथी के समान, छाती चौड़ी और हाथ और पैर कोमल होते हैं। ऐसा जातक कामुक, विद्वान, तथा योग में निपुण होता है।

जब कन्या या मिथुन राशि केन्द्र में स्थित होगी तो दूसरी राशि भी केन्द्र में होगी, अर्थात् बुध दो राशियों का स्वामी होता हुआ केन्द्र का स्वामी भी होगा और उसे केन्द्राधिपति दोष लगेगा यदि दूसरी राशि सप्तमभाव में पड़ेगी तो उसे मारक भाव का स्वामी होने का भी दोष होगा। अशुभत्व बढ़ जाएगा। ऐसी स्थिति में बुध कहां स्थित है, किससे युक्त या दृष्ट है या क्या अवस्था है आदि के आधार पर फल देगा।

हंस योग

जब बृहस्पति स्वराशि (धनु या मीन) या उच्च का होकर लग्न से केन्द्र में स्थित हो तथा लग्न बलवान् हो तो हंस योग होता है।

इस योग में उत्पन्न जातक शासक, सरकारी सेवा में उच्च पदाधिकारी और उत्तम व्यक्तित्व वाला होता है। वह उत्तम भोजन का शौकीन, और धर्म ग्रन्थों का ज्ञाता तथा सभी सुखों से सम्पन्न होता है।

मालव्य योग

यदि शुक्र स्वराशि (वृष या तुला) या अपनी उच्च राशि (मीन) में लग्न से केन्द्र में स्थित हो तथा लग्न बलवान् हो तो मालव्य योग होता है।

इस योग में उत्पन्न जातक सुन्दर आंखों वाला, मेधावी, शक्तिशाली, बच्चों, पत्नी, सवारी, सेवको वाला होता है। धर्म ग्रन्थों का ज्ञाता होता है। परामर्श देने में सक्षम, उदार तथा दीर्घायु वाला होता है।

सस योग

यदि शनि स्वराशि (मकर या कुम्भ) या उच्चराशि तुला में लग्न से केन्द्र में स्थित हो तथा लग्न बलवान् हो तो सस योग होता है।

जातक परामर्श देने वाल, गांव का प्रधान, कठोर हृदय वाला, दूसरों की सम्पति का प्रयोग करने वाला, स्त्रियों की संगत्ति में रहने वाला, धनी सुखी तथा सम्मानित व्यक्ति होता है।

विपरीत राजयोग

जब छठें, आठवें व बारहवें भाव के स्वामी छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हों तो विपरीत राजयोग बनता है। इसके तीन प्रकार हैं।

(क) हर्ष जब षष्ठेश 8वें या 12वें भाव में स्थित हो

(ख) सरल जब अष्टमेश 6ठे या 12वें भाव में स्थित हो

(ग) विमल जब द्वादशेश 6ठे या 8ठे भाव में स्थित हो 6ठा, 8वां तथा 12 वां भाव त्रिभाव कहलाते हैं।

इनके स्वामी जहां स्थित होते हैं उस भाव को नष्ट कर देते हैं। षष्ठेश का एक उदाहरण देखें। षष्ठेश अशुभ भाव का स्वामी है, जहां स्थित होगा उस भाव के कारकत्व को नष्ट कर देगा। मान लें षष्ठेश द्वादश भाव में स्थित है। तो वह द्वादश भाव कारकत्व को नष्ट कर देगा। क्योंकि द्वादश भाव तो स्वयं अशुभ है। इस प्रकार षष्ठेश द्वादश भाव के अशुभत्व को नष्ट कर देगा जो जातक के लिए शुभ होगा। इसलिये इस योग को विपरीत राजयोग कहेंगे।

केन्द्राधिपति दोष

जब कोई शुभ ग्रह जैसे बृहस्पति, शुक्र, शुभ बुध, शुभ चन्द्रमा केन्द्र का स्वामी होकर केन्द्र में स्थित हो तो उसमें केन्द्राधिपति दोष आ जाता है।

जब शुभ ग्रह केन्द्र का स्वामी होता है तो शुभ ग्रह अपना शुभ फल देने में असमर्थ हो जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि वह अशुभ फल देता है, शुभफल नहीं देता–वह सम हो जाता है। सम ग्रह जिस भाव में स्थित होता है, या युति या दृष्टि बनाता है, या उसकी दूसरी राशि जिस भाव में पड़ती है उसके अनुसार फल देता है। अशुभ ग्रह केन्द्र के स्वामी होकर अशुभ फल नहीं देते। वे भी सम हो जाते हैं।

❑

ALL INDIA FEDERATION OF ASTROLOGERS' SOCIETIES
ज्योतिषम् वेदानां चक्षुः
AIFAS

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ

ASTROLOGY

- A Text Book of Astrology Rs. 200/-
- Encyclopedia of Astrological Remedies Rs. 300/-
- Medical Astrology for beginners Rs. 200/-
- Longitudes & Latitudes of the World Rs. 125/-
- Prediction through Dasha System Rs. 100/-
- Horoscope Matching Rs. 100/-
- Muhurat (Electional Astrology) Rs. 100/-
- Remedies of Astrological Science Rs. 100/-
- Principals of Ashtak Varg Siddhant Rs. 200/-
- Transit of Planets Rs. 100/-
- A Text Book on Shadabala Rs. 100/-
- Horary for Beginners Rs. 100/-
- Timing of Events Through Dasha & Transit Rs. 100/-
- Mundane Astrology Rs. 200/-
- Jaimini Systems Rs. 100/-
- Krishnamurthi Paddhati Rs. 100/-
- Analysis of Longevity Rs. 100/-

VASTU

- Remedies of Domestic Vastu Rs. 100/-
- Remedies of Vastu Rs. 100/-
- Vastu Shastrachrya-I Rs. 200/-
- Domestic Vastu Rs. 200/-

PALMISTRY

- Remedies of Palmistry Rs. 100/-

NUMEROLOGY

- An Introduction to Numerology Rs. 200/-

ज्योतिष

- सरल ज्योतिष Rs. 200/-
- वृहत् उपाय संहिता Rs. 300/-
- सरल दशाफल निर्णय Rs. 100/-
- सरल अष्टक वर्ग सिद्धान्त Rs. 200/-
- सरल अष्टकूट मिलान Rs. 100/-
- सरल मुहूर्त बोध Rs. 100/-
- सरल उपाय विचार Rs. 100/-
- सरल गोचर विचार Rs. 100/-
- षडबल Rs. 100/-
- प्रश्न शास्त्र Rs. 100/-
- वर्षफल Rs. 150/-
- घटना का काल निर्धारण Rs. 100/-
- मेदनीय ज्योतिष Rs. 200/-
- फ्यूचर पंचाग Rs. 100/-
- जैमिनि पद्धति Rs. 100/-
- आयुनिर्णय Rs. 100/-
- लाल किताब Rs. 200/-

वास्तु

- सरल गृह वास्तु उ. विचार Rs. 100/-
- सरल वास्तु उपाय विचार Rs. 100/-
- सरल गृह वास्तु Rs. 200/-
- व्यवसायिक वास्तु Rs. 200/-
- फेंग सुई Rs. 200/-

हस्तरेखा

- सरल हस्त रेखा शास्त्र Rs. 200/-
- सरल मुखाकृति विज्ञान Rs. 100/-
- सरल हस्तरेखा उ. विचार Rs. 100/-

अंक ज्योतिष

- सरल अंक ज्योतिष Rs. 200/-

For Dealer & Distributorship enquiries
Call : 011-40541000, 011-40541010
eMail : gyan.sharma@futurepointindia.com

You can also buy our books from...

Punjab
Abohar : Aarti Book Depot 9417359101
Amritsar : Azad Book Depot 9463170369
Amritsar : Sundar Book Depot 9814074241
Bhatinda : Agarwal Book Depot 9888516439
Jalandhar : General Book Depot 0181-2457959
Ludhiana : Mohan Pustakalay 9815785338
Patiala : J.K. Book Depot 9646021884, 9888951545

Delhi
J.L. & Sons : 9873372004
K.K. Goyal & Co. : 9810541437

Uttar Pradesh
Bareilly : Roadways Book Stall 9837291137
Lucknow : Subhash Pustak Bhandar 9839022871
Meerut : Chawla Book Depot 9837291137

Rajasthan
Bikaner : Asha Ram Khatri 9414339201
Jaipur : Nav Ratan Book Seller 0141-2317661
Sawai Madhopur : Garg News Agency 9414276601

Maharashtra
Aurangabad: Aurangabad News Paper Distributors 9326232440
Pune : Bhutada News Agency 9890121123

Jharkhand
Dhanbad: Bhatia Magazine Center 9431314208

To order send money order, bank draft or a cheque payble in Delhi in the name of Future Point Pvt. Ltd. on the following address. You can also deposit the amount in our Indian Bank A/C 408333006, S.B.I. Bank A/C 30930974494, ICICI Bank A/C 071605000733. For an order of less than Rs. 500 also include Rs. 50 for postal charges.

FUTUREPOINT Astro Solutions

Head Office: X-35, Okhla Industrial Area, Phase-II, Delhi-110020 Ph.: 91-11-40541000-1010, 1040 Fax : 40541001
Branch Office: D-68, Hauz Khas, New Delhi-110016 Ph.: 40541020-1022 Fax : 40541021
E-mail: mail@futurepointindia.com, Web: www.futurepointindia.com

सरल ज्योतिष

इस पुस्तक में ज्योतिष से सम्बन्धित खगोल ज्ञान, ज्योतिष गणित, ज्योतिष फ़लित, पंचांग के अध्ययन जैसे विषयों को लिखा गया है ताकि इनका अध्ययन कर पाठक या विद्यार्थीगण शीघ्र से शीघ्र ज्योतिष सीख सकें। प्रत्येक पाठक या छात्र ज्योतिष फलित करना चाहता है। इस रुचि को ध्यान में रखते हुए इसका विस्तार से वर्णन किया गया है।

इस पुस्तक के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी अपने हाथ से कुंडली बनाना सीख सकते हैं। जिसमें लग्न गणना से लेकर ग्रह स्पष्ट विंशोतरी दशा गणना जिसमें कि महादशा, अंतर्दशा एवं प्रत्यंतर्दशा की गणना सीख सकते हैं। इसके पश्चात फलित की दृष्टि से ग्रह, भाव, राशि एवं नक्षत्रों के गुण धर्म उनके स्वभाव एवं कारकत्व का विस्तृत ज्ञान दिया गया है। ग्रहों से संबंधित उनकी उच्च–नीच राशि, ग्रहों की दृष्टियां, ग्रहों के संबंध, ग्रहों के उदय एवं अस्त की जानकारी के साथ साथ ज्योतिष में मुख्य रूप से देखे जाने वाले योग तथा नक्षत्रों की संज्ञा एवं भावों की संज्ञा आदि का ज्ञान दिया गया है।

यह पुस्तक अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए विशेष रूप से तैयार की गयी है। इस के अतिरिक्त अन्य ज्योतिष सीखने के इच्छुक व्यक्ति भी इसको पढ़कर लाभान्वित हो सकेंगे। इस प्रकार यह पुस्तक ज्योतिष सीखने के लिए प्रथम सोपान है।

ISBN 978-81-920718-4-8

9 788192 071848 >

मूल्य : ₹ 200/-

प्रकाशक

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.)

X-35, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, दिल्ली-110020

फोन : 011-40541040 | ई–मेल : mail@aifas.com | वेब : www.aifas.com

फ्यूचर पॉइंट

ई–मेल : mail@futurepointindia.com

वेब : www.futurepointindia.com

फ्यूचर पॉइंट प्रा. लि.

मुख्य कार्यालय : X-35, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, दिल्ली-110020

शाखा कार्यालय : डी-68, हौज खास, नई दिल्ली-110016

फोन : 011-40541000, 1020 फैक्स : 011-40541001,1021